प्रेमकान्ता सन्तति।
ऐय्यारी और तिलस्मी घटनाओंसे परिपूर्ण.

श्रीहरिः।

प्रेमकान्ता सन्तति

या

(हीरे का तिलस्म)

दूसरा हिस्सा।

लेखक—

आशुकवि शम्भुप्रसाद उपाध्याय।

प्रेम बन में प्रेम हैं फूले फले प्रेमी बनो।
प्रेम-मनमें लो, अमल रस के तुम्ही नेमी बनो॥

—:***:—

प्रकाशक—

बाबू बनारसी प्रसाद खत्री

उपन्यास दर्पण आफिस, बनारस सिटी।

प्रथमवार १०००] १९२५ [मूल्य ॥=)

प्रकाशक—
बाबू बनारसी प्रसाद खत्री।
उपन्यास दर्पण, बनारस सिटी।
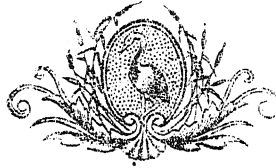
मुद्रक—
मैनेजर-महेशप्रसाद,
सत्यनाम प्रेस, बनारस सिटी।

॥ श्रीहरिः ॥

श्री इष्टदेवता चरण कमलेभ्यो नमः।

प्रेमकान्ता सन्तति

या

(हीरेका तिलस्म)

दूसरा भाग।

पहला बयान।

" दुष्ट करते दुष्टता हैं, भोगते फल भी वही।
निर्दयी के साथ ईश्वर अन्त होता निर्दयी " ॥
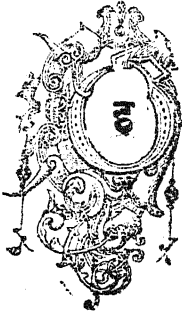
म अपने को कहाँ लिए जा रहे हैं; यहभी पता नहीं। यह कौनसी जगह है; यहभी मालूम नहीं। कहाँ से कहाँ आए; यहभी खबर नहीं। कौन हमारे साथ है; यहभी जानते नहीं। अँधेरी रात है, मूसलधार पानी बरस रहा है।

बिजली भी नहीं चमकती । बादल भी नहीं गरजता । जङ्गल, मैदान, पहाड़; ऊबड़; खाबड़; चढ़ाव, उतार सब समान मालूम पड़ रहा है । आँखें हैं; परन्तु वे भी कुछ नहीं देखतीं । मन्त्र मुग्ध की तरह लगातार चलेही जारहे हैं । बहुत देर, बहुतही देर होगई, चलते चलते थक गए परन्तु चलना किसी तरह से भी बन्द नहीं हुवा । कहाँ पहुंच कर रुकना होगा, रुक कर क्या करना होगा, किससे किस तरह का वास्ता पड़ेगा, उसकी आभा तक भी हृदय ने देख नहीं पाया है । जैसा इस समय बाहर अन्धःकार है वैसा ही भीतर, बिलकुल भीतर तक अन्धःकार ही अन्धःकार है । समय के साथ साथ हम भी इस समय बड़े ही भयानक, बे समझ बूझके रास्ते पर चले जारहे हैं । मगर सुनो तो, यह पीछे से छपछप करता हुवा कौन आ रहा है । ठीक है, अब हमारे होश में होश आया । ग़ौर से नज़र गड़ाया तो एक मर्द के साथ एक नौजवान औरत को भी देखा । यह समय, यह सन्नाटे की जगह, यह प्रलय की छटा, तिस पर भी यह दोनो छाती को कड़ी करके अपनी धून में तेजी के साथ कहीं चले आ रहे हैं । बेशक तारीफ़ की बात है, बहुत ही तारीफ़ की बात है । मगर देखो तो, साथही वे दोनों किसकी लाश को उठाए हुए आ रहे हैं । होगी, किसी की होगी, अभी से ग़ौर करके मग़ज़ को परेशान करने के लिए क्यों बैठें ? यह देखो, बड़ी मुश्किल से बिजुली चमक उठी । अब जाकर इसके उजाले में देखा,—जगह, ज़मीन, रास्ता, झोपड़ी, नदी, नाला, बाग़, महल, बङ्गला सब कुछ दिखलाई पड़ने लगा । कहाँ आ पहुंचे, इस जगह को पहचाना? यह तो वही पवित्रता में अपनी शानी न रखने वाली काशी है। हम यहाँ क्यों आए ? अपनी झूठी सच्ची बातों का प्रायश्चित्त

करने ? नहीं, वह देखते नहीं हो, दो औरत मर्द एक सुफेद लाश को उठाए हुए आ रहे हैं। अतएव, हम भी उसीको महाश्मशान तक पहुँचा कर अन्तेष्ठी क्रिया समाप्त करने के लिए आए हैं। मगर वह लाश मुर्दे की है या जीते की, इसमें ज़रा शक है। तो फिर इस शक को बहुत देर तक शक के कूए में क्यों डाल रक्खें ? सुनो, चलते चलते वह औरत क्या कहती है ? राम नाम सत्य है तो नहीं कहती है। नहीं, नहीं,—ऐसे भयंकर समय में निकलने वाले ऐसे भयंकर निशाचर, वैसे पवित्र नामको उच्चारण कर क्यों पवित्र होने जायंगे ? वह कुछ और ही कह रही है, मगर ग़ौर से सुन्ना होगा, सुनो तो ? अब साफ सुनने मे आया—धीरे धीरे कुछ कहने के बाद पियरी के मोड़ पर पहुँचते ही उसने कुछ ज़ोर से कहा—अब इसको गधे की तरह ढोते हुए कहां तक मरोगे ? मेरा तो दम फूलाजा रहा है। हाथों में दर्द होने लग गया है। न जाने किस जन्म की नौकरी बांकी थी जिससे कहार भी बनना पड़ा। पैदा होकर आज तक मैंने ऐसे कष्ट का अनुभव कभी भी नहीं किया था।

मर्द—(हँसकर) नहीं किया था जभी तो करना पड़ा। अब हिम्मत को कुछ दूनी करो, हम लोग ठिकाने के बहुत ही बग़ल में पहुँच गए हैं। वह देखो, उस पेड़ के पास ही तो वह मकान है ?

औरत—मैं मर रही हूँ, तुम हँसते हो। बस, अब मैं इसको न उठाऊँगी, तुम्ही अकेले उठाकर ले चलो। महारा को भी सनक सवार हो कैसी कैसी बातें सूझा करती है ?

मर्द—उन्हें अगर ऐसी ऐसी बातें सूझा न करे तो हम लोग खाने के लिए भी तरसते फिरें। आज क्या है, आज तो

कुछ भी कष्ट नहीं है। इसके पाप, दादे, लकड़दादे के भी लड़कदादे तक के कष्ट को हम भोग चुके हैं। मगर तुम्हारी तरह कभी भूलकर भी हिम्मत हारने का नाम नहीं लिया है। तुम घबड़ावो मत, मैं वहां पहुँचतेही तुम्हें बड़ा आराम दूंगा।

औरत—ख़ाक आराम दोगे, आराम देने वाले की सूरत देखी जा चुकी है। मगर यह तो बताओ, इसको तिलस्म में भेजकर महाराज गोविन्ददेव से महारानी क्यों बुराई लिया चाहती है?

मर्द—तुम भी रजनी! निरी गँवारकी गँवार ही रही। इतने दिनों तक बड़े बड़े की सोहबत उठाकर भी अक़्ल के दरवाजे तक पहुंचने न पाई। जानती नहीं हो? इसमें उन्हें दो तरह का फायदा है, एक तो स्वामीजी अपनी ही मुट्ठी में बँधे रहेंगे; दूसरा राजेश्वरी को महेन्द्रसिंह के ऊपर मुहब्बत बढाने का मौक़ा मिलेगा। अब समझी ऊपर से नीचे तक या फिर मुझे दोहरा कर समझाने का कष्ट उठाना पड़ेगा?

रजनी—बस बस बिपिन! तुम अपनी जबान को रोको। अगर फिर ऐसी वाहियात बातें निकालोगे तो मैं तुम्हारी पूरी गति कर डालूँगी।

बिपिन—(हँसकर) क्यों न करोगी; मेरी गति तो आज से नहीं कई साल से करती हुई आ रही हो, अच्छा अब दया-करके चुप रहो, हम लोग ठिकाने आ पहुँचे। इतने ही में ये दोनों एक बहुत बड़े मकान के दरवाजे पर पहुँचे। अब पानी का बरसना एक दम बन्द हो गया था। हवा तेज़ी के साथ चल रही थी। सड़क पर घुटने तक होकर पानी बह रहा-था। बादल में सुफेदी आकर फटते जा रहे थे। चाँद का प्रकाश कुछ कुछ दिखलाई पड़ने लग गया था। बिपिन ने

दरवाजे के पास पहुँचते ही धीरे से सीटी बजाकर उसको खटखटाया। साथही किसी ने दरवाज़ा खोलकर इन दोनों को अन्दर कर लिया। बाहर की तरह वहां भी पूरा अन्धकार था। उन दोनों के अन्दर आते ही एक खटके के साथ छत पर रोशनी जगमगा उठी। उसके उजाले में उन्हों ने देखा, एक लम्बी दाढ़ीवाला सत्तर बरस का बूढ्ढा एक लम्बी चौड़ी कोठरी में, दरवाजे के पास ही खड़ा है। विपिन ने उसकी ओर देख कर कहा—हम लोगों को आने में तो देर नहीं हुई ?

बूढ़ा—नहीं, ठीक समय पर आप लोग आ पहुँचे। जाइए; सब सामान दुरुस्त हो रहा है। यह सुनतेही वे दोनों उस लाश को उठाए हुए एक बन्द दरवाजे के पास पहुँचे। वहाँ पहुंचते ही बिपिन ने किसी तरह का खटका दबाकर दरवाजे को खोला। अन्दर एक छोटीसी कोठरीमें ऊपर जानेकी सीढ़ी बनी हुई थी। दोनों उसी में से होतेहुए ऊपर पहुँचे। कुछ दूर सहन पर चल कर एक बन्द नक्काशीदार दरवाज़ा दिखलाई पड़ा। बिपिनने उसको भी पास जाकर किसी तरकीबसे खोला। खुलतेही उसके भीतर से—आवो, आवो, तुम बड़े अच्छे मौकेपर आ पहुँचे ?—कहने की सुरीली आवाज़ आई। दोनों लाशको लिए दिए अन्दर पहुँचे। कमरा बहुत बड़ा था। दोशाखी, तीशाखी दीवारगीरों में रोशनी हो रही थी। कीमती कीमती सामानों से कमरा सजा हुवा था। बीचोबीच के मखमली गद्दे पर एक बीस बाईस बरस का नौजवान बैठा आनन्द के तरङ्ग में कुछ गुनगुना रहा था। उसी गद्दे पर मगर कुछ ही दूर हटकर एक निहायतही हसीन नाज़नी बैठी हुई थी। उन दोनों के सामने ही; गलीचे पर दो औरतें और भी बैठी हुई

थी। इन दोनोंने वहाँ पहुँचतेही उस लाशको एक कोंच पर रख दिया, इसके बाद बिपिनने उस सुन्दरीकी ओर देखकर कहा—अब इसको ठिकाने लगा दीजिए तो निश्चिन्त होकर बातें करें?

सुन्दरी—इसकी अभी कोई आवश्यकता नहीं है, होश में तो लावो? मैं इनसे मिलानेके बाद तब उसको ठिकाने लगा दूंगी।

रजनी—यह तो महारानी ने कुछ भी नहीं कहा था।

सुन्दरी—नहीं कहा था तो मैं कह रही हूँ। मैं उनकी दोस्त हूँ, मैं उनकी सहेली हूँ; मैं उनकी सखी हूँ; मैंने अपना जिगर काटकर उनके जी बहलाने को दे रक्खा है। तब भी मैं क्या उनके पीछे इतनी हुकूमत नहीं लगा सकती हूँ। उसको होश में लेआकर इनके सामने बैठा दो, मैं तुम दोनों को इसके बदले सौ सौ अशर्फ़ियाँ दिला दूंगी। दोनों के मुंह में ताला पड़ गया। बिपिन ने सुफेद मोमजामे को हटाकर लाशको बाहर निकाला; इसके बाद उसको होश में लाने की तरकीब करने लगा। तेज़ रोशनी में वह लाश अब कुमारी कनकलता की मालूम पड़ने लगी। उसका मुँह मुरझाया हुवाथा; बाल बिखरे हुए थे; बड़ी बड़ी चञ्चल आँखें बन्द थी, पुष्ट हो उभाड़पर आती हुई छाती कुछ कुछ दिखलाई पड़ रही थी। आध घण्टे की कोशिश के बाद उसे ज़रा ज़रासा होश आया, उसने अपनी बड़ी बड़ी नुकीली आँखें खोल चारो तरफ़ देखने के बाद धीरे से कहा—मैं कहां हूँ? उसको यह कहते सुन उस सुन्दरी ने पास आकर कहा—तुम कहीं नहीं हो कनक अपने घर में हो। हम लोग तुम्हे एक बड़े भारी दुश्मन के चंगुल से छुड़ाकर अभी अभी यहां ले आए हैं।

कनक—(धीरे से) मेरी दोनों सखियां कहां हैं?

सुन्दरी—उनकी तुम इस समय फ़िकर मत करो। देखो,

ये गद्दे पर बैठनेवाले नौजवान पटने के महाराज दलजीत-सिंह के मझले कुमार बसन्तसिंह हैं। आपही ने तुमको बड़ी बहादुरीके साथ लड़कर दुश्मन के हाथ से छुड़ाया है। तुम्हें इनकी कृतज्ञता दिलहीसे माननी चाहिये ? यह सुनतेही कनक-लता उठ बैठी; साथही अपनी घूंघटको नीचेतक खींच सुन्दरी की तरफ़ देखकर कहा—तुम कौन हो ?

सुन्दरी—मुझे पहिचान कर क्या करोगी ? मैं तुम्हारी दोस्त हूँ। (एक औरतसे) जा तो बहन गौरी इन्हे एक ग्लास ख़स की शरबत लाकर पिलादे। उसके पीने से बेहोशी की हरारत बिलकूलही दूर होजायगी।

कनक—नहीं नहीं, इस समय मैं कुछ भी न पीऊंगी। तुम इस बातके लिए जरा भी तकलीफ़ न उठावो ?

सुन्दरी—(बसन्तसिंह की तरफ़ देखकर) देखा, यह अभी कुछ भी न पीएगी ? आपही ने इसको बचाया है, अब आपही इसको पिलाइए भी। इतना कहकर वह उठ खड़ी हुई। इस के बाद इशारे में उन्हें कुछ समझाकर कनकलता को वहीं छोड़, बांकी के चारों को लेकर कमरे के बाहर चली गई। उन सभों के बाहर जातेही बसन्तसिंह ने कुछ क़रीब आ, उसकी घूंघट बेहयाई के साथ उठाकर कहा—क्या तुम मुझसे नाराज़ हो कनक ?

कनक—(घूंघटको बराबर करके) आपको मैं पहिचानती तक नहीं फिर आपसे क्यों नाराज़ होऊंगी। तिसपर सुनती-हूँ, आपने मुझे दुश्मन के हाथसे बचाया भी है।

बसन्त—बस यही बात है कनक ! ज़रा घूंघट को खोलकर इधर तो देखो; मैं तुम्हारे ऊपर इसी बात का दावा रखकर कहता हूँ–बहुत कुछ किया; बड़ी दौलत बरबाद की,

बड़ी बड़ी परेशानी उठाई; अन्तको तुम मेरे हाथ आई। अब दयाकरके मेरी ओर देखो; मुझे गले से लगाकर मेरे जलते हुए कलेजे को ठंडा करो।

कनक—(कुछ दूर हटकर) छीः आप ऐसे राजकुमार के मुंह से ऐसी बातें शोभा नहीं देती है। मैं आपको उस एहसान से अपने भाई की तरह देखने लग गई हूँ। आप मेरे धर्म के भाई हैं।

बसन्त— कनक ! मैंने तुम्हे तुम्हारा भाई बनने के लिए बचाया नहीं था। मैं तुम्हारे ऊपर आज से नहीं बरसोंसे आशक हूँ। तुम मुझे अपनी अद्वितीय सुन्दरता का भमर बनाओ; मैं तुम्हे अपनी जानसे बढ़कर चाहूँगा। दुनियें भर का सुख दूँगा, दिलाऊंगा। बोलो; तुम्हे मञ्जूर है या नहीं ?

कनक—(खड़ी होकर) इस ज़िन्दगी में तो यह आशा बिलकूलही न रखना। मगर दूसरे जन्म में भी मेरी ओर बुरी नज़र से देखने का इरादा न करना। अब मुझे मालूम होगया' तुम महाराज दलजीतसिंह के लड़के नहीं हो, बल्कि कोई छूँटे हुए दुष्ट दुराचारी गुंडे हो। यदि उनके लड़के होते तो मुंगेर के प्रतापी महाराजा नरेन्द्रसिंह के छोटे लड़के की प्रेमिनी को इस तरह निडर होकर ऐसी वाहियात बातें कहने का साहस नहीं करते।

बसन्त—(खड़े होकर] मैं महेन्द्रसिंह से तो क्या काल से भी डरने वाला नहीं हूँ। तुम्हारी यह धमकी मुझे अपने रास्ते से किसी तरह हटा नहीं सकती। तुम अगर खुशी से मञ्जूर न करोगी तो ज़बर्दस्ती से काम लिया जायगा।

कनक-(तनकर) यह तो जीतेजी कभी होनेही नहीं दूंगी। इतना सुनतेही बसन्तसिंहको क्रोध चढ़ आया; उसने झपट-

कर उसको पकड़ना चाहा; मगर वह छटक कर दूर जा इधर उधर देखने लगी। बसन्तसिंह नशेमें चूर था; वह फिर उसको पकड़ने के लिये उसकी तरफ़ बढ़ा। कुमारी अपने बचाव का कोई रास्ता न देख दरवाज़े की तरफ़ दौड़ी, वह तेज़ी के साथ दरवाज़े को छेंककर खड़ा होगया। यह देख उसके शरीर में आग सी लग गई, उसने इधर उधर निगाह दौड़ाई, पासही के कोने पर भांग घोटने का एक छोटासा सोंटा रक्खा हुआ देखा, झपटकर उसको उठाया; इसके बाद बड़ी फ़ुर्ती से बसन्तसिंह के पास आ, उछल कर उसके सँवारे-हुए काकुल को पकड़ उसी सोंटे से ठोकने लगी। उस अधम-ने पहले तो अपने को इस पतिव्रता चंडी से छुड़ाने की बहुत कुछ कोशिशकी मगर जब किसी तरहसे भी छुड़ा न सका तब अन्त को बिलबिला कर कहने लगा—बस बस हाथ जोड़ता हूँ कनक मुझे छोड़दो, मैंने तुम्हे अच्छी तरहसे पहचाना, अब कभी तुम्हे सताने का साहस न करूंगा"। उसके मुंह से यह बातें निकलतेही विपिन समेत वे पांचो आदमी धड़धड़ाते हुए कमरे के अन्दर आए और उसकी यह अवस्था देख कुमारी-को ज़बर्दश्ती पकड़ कर उससे दूर हटाया। इतनेही में जितनी वहां रोशनी थी सबके सब एकाएक गुल होगई। कमरे में गाढ़ अन्धःकार छा गया, साथही वहां कई एक आदमियों के दौड़ने, कूदने की आवाज़ आने लगी। सुन्दरी डरके मारे दीवार पर सटगई। उसके मुंहसे आवाज़ तक न निकली। दो तीन मिनट की धमाचौकड़ी के बाद कमरे में सन्नाटा पड़-गया। सुन्दरी ने अपने होशको ठिकाने कर गौरी को आवाज़ दिया। मगर कोई जवाब न मिला। इसी तरह पारी पारी से सभी को आवाज़ देती गई मगर किसी ने भी चूं तक नहीं

किया। इसको इस बातसे बड़ाही आश्चर्य और डर मालूम पड़ने लगा। अन्त को जी कड़ा करके बाहरसे रोशनी लाने के लिए दो क़दम आगे बढ़ी भी नहीं थी किसी लाश से ठोकर खाकर गिर पड़ी, साथही ज़ोरसे चिल्लाकर उठ खड़ी हुई। इतने ही में वही बूढ़ा दरवान हाथ में रोशनी लिए हुए कमरे के अन्दर आता दिखई। उसको देखतेही इसके जीमें जी आया। साथही कमरे की हालत पर उसने नज़र फाड़ २ कर देखा। बसन्तसिंह और विपिन के साथही साथ तीनो औरतें बेहोश पड़ी हुइ थीं; कुमारी कनकलता का कहीं पता नहीं था; यह देखतेही उसने उसकी ओर देख कर भर्राई हुई आवाज़ में कहा-क्या तुम नीचे दरवाजे ही पर थे?

दरवान—जी हां था तो सही मगर अफ़सोस के साथ आपको और भी अफ़सोस दिलाने के लिए मुझे इस समय यहां तक आनेका कष्ट उठाना पड़ा।

सुन्दरी—(घबड़ा कर) क्या कनकलता को उसी रास्तेसे कोई उठा लेगया?

दरवान–ले नहीं जायंगे तो क्या तुमने मुझे तनख़ाह दे रक्खी थी जिससे मैं तुम्हारे दरवाज़े पर दरवानी करनेके लिए बैठता? इतना कह उसने अपनी लम्बी दाढ़ी को एक झटके के साथ खींचकर अलग किया; साथही उस सुन्दरी ने चौंक, दो क़दम पीछे हटकर कहा–ओफ़! तुम हो; तुम कहांसे आए? मुझे स्वप्न में भी तुम्हे अपने बूढ़े दरवान की खोली में होने का ख्याल नहीं था। मेरी कीले से भी मजबूत चीज़ें आज ज़रूर तुमने उड़ाली होगी? अफसोस! मुझे धोखा हुवा; मैं अब कहीं की भी न रही? इतना कहते कहते वह लड़खड़ाकर बदहवासहो वहीं गिर पड़ी।

दूसरा बयान।

" बेरहम ! कुछ तो रहम को सीख अब।
बेरहम बनकर लगोगे पार कब ? "॥

समय तीसरे पहर का है, धूप में अभी तक वही तेज़ी है: परन्तु आरा से डिम्मापुर की तरफ़ जाने वाली सड़क पर हम एक हसीन, कमसीन औरत को; इस बात की कुछ परवाह न कर चलती हुई देख रहे हैं। सड़क के दोनों तरफ़ आम, इमली, साखू, लीची के पेड़ लगे हुए थे; मगर वह क्षण भर के लिए भी उनके नीचे रहकर विश्राम लेना नहीं चाहती थी। उसके सुन्दर चेहरे से पसीना टपक रहा था, आँखें लाल हो रहीं थीं। तमाम बदन धूल से भर गया था, परन्तु वह उन सब बातों की तरफ़ ज़रा भी ध्यान नहीं देती थी। इसी तरह चलते चलते घण्टे भर के करीब दिन रह गया, तब उसने इधर उधर देख कर कहा—अब ज़रा ठण्डा पानी मिलता तो हाथ मुँह धोकर तबीअत को शान्त करती ? मगर वहाँ पानी कहां था, आप-ही आप लाचार होकर वह फिर आगे की ओर बढ़ी। अभी पाव भर भी न बढ़ी होगी, इतने में पीछे से किसी ने जोर से पुकार कर आवाज़ दिया-कालिन्दी! कालिन्दी? ओ कालिन्दी! ठहर जावो, कहाँ इस तरह अपनी धून में बढी जारही हो " ? वह औरत इस आवाज़ को सुनते ही खड़ी हो पीछे की तरफ देखने लगी। इतने में एक सुन्दर लाम्बे क़दका आदमी दौड़ता हुवा इसके पास आकर कहने लगा—तुम तो अपनी धून में बहुत आगे बढ़ आई ?

कालिन्दी—मगर आपने भी तो सड़क के किनारे खड़े होकर मेरी राह देखने को कहा था । इसी से मैंने कहीं रुक कर देखा नहीं, सीधे आगेही की ओर बढ़ती चली आई।

वह—अच्छा, अब लौट चलो । ठिकाने पहुँच कर सुस्ता लोगी।

कालिन्दी-मुझे इस समय बड़े जोर की प्यास लगी हुई है।

वह—अच्छा, इस सड़क पर से उतर कर चलो; मैं तुम्हे उस सामने के शिवालय में पानी पिलाकर ले चलता हूँ। इतना कहकर वह सड़क के नीचे उतर पड़ा, कालिन्दी भी उसी के पीछेपीछे चली गई । पाव मील तक खेतही खेत चलने के बाद एक शिवालय मिला, उसके बगल ही में एक सायादार बड़ के नीचे एक कूवाँ बना हुवा था। उस आदमी ने अपने बटुए में से लोटा डोरी निकाल, पानी भर कर उसे दिया। उसने उसको लेकर हाथ मुँह धो पानी पिया। पसीने से मुँह का रंग पहले ही कुछ कुछ छूट रहा था, इस समय पानी से मुँह धोने पर तो वह साफ कालिन्दी दिखलाई पड़ने लगी। उस आदमी ने भी पानी खींच कर पिया, इसके बाद चला-ही चाहता था, इतने में शिवालय के उस तरफ़ से एक आदमी ने आकर इसको सलाम किया। उसे देखतेही इसने कहा—कहो गोबिन्द ! सब ठीक है न ? वह उसको वहां से हटाकर उनके ऊपर ज्यादती तो नहीं कर सकती ?

गोबिन्द—अभी तो उसका ऐसा बिचार नहीं है, परन्तु दुष्टों का बिस्वास ही क्या ? आप लोग शीघ्र चले जाइए, भेष बदले हुए जीवनसिंह भी वहीं मिलेंगे । इनकी चाची सौदामिनी भी अगल बगल ही में घूम रही हैं। मैं जयदेव को उस ठिकाने से साथ लेकर छोटे कुमार की तरफ जाता हूँ।

वह—अच्छा, जावो, मैं भी तुरन्त ही यहां से लौट आऊँगा। उस हारामजादा स्वामी बनकर बैठा हुवा दारोगा के फेर में पड़ कर बिचारी कादम्बिनी पागल हो रही है। इतना सुनते ही वह सलाम करके एक ओर चला गया। ये दोनों शिवालय के दहनी तरफ से एक छोटी सी पगडंडी को पकड़ चलने लगे। कुछ देर तक चुपचाप चलने के बाद कालिन्दी ने कहा—क्या भैय्या के साथ ही साथ चाची भी चली आई हैं?

वह—हां, उनको मैंने ही आने के लिए कहा था। अब देखें, कुमार के साथही साथ कुमारी सावित्री को छुड़ाने में कैसी सफलता मिलती है।

कालिन्दी—आप से कई बार भेंट भी हो चुकी। समय समय पर आपने मदद भी पहुँचाई। उस दिन नजरबाग़ में उस चुड़ैल बुढ़िया के हाथ से हम लोगों को बचाया भी। इस समय भी आपही के कहने से हम लोग चली भी आई, सब कुछ हुवा मगर अभी तक आपका परिचय हम लोग न पा सकीं। आप इस तरह हम लोगों का उपकार करते हुए फिरने वाले कौन हैं? किस मतलब से ऐसा कर रहे हैं?

वह—(हँसकर) मैं किसी मतलब से भी नहीं कर रहा हूँ। अपने से बड़े के ऊपर जब कभी मुसीबत आपड़ती है तो क्या उसको उससे छोटा मदद नहीं करता है? मैंने इसी गरज़ से अपने कर्तब्य को देख यह सब काम किया है। रही परिचय की बात; वह तुमलोग आपही आप धीरे धीरे पाजावोगी।

कालिन्दी-जब आप ऐसा कह रहे हैं तो मैं इसके लिए ज़ोर भी नहीं देती। मगर यह तो बताइए; उसदिन वह बुढ़िया बनकर आने वाली कौन थी?

वह—कौन थी मत कहो; कौन था कहो; वह रांची के महाराज गोविन्ददेव का नालायक, पाजी लड़का विजयकृष्ण का ऐयार था। उसे मैंने पकड़ कर खूब धमकाया; अन्तको जब उसने बहुत कुछ रोया गाया तो छोड़ दिया।

कालिन्दी—तो क्या कुमारी कनकलता के वही एक भाई हैं?

वह—नहीं; एक दूसरे भी हैं। मगर वे कहां; वह कहां? उनकी लायक़ी को देखकर दाँतो उँगली दबानी पड़ती है।

कालिन्दी—दारोग़ा वाली बात आपने कैसी कही? वह कौन है; उसके फ़न्दे में पड़ने वाली कादम्बिनी कौन है?

वह—तुम मधुपुरकी ऐयाश महारानी अम्बालिका को तो जानती ही हो। कादम्बिनी उसीकी छोटी बहन है। अच्युतानन्द नामका एक परले सिरेका पाजी आदमी एक बहुत बड़े तिलस्मका दारोग़ा है। उस नालायक से अम्बालिका का इधर बहुत कुछ हेलमेल बढ़ा जा रहा है। उसीने उसकी बहन को अपने कब्जे में करने के लिए क़ैद कर रक्खा है। उसी अम्बालिकाके मकान में इनदिनो छोटे कुमार भी नज़रबन्द हैं। वहां मैंने सरस्वती को भी निर्मला बनाकर भेज दिया है। क्या करें, इधर यह समाचार न मिलता तो उन दोनों को छुड़ाहीकर और कामों में हाथ डालता; मगर वह अभी न कर सका।

कालिन्दी—आपको मैं किस मुंह से धन्यवाद देकर तारीफ़ करूं!

वह—(कुछ उदास होकर) नहीं बेटी! अभी मैं किसी भी तारीफ़ के लायक नहीं हो चुका हूँ। जिस दिन तारीफ़ के लायक काम करके तुमलोगों को दिखाऊँगा; उसी दिन शिर आंखों से यह तारीफ़ उठाऊँगा। इतना कह; उसने अपने बहते हुए आंशूको पसीने के बहाने चदर से पोंछकर

कहा—अब हमलोग घण्टे भरके बाद अपने ठिकाने पहुँच जायंगे। इसके बाद उनदोनों में कोई बातचीत नहीं हुई। चालाक कालिन्दी उसके उस भाव को ताड़ मनही मन अनेक तर्कवितर्क करने लगी। भगवान भास्कर अस्ताचल को प्राप्त हुए। चारो तरफ़ से अंधियारी घिर आई। होते होते घड़ी भर रात भी बीत गई। ये दोनों बराबर नाककी सीधही चले जारहे हैं। आध घड़ी के क़रीब और चलने के बाद ये दोनो एक छोटे मोटे गांवको पारकर सोनभद्रके किनारेही पर पहुँचे। उस जगह चहारदीवारी के भीतर एक बहुत बड़ा मकान बना हुवा दिखलाई पड़ता था। वहां पहुँचतेही उस आदमी ने इधर उधर देख दीवार पर क़मन्द फेंका। इतने-ही में अन्धियारी को चीरता हुआ एक तरफ़ से एक आदमी ने निकल कालिन्दी के कन्धेपर हाथ रखकर कहा—तुम लोग आ पहुँचे? जल्दी करो; अब देरी करने का समय नहीं है?

कालिन्दी-क्या भैया हैं? तो चाची कहां हैं?

जीवन-वह भीतर चली गई हैं। मैं तुम्ही लोगों के आसरे से यहां छिपा हुवा बैठा था (उस आदमी से) आपके तीनो शागिर्द बाहर घूम घूमकर पहरा दे रहे हैं। इस जगह किसी बात का खटका नहीं है। हमलोग अब अपना काम बखूबी निकाल सकते हैं। इतना कहकर उन्होने भी दीवार पर क़मन्द फेंका। इसके बाद तीनों उसीके सहारे उसपार होगए। उधर एक निहायत ही खुशनुमा बगीचा था। तीनो अपने को पेड़ पत्तों से छिपाते हुए उस मकान की तरफ़ बढ़ने लगे। कुछ दूर आगे बढ़ आने पर उस आदमी ने धीरे से कहा—अब यहां हमलोगों को खूब होशियार होकर चलना चाहिए? इसके बाद पैर दबाते हुए तीनों आदमी चलने लगे। मकान के पास

पहुँचने पर उस आदमी ने चौकन्ना हो इधर उधर निगाह दौड़ा छतके ऊपर कमन्द फेंका। साथही वह बन्दर की तरह लटकता हुआ ऊपर पहुँच गया। इसके बाद ये दोनों भी उसीके बरोबर पहुँच गए। उस आदमी ने क़मन्द खींचकर इन दोनों को कुछ समझाया। इस समय कुछ कुछ चांद निकल रहा था। उसके उजाले में नीचे उतरने की सींढी दिखलाई पड़ी। ये तीनों धीरे धीरे उसी में से उतर नीचे की मञ्जिल में आए। वहां एक लम्बी चौड़ी सहन थी। उसको पारकर ये लोग एक कमरे के दरवाज़े पर पहुँचे। वह इस समय कुछ खुला हुआ था; कमरे की तेज़रोशनी उसीके रास्ते से बाहर तक आरही थी। इन तीनो ने उसी खुली जगह से देखा-कुमार रणधीरसिंह एक कुर्सीके ऊपर बेवसी की हालत में बँधे हुए पड़े हैं। उनके पासही कुमारी सावित्री बँधी हुई छटपटा रही है। एक भयानक काला आदमी तरवार हाथमें लिए उसी के पीछे खड़ा है। पांच सात क़दावर हब्शी जवान नंगी तरवार लिए कुछ दूर पर खड़े हैं। तीन हसीन कमसीन मुसलमानीन औरत कुमार के बग़ल ही में खड़ी हैं। उनमें से एक चञ्चल औरत गुस्से में भरकर कहरही है—देखो; कुमार! अगर तुम इसको भूलकर मेरी सोहवत उठानेकी कसम खाओ तो तुम्हे छोड़ सकती हूँ; नहीं तो इसको तुम्हारे सामनेही क़त्लकर अपने कलेजे को ठण्डा करती हूँ"। यह देखतेही वे तीनो अपने को सँभाल न सके; खञ्जर खींच "मारो मारो" कहते हुए अन्दर जायाही चाहते थे; इतने में पीछे से कई एक आदमियों ने आ "पकड़ो पकड़ो! जाने नदो!" कहकर इन लोगों को पकड़ बेवश कर डाला।
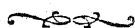
तीसरा बयान

" जा रहा अब तो मज़े का वह रमी ला प्रात है ।
आ रहा देने लिए तकलिफ़ अंधेरी रात है "

समय सन्ध्या बीतकर आठ बजने के क़रीब ही पहुँ-चाने का है। चारो तरफ़ चकचौंध डालनेवाली रोशनी हो रही है। मुंगेर के राजप्रासाद की एक बहुत बड़ी कोठरी में उदास चेहरे से महाराज नरेन्द्रसिंह, महारानी प्रेमकान्ता, महारानी किशोरी, दीवान गदाधरसिंह और भैरवसिंह बैठे हुए धीरे धीरे किसी विषय में विचार कर रहे हैं। उसीके साथ सटी हुई एक छोटी परन्तु सज़ावट से निराले ही ढंग की कोठरी में कुमारी कुसुमलता, अपनी सखी सत्यभामा को लिए बैठी उन सबों की बातों पर कान लगाए हुई है। सबों का चित्त चिन्ता की तरङ्गों में हिल्लोरें खा रहा है, कोई निश्चय रूप से एक बात को स्थिर नहीं कर सकता है। बरसों के बाद घबड़ाहट में डालने वाली यह उदासी इन लोगों के पास फटकने आई है। महारानी प्रेम-कान्ता की आँखों में आँशू भरे हुए हैं, वह रह रहकर लम्बी २ साँसे लेती हुई बातें करती है। महारानी किशोरी इतनी घबड़ाई हुई तो नहीं है मगर तब भी अफ़सोस से कलेजे में धड़कन पैदा कर देने वाली चोट से खाली नहीं है। वीरवर महाराज नरेन्द्रसिंह की हिम्मत भी मुश्किल से रुकरुक कर टूटती हुई सी दिखलाई पड़ रही है। गदाधरसिंह सोच के काँटे पर ईधर उधर झूल रहे हैं। भैरवसिंह की परेशानी क्षणक्षण में बदलती हुई दिखलाई दे रही है। बहुत देर तक बहस के साथ लड़ते रहने के बाद महाराज नरेन्द्रसिंह ने

गदाधरसिंह की तरफ़ देखकर कुछ उदासी के साथ कहा—दोनों बच्चों के इस तरह एकाएक गायब होकर किसी जले हुए पुराने दुश्मनों के हाथों में पड़ जाने से हमारी बढ़ी हुई उम्मीद पर बहुत कड़ी ठेस पहुंची। मैं बहुत सोच समझ कर अपने को सँभालना चाहता हूँ परन्तु किसी तरह से भी चित्त को चैन नहीं मिलती है। बरसों के बाद हमारे दुश्मनों ने हम लोगों के साथ अच्छा बदला चुकाने का मौका पाया। इस समय मेरी अकल उन दुश्मनों को नीचा दिखाकर अपने को जीत के झण्डे के नीचे खड़ा करने के कामों में ज़रा भी मदद नहीं कर सकती है।

गदा—सब कुछ ठीक है मगर इस समय, इस तरह हम लोग यदि अपने को अपनी हिम्मत से दूर रख चिन्ता की बड़ी बड़ी तरङ्गों में बहा देंगे तो सफलता के किनारे किसी तरह से भी पहुंचने न पायंगे। आफ़त मर्द ही के ऊपर पड़ा करती है, दुश्मन मर्द ही के होते हैं, चोटें मर्द ही खाया करता है, विजय मर्द ही के हाथों में रहता है। बहुत तरह से अपने दुश्मनों को हम लोग भूले हुए बैठे थे, अब उन्होंने शरकसी पर शिर उठाया तो उसी तरह से अपने नतीजे को भी भोगते हुए यमपुरि की आवादी को बढ़ाने जायँगे। हम लोग नाहक़ किसी से छेड़खानी नहीं करते हैं, बिना वजह किसी को सताते भी नहीं हैं। यह बातें यदि उन उन लोगों की नजरों ने न देखी तब भी परमात्मा तो देखेगा, यतो धर्मस्ततो जय—की बातें केवल कहावत ही के पेट में तो नहीं रह जायगी?

किशोरी—यह तुम्हारा कहना बहुत ही उचित है। हम लोग यदि इस समय घबड़ाकर अपने को अफ़सोस के फेर में डालेंगे तो किसी तरह से भी दुश्मनों को नीचा नहीं दिखा

सकेंगे। हमारे बच्चे हमारे कलेजे से अनायास जुदा किए गए हैं, परन्तु यदि अन्त में धर्म ही की जीत होती हुई आई है तो उनका कोई बाल भी बाँका नहीं कर पाएगा।

प्रेम—मगर बहन! अब पहले का सा समय इन दिनों दिखलाई नहीं पड़ता है। जिसने अधर्म को अपनाया है वही संसारमें सबको दबाते हुए चैन की बंसी बजाता फिरता है। हमारे बच्चे बहुत ही बच्चे हैं, उन्हे दुनियांदारी के मामले से बिलकूल ही ज्ञान नहीं है। ऐसी अवस्था में कहीं कोई धोके से चोट कर बैठेंगे तो हम लोगों का जहाजही डूब जायगा।

किशोरी—ऐसी शंकाओं को तुम अपने पास तक न आने दो। हमारे बच्चे ऐसे नादान नहीं है। उनकी होशियारी में कमी नहीं है। उनको दस बीस आदमियों के बीच से लड़कर निकलना लड़कों का एक खेल सा है। वे हम लोगों से अभी दूर हैं परन्तु बहुत ही समझ बूझकर काम कर रहे होंगे। क्या कहूँ, मैंने इस महारानी के बड़े भारी बोझे को अपने शर पर लाद रक्खा है नहीं तो कहीं भी क्यों न हो बात की बात में अपने बच्चों को सही सलामत अपने साथ लिए चली आती।

नरेन्द्र—(सूखी हँसी हँसकर) तो क्या तुम्हारा मन फिर महेन्द्र की पुरानी खोली को पहनने की तरफ़ झुक रहा है?

किशोरी—यदि आप हुक्म दें तो मुझे महारानी का परदा किसी तरह से भी रोक नहीं सकता। मैं फिर अपने उस जोश को एक बार दुश्ममों के ऊपर बड़े रोब दोब के साथ निकालती हूँ।

गदाधर—नहीं, अब ऐसा नहीं हो सकता है। हम लोग क्या अभी मर गए हैं।

प्रेम—उस ज़माने में भी तो तुम लोग कहीं दूर गए नहीं रहे?

भैरव—उस समय की बात ही एक दूसरे तरह की थी। अब इस काम को छोटीजनी किसी तरह से भी नहीं कर सकतीहैं। बड़े महाराज के कान तक अगर इस बात की चर्चा भर भी पहुँच पावेगी तो हम लोगों को मुंह दिखलाना कठिन हो जायगा।

नरेन्द्र—हाँ, वे तो किसी तरह से भी मञ्जूर नहीं करेंगे।

गदा—अब इस अनहोनी बातों को तो आप लोग एक दम छोड़ ही दें। जिसको कर सकते हैं, जिसके करने से सब तरह की भलाई के साथ साथ अपना मतलब भी निकल आ सकता है उसीको करना चाहिए। कल रात को मैं अपनी कोठरी में पड़ा पड़ा इन्ही सब बातों की उधेड़बुन में लगा हुवा था, इतने में एकाएक उसी लाम्बेक़द के आदमी ने अन्दर आकर मुझसे कहा, जिसने एक मर्तबः कुमारी को नज़रबाग़ में बचाया भी था।

नरेन्द्र-उसने क्या कहा? वह भी बड़ा ही बिचित्र आदमी मालूम पड़ता है।

गदा—हां, विचित्र तो हई है। जिस तरह छोटी जनी-महेन्द्र बनकर हम लोगोंको मदद पहुँचाया करतीथीं, करीब २ उसी तरह वह भी अपने भेदों को छिपाते हुए हम लोगों की मदद कर रहा है।

भैरव—कल रात को वह मुझसे भी मिला था,—मगर मुझे तो तेजसिंह; देवीसिंह वगैरह के यहां रह कर अपनी घात लगाते रहने की बातें कहने के अलावे और कुछ भी नहीं कहा। मैंने पता लगाने की ग़रज़ से उसके निकलते ही उसका पीछा भी किया था परन्तु घण्टों परेशान होने के सिवाय और कुछ भी हाथ न लगा।

गदा—वह इसके बारे में भी मुझसे कहता था। जब वह हमारा दुश्मन नहीं है, दोस्त है तो उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ क्यों हम उसके पीछे पड़ें।

किशोरी—ठीक है, जब समय आवेगा तब वह आप से आप अपना भेद खोलने के लिए मजबूर हो जायगा।

प्रेम—तुम अपनी तरह सभी को समझती होगी।

किशोरी—जब आदमी अपने भेदों को छिपाकर काम करना चाहते हैं तो इसी तरह करते हैं।

गदा—हां; उसने भी यही मुझसे कहा था। वह अपना भेद इस समय किसी तरह से भी खोलना नहीं चाहता है। उसने मुझसे मिलकर कहा,—आप लोग ज़रा सा भी न घबड़ाइएगा। यों तो दोनों दुश्मन के हाथों में जा पड़े हैं परन्तु बड़ी हिफ़ाज़त की नज़रों के सामने बैठे हुए हैं, उनका कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। मैं रात दिन इन्हीं सब बातों के पीछे लगा रहता हूँ। मेरे अच्छे अच्छे होशियार आदमी भी उन दोनों को अपनी निगाहों के सामने करके घूम रहे हैं। इसके सिवाय इन्द्रदेव, जयदेय, बिक्रमसिंह, जीवनसिंह, सरस्वती, कालिन्दी, माधवी और आपके लड़केकी मां भी हिफ़ाज़त के लिए ठिकाने ठिकाने पहुँच चुकी हैं। ऐसी हालत में दुश्मन उभड़ कर हम लोगों को नुक्सान के बदले फ़ायदा ही पहुँचा कर नीचा देखेंगे।

नरेन्द्र-यह सब सच है उसने सच कहा, मगर हम लोगों का जी कैसे मान सकता है।

गदा—तो मुझे जाने की आज्ञा दीजिए, मैं इस काम को अपने हाथ में लेता हूँ।

नरेन्द्र—मैं तुम्हें ऐसे नाजुक समय में कहीं बाहर नहीं भेज सकता।

गदा—भैरवसिंह के रहते हुए आपको ऐसी शंका अपने दिल में नहीं लेनी चाहिये ?

किशोरी—उस हालत में मैं भी घर बैठे बैठे कुछ कर सकती हूँ।

प्रेम—तुम सब कुछ कर सकती हो बहन ? मगर अब वह ज़माना नहीं रहा है।

किशोरी—अच्छा देख लेना, मैं भी तुम्हे दिखा दूँगी।

गदा—हां, एक बात आप लोगों ने सुना नहीं। दीनाजपुर में भी इसी तरह की खलबली मची हुई है।

नरे—वह क्या, तुम्हे किसने कहा ?

गदा—वही विचित्र व्यक्ति कहता था,—दो रोज़ पहले कुमारी सरोजिनी लापता हुई, इसके बाद बड़ेकुमार बीर-केशरीसिंह ग़ायब हुए, दूसरे दिन छोटे कुमार अजयसिंह का भी वही हाल हुवा। यह सुनकर पहले तो मुझे यह बातें विश्वास में नहीं आई, मगर उसके जाने के बाद श्यामसिंह के आने से सब बातें माननी ही पड़ी।

प्रेम—(लंबी सांस लेकर) अफसोस ! यह एक साथही हम लोगों के ऊपर कैसी आफ़त आ पड़ी ?

नरे—यह तो और भी बुरा हुवा, मगर श्यामसिंह क्यों नहीं मुझसे मिला ?

गदा—वह तो मिला चाहता था, परन्तु मैंने उसको ऐसा करने नहीं दिया ?

नरे—क्यों क्यों तुमने ऐसा क्यों किया, खैर कोई बात सोचकर ही तुमने ऐसा किया होगा। मगर वह क्या कहता था, अब कहां है ?

गदा—उसने बहुत सी बातें कहने के बाद कहा-कुमारी सरोजिनी को महाराज भूपालसिंह के लड़के भीमसिंह ने अपने ऐयारों द्वारा उड़ा मँगाया है। कुमार वीरकेशरीसिंह सोने के तिलस्म की राजकुमारी पद्मावति के फेर में पड़कर उसी के कब्जे में चले गए हैं। छोटे कुमार अजयसिंह का अभी तक कुछ पता नहीं है। हम लोग उन्हीं के फिराक में इधर उधर घूम रहे हैं, मैं पिताजी के कहने से मदद के लिए यहां तक चला आया, मगर यहां भी यही हाल देख रहा हूँ। यह सुनकर मैंने उसको समझा बुझा, सोने के तिलस्म में रहनेवाले अपने एक पुराने दोस्त को पत्र लिख कर भेज दिया।

नरे—(चौंक कर) ओह! वह तुम्हारा हंसमुख पुराना दोस्त अभी तक वहीं है।

गदा—जीहां, वहीं है। मगर अब देखें वह श्यामसिंह की कैसी मदद करता है।

नरे—हां, तुमने चुनारगढ़ के महाराज इन्द्रजीतसिंह को पत्र लिख भेजा।

गदा—जीहां, साथ ही गया के महाराज आनन्दसिंह को भी लिख भेजा है।

नरे—बहुत अच्छा किया, ये दोनों हम लोगों की जीजान से मदद करेंगे। हां यह तो बतावो, बड़के के साथ गई हुई फौज अभी तक आ पहुँची या नहीं?

गदा—मैंने उसको अभी वहां से उठा देना मुनासिब न समझ वहीं पड़ाव डाले रहने का हुक्म दे भेजा है। इसमें आप भी समझ सकते हैं, हम लोग तरह तरह के फायदे को उठा सकेंगे।

नरे-हां; मैं तुम्हारे मतलब को समझ गया । अभी यहां बुला भेजने के बदले वहीं रहना उन लोगों को अच्छा है। मगर मुंगेर के भीतर घूमने वाले दुश्मन के ऐयारों के बारे में तुमने क्या सोचा है?

भैरव—उसके लिए कल ही से गिरिजा लगा हुवा है। मैं भी इस बात से ग़ाफिल नहीं हूँ । दुश्मन चाहे लाख शर पीटें परन्तु यहां उन लोगों की एक भी दाल नहीं गल-नेकी है । इसके आगे भैरवसिंह और भी कुछ कहा चाहते थे, इतने में सामने की दीवार एकाएक बड़े ज़ोर से फट गई और उसमें से एक काली पोशाक पहने हुए एक कमसीन औरत ने निकल महाराज नरेन्द्रसिंह की तरफ देखकर अदब के साथ कहा—आप लोग दोनों कुमारों की तरफ से तो कुछ भी फिक्र न कीजिए । उन दोनों को इस समय इस भारतबर्ष में कोई कुछ भी नहीं कर सकता है। इसके सिवाय जहाँ तक मैं अनुमान करती हूँ वे दोनों आप लोगों से जल्द मिलेंगे भी, मगर अभी मैं सब से ज़रूरी काम की इत्तला करने के लिए इस तरह यहां तक चली आई हूँ । आप लोग निश्चिन्त होकर इस समय मत बैठिए । आपके दुश्मनों ने इसके नीचे बनी हुई घने-जंगल वाली सुरंग में, जिसका दरवाज़ा महाराज सुदर्शन-सिंह के ज़माने से आज तक बन्द है,-अपने सैकड़ों आदमी को छिपी तौर पर अन्दर करके बारूद बिछवा रहे हैं । यदि इसका प्रबन्ध अभी इसी समय न किया जायगा तो ताज़ुब नहीं सुबह तक वे सब बाहर निकल कर इस शहर की एक एक ईंट तक को उड़ा देंगे । अतएव उस जंगल की तरफ निकलने वाले दरवाजे पर इसी समय फौजी पहरा बैठा कर गङ्गाजी की ओर का मुहाना जहांतक जल्द होसके खुलवा

दीजिए ? मैं अब विशेष नहीं रुक सकती, जाती हूँ, मैंने अपना कर्तव्य भी पूरा किया । आप लोग मेरे बारे में किसी तरह का सन्देह न कीजिए, यदि यक़ीन न हो तो इस काम के करने के बाद दुश्मनों की लाश निकलते ही आप लोगों को पूरा यक़ीन हो जाएगा । इतना कह जवाब का आसरा देखे बिना वह घूम तेज़ी के साथ जिस रास्ते से आई थी उसी रास्ते से चली गई। उसके जाते ही वह फटी हुई दीवार भी ज्योंकीत्यों बराबर होगई । ये सब ताज़ुब में आ एक दूसरे का मुंह देखने लगे ।

चौथा बयान

"प्रेम में होती मचल, चलती अनेकों छेड़ है ।
धूप को देता हटाकर प्रेमकाही पेड़ है ॥"

रात्रिको अपने उज्वल हाथों से हटाता हुवा दिन ने संसार में पैर रक्खा । अन्धःकार की सेना लड़ने में एकदम नाउम्मीद हो इधर उधर भागते दिखलाई पड़ने लगे । किसी भी फ़ौज में हो, सबके सब तो नामर्द नहीं होते, उन भागते हुए में से कई एक साहसी जवान खोहों में, पेड़ों के नीचे, बन्द कमरों में, सब से ज्यादा कुटिल मनुष्यों के हृदय में अड़कर एक मर्तबः अपने दुश्मनों से लड़ पड़ने की तैयारी करने लगे । जिसकी जहां जबतक चलने की होती है वह वहीं तक होकर रह जाती है । उसके आगे वह लाखों शर पटकने पर भी कुछ नहीं कर सकता है। उन लोगों की एक भी न चली, धीरे धीरे भगवान भास्कर ने अपने अरुण दलके साथ प्रवेश करके सबके ऊपर अपना रोब छा-दिया । इसकी खुशी में चिड़ियाओं ने मीठी ध्वनि से चह-चहाना शुरू कर दिया । नवीन कलियाँ ताली बजा बजाकर आनन्द मनाने लगीं । शीतल मन्द समीर ने भीनी भीनी खुश्बू से चारो कोना भरना शुरू कर दिया । ऐसे समय शेर-घाटी के पासही की एक पक्की सड़क पर एक खूबसूरत नोजवान को उस घने जङ्गल की तरफ़ जाते हुए देख रहे हैं, जिसको पार करते ही एक छोटे से टीले की चढ़ाई शुरू हो जाती है । इसकी उमर सत्रह अठारह बरस से ज्यादे की नहीं

है, सादी पोशाक, ऐयाराना ठाट, देखतेही बनता है। यह इसी तरह चलते चलते जङ्गल के पास पहुंच गया। अब घाम में कुछ तेजी आ गई थी, इसलिए इसके सुन्दर चेहरे पर पसीना टपकने लग गया था। घनी छांह में पहुंचते ही इसने एक पेड़के नीचे खड़े होकर इधर उधर देखा। साथही रूमाल से पसीना पोंछकर आगे की तरफ़ पैर बढ़ाया।

इसी तरह पाव मील चलने के बाद सड़क के दहिनी तरफ़ पचास कदम की दूरी पर इसको एक ऊँचे जगत का कूवां दिखलाई पड़ा। जिसमें पानी खींचने की घिरनी भी लगी हुई थी। उसके सामने ही एक लम्बी चौड़ी दालान वाला एक मञ्जिला मकान भी बना हुवा था। यह उसको देखते ही तेजी के साथ वहाँ पहुँचा। वहाँ पहुँच कर इसने देखा,-एक बीस बाइस बरस की सुन्दर युवती कुएँ की जगत पर बैठी हुई धीरे धीरे कुछ गुनगुना रही है। वह निश्चिन्त हो अपनी धून में इतनी लौलीन हो रही है-जिससे उसको इसके क़रीब पहुँच जाने तक का भी होश नहीं है। जगत पर चढने के लिए चारो तरफ़ सीढ़ियां बनी हुई थी। यह धीरे धीरे उसको गौर से देखता हुवा उसके पास ही की सीढ़ी पर से चढ़ने लगा, इतने में एकाएक उसकी नजर इसके ऊपर पड़ी, साथही चौंक कर उसने कहा-ओह! बिक्रमसिंह! तुम आगए, आवो आवो,—मैं भी तुम्हारी ही राह देख रही थी, मगर अफसोस! तुम घड़ी भर पीछे आ गए। अगर मौके पर आ पहुंचते तो वह घटना किसी हालत से भी होने न पाती?

बिक्रम—(ताजुब में आकर) पहले यह तो बताओ तुम कौन हो? तमने मझे कैसे पहचाना?

युवती—(हँसकर) मैं कौन हूँ, मैंने कैसे पहचाना, अजी! मैं तुम्हारे बाप दादे तक को पहचानती हूँ, तुम कौन हो? अच्छा, आवो,-मेरे पासही बैठ जावो, डरो मत,—तुम और कुछ भी नहीं हो तो बहादुर नरेन्द्रसिंह के ऐयार हो। मैं उनकी इज्जत के खयाल से अपना परिचय भी देती हूँ, साथ ही उस घटना का हाल भी कहती हूँ।

बिक्रम—(सीढ़ी पर ही खड़े होकर) पास आने की क्या ज़रूरत है। तुम्हे कहना हो वहीं से कहो। क्या तुमने मुझे बहरा समझा है?

युवती—(कहकहा लगाकर) अजी, बहरा नहीं, दुनिये भरके सुननेवालों में से तुम्हे ही एक समझ रक्खा है। मगर आते क्यों नहीं हो?—अपने को बड़े भारी ऐयार लगाकर कुमार रणधीरसिंह की खोज में निकले हो। एक मामूली आदमी का सहारा लेकर एक बिलकुल ही नाजुकदिलकी औरत देवी को गिरफ्तार भी किए हो। अब उसी की तरह मुझ अबला के पास आने में क्यों डरते हो? क्या मैं तुम्हे अपने इश्क में फँसा लूँगी। नहीं, हर्गिज नहीं, तुम इतमिनान रक्खो, मैं अपने से कम उमरवाले के साथ कभी प्रेमका जिक्र ही नहीं छेड़ती।

बिक्रम—बस बस; तुम कुछ नहीं हो,—एक बदमाश ऐयारा हो। (पास आकर) कोई हर्ज नहीं, कहो क्या कहना चाहती हो?

युवती—और सब तो तुमने ठीक कहा। मगर ऐयारा के साथ बदमाश का शब्द तुमने बड़ाही वाहियात जोड़ा। इसके लिए तुम अपने दोनों कानों को उमेठ कर माफी मांगो तो मैं तुम्हें रणधीरसिंह का हाल सच्चा सच्चा बतला दूँ?

विक्रम-(खञ्जर निकाल कर) बस, ज़बान सँभाल कर बातें करो, नहीं तो मैं इसी खञ्जर से दो टुकड़ा करके रख दूंगा! अब मुझे मालूम हुवा-तुम अपना पाजीपन दिखलाने के लिए यहां बैठी हुई हो?

युवती—(हँसकर) सच है,-इसमें झूठ मैं भी तो नहीं कहती। मगर तुम इतने बड़े समझदार होकर बिगड़ते क्यों हो? क्या औरत के ऊपर वार करने के लिए तुमने खञ्जर को रख छोड़ा है? तुम्हारी बहादुरी देख चुकी? इसी बीरते पर तुम कुमार का पता लगाने के लिए निकले हो? छीः मैं ऐसा तुम्हे स्वप्न में भी नहीं समझती थी। प्रतापी महाराज नरेन्द्रसिंह की तुमने इज्जत ही डुबो दी।

विक्रम—(कुछ झेंपकर) मगर तुम्हारी बात भी तो कड़ी तौर से कम नहीं है।

युवती—नहीं है, ठीक है-नहीं है, क्या तुम्हारे मुंह में दही जमा रक्खा है, तुम एक औरत का जवाब खञ्जर के बदले बातों से नहीं दे सकते? आवो, तुम्हे अगर ऐसा ही हौसला हो तो मैं भी खञ्जर निकालती हूँ, चलो, दो दो चोटें चले।

विक्रम—(खञ्जर को रख कर) मैं एक मामूली औरत से लड़ना नहीं चाहता?

युवती-(आंखें तरेर कर) मामूली औरत! मुझे तुमने एक मामूली औरत समझ रक्खा है। मैं वह हूँ,-जिसका तुम तो क्या तुम्हारे खानदान भरके झुक २ कर सलाम करते हैं। मैं अगर चाहूँ तो तुम्हें इसी दम इसी कुएँ के भीतर.........

विक्रम-(बात काट कर) यही सब बातें तो गुस्से को भड़काने का जरीया बनती है। तुम सीधी तरह भलमनसियत के साथ क्यों नहीं बातें करती?

युवती—सीधी तरह;-पूरी सभ्यता को लिए हुए,-बड़े कायदे के साथ ,-अपनाही समझ कर बातें करने के लिए बैठी ही तो थी,-मगर तुम्ही ने, शक को सामने कर, गुस्से को हाथ में ले:-जङ्गली भेंड़ बनके मुझको कोसना शुरू कर दिया तो मैंने भी अपनी बातों का रुख भागते हुए फौज की तरह फेर लिया। अब बैठो, निश्चिन्त होकर मेरी बातों को सुनो। मैं जब तक तुम्हारे पास हूँ, तब तक डरतो क्या डरकी छाया तक भी यहां फटकने नहीं आ सकेगी ?

विक्रम—(हैरान होकर) भई ! तुम तो विचित्र औरत मालूम पड़ती हो।

युवती —(हंसकर) औरत तो मैं एक अन्धेको भी मालूम पड़ती हूँ; मगर बिचित्र तो तुमने बड़ेही बिचित्र तौर पर मेरे गले मढा, मैं इस खिताब के लायक नहीं हूँ; तुम अपने विचित्र पदको वापस लौटा ले जावो ? परन्तु तुम्हारी सूरत में क्यों हैरानी पाई जाती है। तुम हैरान मत हो, मैं तुम्हारी हैरानी बात की बात में दूर किए देती हूँ। मगर देखो,-मेरी बातों को तुम ज़रा भी झूठ न समझना; अगर झूठ समझने बैठोगे तो फिर मैं पत्थर की तरह मौन साध जाऊंगी। तुम्हारे लाख गिड़गिड़ाने पर भी कुछ न कहूँगी।

बिक्रम—परमात्मा जानता होगा, ऐसी औरत से तो कभी भेंट भी नहीं भयी थी।

युवती—जभी तो आज भेंट होने का ईश्वर ने संयोग दिलाया। सुनो, मैं दिल्लगी नहीं करती। दिल्लगी अपने बरोबर वाले से होती है। कुमार रणधीरसिंह तुम्हारे साथ अपनी फौज को लेकर भागलपुर के जङ्गल में शिकार के लिए निकले हुए थे। वहां उन्हे महाराज भूपालसिंह की लड़की सावित्री

की सखी चपलाने उसका पत्र पहुंचाकर उन्हे अकेले बीरपुर जानेके लिए कहा था।

बिक्रम—(बैठकर) यह सब मुझे मालूम है।

युवती—खाक मालूम है। तुम कुछ भी नहीं जानते। अगर जानते होते तो जरासी बातमें इस तरह बिगड़ न बैठते। जिसके पास दौलत नहीं होती है वह बिगड़ता है। जिसको किसी बात का पता नहीं लगता है वह भी जरासी बात में चटकता है। मैं देखती हूँ, तुम्हारी भी वही हालत है। फिर तुम कैसे कहते हो—मुझे सब कुछ मालूम है। सुनो,-बीच में बोल मत उठो;—वे उस पत्रको पाकर अकेले ही बीरपुर की तरफ रवाना हुए। मगर उन्हे रास्ते की गर्मी के अलावे बीरपुर तक पहुँचने का कष्ट उठाना नहीं पड़ा। भागल पुरके पासही; पासही कहकर बिलकूल पासही मत समझना;—बीरपुर के क़रीब;-भागलपुर से बीस कोस के फ़ासले पर पटना के महाराज चन्द्रगुप्त ने एक बहुत ही अच्छी इमारत बनवाई थी। वह समय के फेर से;—नहीं नहीं दुश्मनों के ज़ोर ज़बर्दस्ती से उनकी ख़ानदानों के हाथों से जाती हुई महाराज भूपालसिंह के हाथों में जा पड़ी। उन्होंने उसको अपने एक पुराने पण्डित को देडाला था। उसी में-उसी ईमरात में अकस्मात कुमार मरते जरते गर्मी के मारे पसीने पसीने होकर लथेड़े हुए आपहुँचे। उनकी उस समय बड़ी ही बुरी अवस्था हो रही थी।

बिक्रम—तुम जल्दी से अपनी बातों को ख़तम करोगी या इसी तरह का लंबा चौड़ा व्याख्यान देती चलोगी?

युवती—(हंसकर) तुम तो बड़े जल्दबाज़ मालूम देते हो। मैं तो किसी बात में जल्दी करना जानती ही नहीं। मैं जब संसार में आने लगी तो दस महीने तक तो एकही कोठरी में

बिना हिलेडुले चुपचाप धैर्य्य के साथ बैठी रही, तब से मुझमें ऐसी कुछ आदत पड़ गई है जिससे लाख भी कोशिश करती हूँ, मगर जल्दी का काम होता ही नहीं। तुम शान्त भाव से सुनते जावो, जल्दी क्यों मचाते हौ, तुम्हे कहीं हल जोतने जाना तो है नहीं ?

विक्रम—(बिगड़ कर) अब फिर उसी रास्ते से चलने लगी?

युवती—तो क्या मैं अपने रास्ते को तुम्हारे कहने से छोड़ दूँ? खामोश रहो, यहां तुम बिगड़ कर मेरा कुछ भी नहीं कर सकते। ख़ैर—जाने दो,—सुनो,—कुमार रणधीरसिंह से कुमारी सावित्री वहीं मिली। सावित्री को जानते हो, हां जानते हो, अभी मैंने तुमको उसका परिचय करा दिया था अस्तु वह कुमार के ऊपर पहले ही आशक थी, इसीलिए अपनी मा की सम्मति लेकर अपनी सखी सरला और चपला के साथ वीरपुर चली आई। उसका इरादा कुमार से वहीं मिलने का था मगर अपने इरादे के मुताबिक आसानी से कहीं किसीका काम हुवा है। सुदर्शनसिंह के लड़के शिवदत्तसिंहकी बद माशी ने वहां उसको बहुत दिनों तक ठहरने नहीं दिया। वह वहां से अपनी सखी सरला को लेकर उसी इमारत में आकर ठहरी, फिर तो वहां कुमार के पहुँचते ही उसके ऊपर चार बदमाशों ने आक्रमण किया, मगर कुमार ने सब को नीचा दिखाकर उसको बचाया। साथही वह सावित्री की बड़ी बड़ी चंचल नुकीली आँखों से घायल होकर कटे बकरे की तरह छटपटाने लगे।

विक्रम—अब मेहरबानी करके अलंकार को छोड़कर सीधी सीधी बातें कहो ?

युवती—तुम भी निरे नीरस मालूम देते हो। बिना रसके

कोई भी बात अच्छी मालूम नहीं पड़ती है। खैर—अगर तुम ऐसा कहते हो तो मैं भी उल्लू के सामने कोकिल की तानें सुनाने न बैठूँगी। कुमार आशक के भी चाचा हुए, रात को दोनों आशक माशूक में बड़ी बड़ी बातें होती रही, अन्त को वे दोनों गले गले मिलाही चाहते थे इतने में पालामौकी बेहया, ऐयाश राजकुमारी भुवनेश्वरी के ऐयारोंने उन दोनों को बेहोश कर वहां से उड़ा लिया। बिचारी सरला को कुछ देर के बाद इस बात का पता लगा इसलिए वह भी उन सबों के पीछे भागे भागे चली गई। रास्ते में उन सबों की मुठ भेड़ एक दूसरे दुश्मन से हुई, जिससे उन दोनों को छोड़ कर उन्हें लाचार हो भागना पड़ा?

विक्रम—(उत्सुक होकर) वह दूसरे दुश्मन कौन थे?

युवती—वे कटक के एक बड़े भारी तिलस्म की महारानी के आदमी थे।

बिक्रम—कटक का तिलस्म,–हीरे का तिलस्म तो नहीं है?

युवती—बस बस अब तुम समझ के बिलकुल ही किनारे पर चले आए। हां, तो उन्होंने उन दोनों को उसी महारानी की एक मुसलमानिन दोस्त के पास पहुँचा दिया। वह कुमार के ऊपर आशक हो गई,—आशक तो उसकी महारानी भी हुई ही थी, मगर वह तो पूरा लैला का दम भरने लग गई। इस बात को सरला के अलावे एक आदमी और भी जानता था, जिसको तुम भी मजे में पहचानते हो। उसने डिम्मापुर से हवा की तरह उड़कर सौदामिनी, जीवनसिंह और कालिन्दी को वहां ले आया। तरकीब तो उसने बड़े मजे की लड़ा रक्खी थी, मगर उसका भाग उस दर्जे तक अभी पहुंच नहीं पाया था, इसलिए वे सब उसकी कोठरी के बाहर पहुँचते ही पकड़े

गए। वह होशियार हो गई, उसने उसी दम कुमार को इसी टीले के उस पार बना हुवा चन्दनबाग में लेजाकर नज़रबन्द कर दिया। बेचारी सावित्री का अभी तक कहीं भी पता नहीं चल पाया है।

बिक्रम—यह सब बातें क्या तुम सच्च सच कह रही हो ?

युवती—तो क्या मैं तुमसे झूठ बोलने के लिए यहाँ तुम्हारे इन्तजार पर बैठी हुई थी।

विक्रम—तुम्हे मेरे इस रास्ते से आने का हाल कैसे मालूम हुवा ?

युवती—(हँसकर) तुम बार बार यही सब सवाल करते जाते हो। मैं आज से नहीं, तुम्हारे पीछे बरसों से छाया की तरह चलती हुई आ रही हूँ ! इसी से मुझे तुम्हारा राई रत्ती हाल मालूम रहता है। तुम जिस समय देवी को ठिकाने भेज कर उस आदमी के कहने से इधर चले आए, उसी समय मैं यहाँ आपहुंचने की बातें जान गई थी। तुम मेरी नज़रों में,-आह ! क्या कहूँ ? कुछ नहीं कह सकती ?

बिक्रम—अच्छा तो मेरी मा, कालिन्दी और जीवनसिंह का क्या हाल हुवा ?

युवती-वे लोग बड़ी दिल्लगी के साथ वहां से छूट गए ?

विक्रम—कैसी दिल्लगी के साथ छूट गए ?

युवती—मैंने ही हंसी हंसी में उन्हे वहां से छुडा दिया। अगर उस बात को मैं तुम्हारे सामने इस सपय कहना नहीं चाहती।

विक्रम—तुम्हारा मिजाज़ ही नहीं मिलता।

युवती—मिले कैसे,—तुम छोटे हो मैं बड़ी हूँ। अगर मेरे

साथ शादी करने का वादा करो तो मैं मिज़ाज़ मिलाकर सब बातें खोल दूँ।

बिक्रम—छोः यह कहते तुम्हे शरम नहीं मालूम देती है?

युवती—तो क्या मैं तुमसे बदसूरत हूँ? अफ़सोस है; मेरे पास बड़ा सा आइना नहीं है, नहीं तो एक साथ ही सूरत को मिलान करके दिखा देती।

बिक्रम—(हँसकर) वास्तव में तुम बड़ी मसखरी भी हो और साथ ही तुम्हारी हर एक बातों से रस भी टपक पड़ता है।

युवती—इसी से तो तुम्हारी जीभ से लार भी टपकने लग गई। मगर मुझ से किसी और बातों की उम्मीद हर्गिज़ न रखना। मैं इस जन्म में किसी से प्रेम न करूँगी; मर्द बड़े ही बेरहम, बे बिचारी, बे समझ;-बेवफ़ा, बेअक़ल, बे बुनियाद; बेआरू; बे…

विक्रम--बस बस इससे ज्यादा कह कर अपनी ज़ात को ऊँचा आसन मत दो। क्या औरतें ज़ालिम; दग़ाबाज़; धोकेबाज़; निर्दयी …………………………

युवती—(बात काट कर) नहीं होती हैं, होती हैं, मगर मर्दों से बहुत कम, परन्तु सुनो, यहां तो एक दूसरी ही बात है। खैर,—मर्दों से तो मैं कभी भी अपने दिल को न लगाऊँगी। एक जगह लगाकर मैं सख्त धोक़ा उठा चुकी हूँ। उसका पछतावा मेरे दिलसे अभी तक नहीं गया है। मैं रहरह कर उसी बात को सोचती हुई अपने आप मर रही हूँ। मेरा हृदय मर्दों की तरफ़ से एक दम खट्टा हो गया है।

बिक्रम—तो तुम इस तरह से क्यों रोना रोती हो। मैं क्या तुम्हे शादी करने के लिए खुशामद कर रहा हूँ?

युवती—अजी! खुशामद तो तुम एक मर्तबः नहीं लाखों

मतलबः करते मगर यहां तो मैं असली सूरतही बदल कर अपनी उमर से बहुत ज्यादा आगे बढ़ आई हूँ।

विक्रम—(चौंक कर) तो क्या यह तुम्हारी सूरत अलसी नहीं है ?

युवती—असली होती तो काहे को तुम्हे इशारा करती ?

विक्रम—अच्छा तो तुम सच बताओ कौन हो ?

युवती—सच बताऊँ, अच्छी बात है अब सच सच बताती हूँ। मगर सच बताने में तुम तो नाराज़ नहीं होगे। मेरी असली सूरत देख मुझे मारने के लिए किसी नेजे की खोज में तो नहीं दौड़ पड़ोगे ?

विक्रम—नहीं,—चाहे तुम कोई भी होकर निकल आवोगी मगर मैं ऐसा कभी भी न करूँगा। तुम्हारी मतलब भरी बातों से मुझे मेरा चित्त औरही तरह की गवाही देने लग गया है।

युवती—तुम्हारे चित्त का कौन ठिकाना;–तुम बात करते करते बातों ही बातों में अपने को एक अलौकिक पदार्थ समझ तन जाया करते हो। तुम हो तो सूरत शक्ल के बहुत ही अच्छे मगर बड़े ही निर्दयी हो; बड़े ही खोटे हो।

विक्रम—(हँसकर) भला ईमान धर्म से तो बताओ; मैंने किसके साथ ऐसे अन्यायका बर्ताव किया है ?

युवती—बहुत कुछ किया है; बहुतों के साथ किया है। इसकी एक सबूत के लिए; ज़रा सा ठहर जावो (कुएँ से पानी निकाल अपने मुंह को अच्छी तरह धोकर) मैं हूँ; मेरे साथ तुमने ज्यादती की है। मुझे अपनी सूरत का शिकार बनाकर पागल की तरह बर्बाद कर रक्खा है। पानी से मुंह धोते ही युवती की शकल में बहुत कुछ फ़र्क़ आ गया, वह अब पन्द्रह सोलह बरसकी अत्यन्तही कमनीय बदना सुन्दरी औरत दिख-

लाई पड़ने लग गई। उसको देखते ही बिक्रमसिंह के मुंह से एक ठण्डी आह निकल पड़ी। वे उसके सौन्दर्य से मुग्ध हो टकटकी लगाकर उसकी ओर देखने लगे। उनकी ऐसी हालत होते देख उस सुन्दरी ने हंसकर कहा—आज मैंने बहुत खोज ढूंढ़ के बाद बड़े भाग्य से तुम्हे इस समय इस एकान्त की जगह में पाया है। अब तो मुझे दया करके सताओगे नहीं?

विक्रम—मगर सुन्दरी! यह तो बताओ; तुम कौन हो?

सुन्दरी–मैं कौन हूँ–मैं तुम्हारे पैर की धूली हूँ। मेरा नाम सरला है।

बिक्रम–(चौंक कर) कुमारी सावित्री की प्यारी सखी सरला! अहा! तुम तो सरला ही हो। जैसी तुम्हारी तारीफ़ सुननेमें आती रही उससे बढ़कर तुम्हे देखा। तुम स्वर्गीय बाला हो। जैसी तुम नाम से अपने को सरला बताती हो वैसे ही तुम्हारा अलौकिक सौन्दर्य भी है। मगर क्षमा करना मैं एक तुच्छ मनुष्य तुमसी देवी के लायक किसी तरह होही नहीं सकता। तुमने नाहक़ अपनी अतुलनीय सूरत को दिखाकर मेरे दिलको खींच अपने वश में कर लिया?

सरला—परन्तु देखें;—यह तुम्हारी बातें मेरे साथ अन्त तक किस तरह के सलूक को साथ लेकर मेरा दम भरती है। इसके बाद उन दोनोंमें देरतक मुहब्बत की; दिल्लगी की बड़ी बड़ी बातें होती रही। अन्त में कुछ सलाह मिला; वे दोनों हाथ में हाथ देकर प्रसन्न मनसे उठ खड़े हुए। दिन पहर भरके ऊपर चढ़ चुका था। हवा सन्नाटा मारे हुई थी। दोनों प्रेमी प्रेमिनी चबूतरे से नीचे उतर तेजी के साथ टीले की तरफ चलने लगे। घण्टे भरतक इसी तरह चलने के बाद टीले की तलहटी में पहुँचे। सड़क बरोबर ऊपर तक चली गई थी।

सड़कके पासही एक ठण्डे जलका चश्मा बह रहा था। उसको देखकर इन दोनों ने नहा धोकर कुछ खाने की इच्छा की; इतनेमें टीलेके ऊपर से इसी तरफ आती हुई घोड़ेके टापोंकी आवाजें अईं । ये दोनों चौकन्ना होकर पासही के एक पेड़ की आड़ में खड़े हो गौर से ऊपर की तरफ देखने लगे। इनको इस तरहसे बैठे हुए अभी दो मिनट भी नहीं गुज़रा था; पीछे से किसी ने आकर बिक्रमसिंहके कन्धे पर हाथ रक्खा, वे बिजुली की तरह चिहुंकर पीछे की तरफ घूम देखने लगे।

पाँचवाँ बयान

" इन दिनों चलना संभल कर,—वह ज़माना है नहीं।
इन दिनों मिलते न अपने एक भी कोई कहीं ? ॥"

रात घण्टे भरके करीब जा चुकी है । एक मामूली ढङ्ग से सजी हुई कोठरी में कुमार रणधीरसिंह अकेले टहल रहे हैं । उनकी विकलता उनके चेहरे से साफ़ जाहर हो रही है । रह रह कर निकलनेवाली उसासें हृदय के फ़फोले को दूना कर रही है । आंखें लाल हैं, बदन थरथरा रहा है । सूखा हुवा होंठ फ़ड़फड़ा रहा है । कभी छाती पर, कभी सर पर हाथ जाता है । चञ्चलता ने सीमा के बाहर पहुंचा रक्खा है । देर तक इसी तरह टहलते रहने के बाद उन्होंने एक ठण्डी सांस खींचकर आप ही आप कहा—प्यारी सावित्री ! तुम कहां होगी, तुम्हे इस शैतान की खाला ने कहां पहुँचाया होगा । तुम इस समय किस हालत में होगी ? मेरा हृदय तुम्हारे लिए अधीर हो उठा है, मुझे पल-भर के लिए भी चैन नहीं है । मैं क्या करूँ, किस तरह से तुम्हारा उद्धार करने के लिए निकलूँ । यह मामूली कोठरी मुझे पिंजड़े के शेर की तरह बन्द रखने के लिए मजबूर कर रही है। मैं यहाँ से—एक क़दम भी आगे नहीं बढ़ सकता। उद्योग किया, परन्तु सब व्यर्थ हुए । अब मेरी समझ में कोई उपाय नहीं दिखलाई पड़ता। मेरे जितने रहे सबके सब मरे के बरोबर होगए। किसी ने मेरी जरा भी याद न ली। मगर उस दिन आने वाले वे तीनों कौन थे ? मैंने ज़रा सी झलक देख पाई थी,—ठीक नहीं कह सकता कौन थे ? कोई होंगे,—

मगर अनुमान से अपने ही आदमी मालूम पड़ते थे । रोशनी बुत गई,—तुम्हारे साथ से मैं अलग किया गया, नहीं तो उन्हें अवश्य पहचानता । अफ़सोस ! मेरी तो मुझे ज़रा भी फ़िक्र नहीं, तुम्हारी-कभी न छूटने वाली तुम्हारी फिक्र मुझे इस समय जलती हुई आग में जला रही है । क्या अब हम दोनों का मिलाप न होगा, इसी वियोग के विलाप में ही ज़िन्दगी बीतेगी ? भगवन् ! तुम कहां हो, ? मुझे इस अन्धः-कार से प्रकाश में पहुँचा दो ? उनके मुंह से यह अन्तिम वाक्य निकलते ही दरवाज़ा खुला, साथ ही नङ्गी तरवार लिए हुए दो ज़बर्दश्त हबशियों को साथ ले वही हसीन, कमसीन मुसलमानिन आती हुई दिखलाई पड़ी । उसे देखते ही उन्होंने घृणा से मुँह फेरा । दिलमें क्रोध की कँपकपी पैदा होने लगी । आंखें अंगारे की तरह लाल लाल हो आईं । उनकी यह हालत देख उस औरत ने कुछ क़रीब आकर मुलायम आवाज़ से कहा—कुमार ! आप अपने को इस तरह भूखे प्यासे रखकर नाहक क्यों हलाल करते हैं ? मैं आपकी खिदमतके लिए हर तरह से तैय्यार हूँ । खाइए, पीजिए,-मौज मज़ा कीजिए । यही तो एक ज़िन्दगी की राहत है । यही तो सवाब है,—यही तो बिहिश्त का शौक़ है ?

कुमार—(बिगड़ कर) बस—अपनी ज़बान को सँभाल कर बातें करो, मैं तुम्हारा नापाक चेहरा देखना भी नहीं चाहता । जावो, इसी दम चली जावो । एक नीच मुसलमानिन मुझसे इश्कबाज़ी दिखाने के लिए आई है ।

औरत—(आज़िज़ी से) नहीं कुमार ! आप जो कुछ भी कहो, मैं उसका कोई जवाब नहीं दूँगी । मगर मेरी मुहब्बत

को आप ठोकरों से मत उड़ावो। मुझसे बढ़कर आपको चाहने वाली औरत इस दुनियां में कोई भी न मिलेंगी ?

कुमारा—ठीक है, कोई भी न मिलेंगी। मगर मैं एक नीच क़ौम की औरत से किसी तरह भी मुहब्बत नहीं कर सकता। क्या तुम हिन्दू के अटल धर्मको नहीं जानती हो ? क्या तुम इस अपनी खूबसूरती से अच्छे हिन्दू को वश में ला सकती हो ? नहीं, किसी हालत से भी नहीं। तुम्हारी यह उम्मीद बिलकूल ही बे बुनियाद है।

औरत—मैंने सब कुछ माना, मगर कुमार ! क्या तुम्हारे धर्म में अपने साथ मुहब्बत करने वाले को इसी तरह दुतकार कर निकाल देने का नियम बंधा हुवा है ?

कुमार—नहीं बंधा है, परन्तु मुसलमानिन से हिन्दू चाहे लाख भी विवश हो; औरत मर्द में होने वाले सम्बन्ध को कायम नहीं कर सकता ?

औरत—यह तो मत कहो कुमार ! क्या आपने इस भारत के इतिहास का पन्ना उलट कर नहीं देखा है। मैं एक नहीं, इस बातकी लाखों सबूतें दे सकती हूँ ? आप मुझसे बिला उज्र मुहब्बत कर सकते हैं,—मुहब्बत कीजिए ? मेरे साथ मुहबब्त करेंगे तो एक बड़े भारी तिलस्म की महारानी को भी आप अपनी मुट्ठी में कर सकेंगे। मैं वादा करती हूँ, आप को बेइन्तहा दौलत भी दिला दूँगी।

कुमार—मुझे इन सब तुच्छ बातों की लालच देकर अपने चँगुल में फँसाने की उम्मीद न रक्खो। मैं चाहे दुनियें भर की दौलत मिल जाय मगर तुम्हे अपनी मुहब्बत का अधिकारी नहीं बना सकता। इसके अलावे यदि तुम अपनी खैर

चाहती हो तो इसीदम मुझे भी छोड़ दो, कुमारी सावित्री को भी मेरे हवाले कर दो।

औरत—(हँसकर) इसके लिए तो मुंह धो रक्खो ? प्रतापी नरेन्द्रसिंह के बहादुर लड़के को यह बातें तीर सी लग गई, उनसे न रहा गया, उन्हों ने झपट कर उसे पकड़ दरवाजे के बाहर फेंक दिया। यह देख उन दोनों हबशियों ने कुमार के ऊपर वार करना चाहा। उनके पास कोई हथियार नहीं था, तब भी वे उन दोनों से ख़ाली ही हाथ उलझना चाहते थे, इतने ही में किसी ने पीछे की तरफ़ से इनके हाथ में एक तरवार थमा दी, यह उस देनेवाले की तरफ़ घूमकर देखने भी न पाए थे, उन दोनों हबशी में से एक ने कडक कर इनके ऊपर वार करही तो दिया। इस समय उनके बदले कोई और दूसरा होता तो दो टुकड़ा ही नजर आता मगर तरवार के फन में होशियार होने के कारण उसके वार को सफाई के साथ खाली देकर उसके ऊपर अपना वार किया। इनके इस वार को वह हबशी लाख कोशिश करने पर भी न बचा सका। ककरी की तरह ऊपर से नीचे तक चीरती हुई उनकी तरवार साफ निकल गई। वह कालीन के ऊपर गिर हाथ पैर पटकने लगा। अपने साथी की यह हालत होती देख दूसरा हबशी गुस्से में भर कर कुछ आगे बढ़ा ही चाहता था, मगर उसको ऐसा करने का मौक़ा उन्हों ने ज़रा भी नहीं दिया। बिजुली की तरह चमक कर इनकी तरवार ने उसको भी करीब करीब उसके साथी की हालत तक पहुँचा, फर्श के ऊपर लेटा दिया। उन दोनों को इस तरह यमपुर का रास्ता दिखाने के बाद उन्हों ने अपनी मदद करने वाले की तरफ घूमकर देखा, मगर वहां उन्हें किसी की सूरत दिखलाई न

पड़ी । वे इस बात से हैरान हो इधर उधर देख ही रहे थे. इतने में वही शैतान की बच्ची मुसलमानिन गुस्से से लाल-पीली हो अपने साथ कई एक सिपाहियों को ले दरवाजे के चौखट पर आ खड़ी हुई और कुमार की तरफ़ देख कड़क-कर कहने लगी—मेरी मुहब्बत पर लात मारने वाले बदज़ात, बदबख्त! अब तू अपने को मुर्दा समझ? इतना कह कर उसने अपने को चौखट के बाहर कर सिपाहियों को भीतर जाने का हुक्म दिया। वे सब धड़धड़ाते हुए भीतर चले आए। कुमार के हाथ में इस समय तलवार थी, वे उन सिपाहियों से भी लड़ने के लिए तैयार हो गए। इतने ही में एकाएक उस कोठरी की रोशनी गुल होगई,-अन्धःकारने पूरी तरह उसको अपनी गोद में छिपा डाला। साथ ही कुमार को किसी कोमल हाथ ने पकड़ कर इशारे से अपनी तरफ़ आने को कहा । वे चुपचाप उसी तरफ चले गए।

एक हलकी आवाज़ को देता हुवा किसी ओर का दरवाज़ा खुला। साथ ही उसी कोमल हाथ ने इनके हाथ को पकड़ कर उसके अन्दर किया। अन्दर आतेही फिर दरवाज़ा बन्द होने की वैसी ही आवाज़ आई । इसके बाद अन्धःकार ही में उसी नाजुक हाथ ने उन्हें एक तरफ़ को ले जाना शुरू किया। यह भी चुपचाप उसी के हाथ को पकड़े हुए अन्धे की तरह चलने लगे । लगातार आध घण्टे तक इसी तरह चलने के बाद एक बन्द दरवाज़ा मिला । उसके खुलते ही बाहर एक बहुत बड़ा मैदान दिखलाई पड़ा । चारो तरफ़ चांदना फैलरहा था। अब उसके उजालेमें कुमारने उस नाजुक हाथ वाले को देखा, वह कमसीन तो मालूम पड़ता था, परन्तु मुँहमें नक़ाब डाले हुए था। साथही पोशाक भी मर्दकी पहिने

हुए था। इसलिए वे औरत, मर्द का कोई अन्दाज़ा ठीक अपने दिल में न कर सके। मगर तब भी उस कोमल हाथको बड़ी देर से पकड़े रहनेके कारण उसको उन्होंने कोई कमनीय कामनीही समझा। दरवाजे के बाहर होते ही, उसने उसको बन्द कर दिया। कुमार अपने बचाने वाले को पहचानने के लिए व्यग्र हो रहे थे, दरवाज़ा बन्द होते ही उन्हों ने उसकी ओर देख कर कहा—क्या मैं अपने उपकार करने वाले की सूरत देखकर उसको धन्यबाद दे सकता हूँ? उनकी ऐसी बातें सुन, उसने हँसकर कहा—नहीं, इसकी अभी कोई आवश्यकता नहीं देख पड़ती? ऐसी सुरीली आवाज़ तो उन्हों ने सावित्री के अलावे और किसी के गले से नहीं सुनी थी। वे ताजुब में आकर उसकी तरफ देखने लगे मगर उन्हे अब उसके औरत होने का भी निश्चय हो गया। उन्हे ऐसा करते देख उसने फिर हंसकर कहा—आप ताजुब की नजर गड़ाकर मेरी तरफ़ मत देखिए, मैं आपकी दुश्मन नहीं दोस्त हूँ। इतना कहकर उसने ज़ोर से सीटी बजाई। इसके साथ-ही दो कसे कसाए घोड़े की लगाम को थामे हुए, दो घुड़-सवार बाईं तरफ से निकल कर इन दोनों के पास आ मौजूद हुए; कुमार ने देखा; उनमें से एक की उमर पचास के ऊपर की थी; दूसरा पैंतिस छत्तिस बरस का मालूम पड़ता था। उन्हों ने आते ही कुमार को झुक २ कर सलाम किया। इसके बाद इस नक़ाबपोश औरत ने बुढ्ढे की तरफ़ देखकर कहा—अगर मैं मौकेपर न पहुँची होती तो आप को वह हरा-मज़ादी चोट कर बैठती। परमात्मा ने मेरी मेहनत को अच्छे समय में ठिकाने लगा दिया।

बुड्ढा—आपका साहस ही आपको सफलता के उस पार पहुँचाने के लिए तुला हुवा था । इस काम को करके आपने बड़ी महारानी से भी बढ़कर नाम पैदा किया । अच्छा यह तो बताइए; चञ्चला को आपने कहाँ छोड़ा ?

औरत-उसको मैंने इसी के भीतर छोड़ रक्खा है। वह कल शामतक हमलोगों से आ मिलेगी। अब आप दोनों कुमारी साबित्री की खोज में चले जाइए ? मैं आपको लेकर अपने ठिकाने चली जाती हूँ ।

बुढा—(दूसरे की तरफ देखकर) क्यों तारासिंह ! तुम्हारी क्या राय है ?

तारा—मुझे तो कोई हर्ज नहीं दिखलाई पड़ता ।

बुढा—अच्छा तो कुमारी ! आप कुमार को लेकर वहीं चले जाइए । हम दोनों इसी समय साबित्री की खोज़ में चलते हैं । मगर देखिए—उनके ऐयार लोग इस समय चारो तरफ़ फैले हुए हैं । कहीं धोके में न आ जाइएगा ।

कुमारी—आप इसके लिए निश्चिन्त रहिए; । अब तक भैरवसिंह चाचा के साथही साथ इन्दिरा चाची भी वहीं आ-पहुंची होगी । कल सवेरे तक इन्द्रदेव नाना भी आवेंगे । इसके अलावे देवीसिंहनाना को भी बुलवा भेजूंगी ।

बुढा—खैर जैसा उचित समझें वैसा कीजिए; मगर इस बुड्ढे भूतनाथ को तो बड़ी महारानी का एक दूसरा ही हुक्म था ।

कुमारी—वह सब कुछ मैं जानती हूँ । परन्तु मेरी भी तो आप कुछ हिम्मत को आजमा लीजिए । मैं भी तो आप लोगों के सामने कुछ कर दिखाऊँ ?

भूत—अगर महाराज नाराज हुए तो ?

कुमारी—आप इसकी भी फिक्र मत कीजिए; मैं उन्हें समझा लूंगी।

कुमार—(भूतनाथ से) क्या चुनारगढ़ के प्रसिद्ध भूतनाथ आपही हैं?

भूत—(सलाम करके) जी हाँ; यही दास उस नाम से बुलाया जाता है।

कुमार—मैंने आपकी तारीफ बहुत कुछ सुनी है (तारासिंहकी तरफ़ देखकर) क्या आप देवीसिंह के लड़के तारासिंह हैं?

तारा—(सलाम करके) जी हाँ; मैं ही तारासिंह हूँ। यह सुन कुमारने नकाबपोश औरत की तरफ देखा; मगर कुछ कहा नहीं। उन्होंने अनुमान से उसको पहचान लिया। इसके बाद उन्होंने भूतनाथकी तरफ देखकर कहा-क्या आप दोनों कुमारी सावित्री की खोज में जायंगे? यदि जाना चाहते हों तो मैं भी आपलोगों का साथ दिया चाहता हूँ।

कुमारी—(जल्दी से) नहीं नहीं; आप अभी ऐसा मत कीजिए? ये दोनों अभी न जाने कहां कहां घूम फिरकर उस ठिकाने जायंगे। आपको इन लोगों की तरह मारे मारे फिरना अच्छा नहीं है। हां; आपको उसकी सच्ची मुहब्बत है; मगर मुझे भी आप से कम मुहब्बत नहीं है। मैं भी उसकी खोज के लिए जान लड़ाने को तैयार हूँ। इसी से तो इनदोनों को अपना साथ छुड़ाकर उसकी खोज में भेज रही हूँ।

भूत—हाँ ठीक है; आप अभी इनके साथ यह जहां ले-जायँ वहाँ चले जाइए; हम लोग आपके ऐयार बिक्रमसिंह; जीवनसिंह; जयदेव; इन्द्रदेव; सौदामिनी और कालिन्दी से मिलकर अपनी कार्रवाई कर दिखाते हैं। इस समय आप

कई दिन के भूखे प्यासे बहुत ही कमजोर भी होरहे हैं। यह सुन उनको इस समय जिद करना उचित मालूम नहीं पड़ा। इसके बाद कुछ देर तक सलाह कर वे दोनों तेजी के साथ घोड़ा बढ़ाए हुए सामने की तरफ़ जाते दिखलाई देने लगे। उन दोनों के जातेही ये दोनों भी घोड़े पर सवार हुए। सवार होतेही कुमारी ने घोड़े को दूसरी तरफ मोडा। कुमारने भी वैसा ही किया। इसके बाद वे दोनों भी सरपट घोड़ा फेंके हुए बाईं तरफ जाने लगे। कुमारने अब देखा;— जिस दरवाजे से ये निकले हुएथे वह एक पहाड़ी के नीचे बना हुवा था। यह देखते ही उन्होंने कुमारी की तरफ देखकर पूछा-"यह सरज़मीन कहां की है? हम किसकी क़ैद में पडे हुए अपने भाग्य को कोस रहे थे।

कुमारी—इस पहाड़ी को शेरघाटी कहते हैं। यहाँ की सरजमीन कटककी महारानी के मातहत में है। आप उसी की एक मुसलमानिन दोस्त के कब्जे में पड़े हुए थे।

कुमार—(चौंक कर) वही हीरे के तिलस्म की महारानी?

कुमारी—जीहां,-उसने भी अब स्वर्णकुमारी और मायारानी की तरह अपना पैर फैलाना शुरू कर दिया है। परन्तु अधर्म में पैर रखने वाले का बेड़ा किसी तरह से भी पार नहीं लग सकता है।

कुमार—यह तो तुमने सच कहा, मगर कलियुग है, यहां सत्य मार्ग पर चलनेवाले की बुराई के सिवाय भलाई नहीं होती। जो पापी हैं, जो क्रूर हैं, जो सबसे अधम काम

करते हैं वही सुख भोगते हैं । परन्तु यह तो बताओ, मुझे अनुमान से तो मालूम हो गया है-तब भी ढिठाई के साथ पूछता हूँ, तुम कौन हो ? इसके जवाब में वह कुछ कहा ही चाहती थी इतने में पासही के एक पेड़ से एक घुड़सवार ने निकल, इन दोनों का रास्ता रोक, कुमारी की तरफ देख-कर कहा-बहन किरण ! अब तुम दोनों इस रास्ते से सस-राम की तरफ जाने का विचार छोड़ दो । उसे ख़बर लग गई, उसने तुम लोगों का पीछा करने के लिए कई एक ऐयारों के साथ अपने दो सौ रिसाले को उस घाटी की तरफ भेजा है । वे लोग अब तक वहा पहुँच चुके होंगे ।" वह आने-वाला एक सवार काली, कम उमर की औरत थी । उसकी बातें सुन कुमारी किरणशशी ने कहा—तो बहन ! अब क्या करें, किस रास्ते से हम लोग वहां तक पहुँच पावेंगे ? यह सुन उसने कहा—मेरे पीछे पीछे चले आवो, मैं तुम दोनों को एक सीधे रास्ते से वहां तक पहुँचा देती हूँ । इतना कह-कर वह जिस रास्ते से आई थी उसी ओर घोड़ा मोड़ कर चलने लगी । ये दोनों भी उसके पीछे पीछे चलने लगे । अभी ये लोग रास्ता छोड़ पचास कदम की दूरी पर भी न पहुँच पाए थे, पीछे से हठात् आठ सवारों ने इन लोगों को आकर चारो तरफ से घेर लिया । यह देख उस काली औरत ने अपनी कमर से लटकती हुई तलवार को खैंच कुमार से कहा—बस, अब इन काँटों को साफ करने के अलावे और कुछ उपाय नहीं है । कुमार उसका मतलब समझ गए। उनके पास कुमारी किरणशशी की दी हुई तलवार अभी तक मौजूद थी, उन्होंने उसको खींच कुमारी को अपने पीछे रहने के लिये कह—सवारों के मुकाबले के लिये अपने

घोड़े को कुछ आगे की तरफ बढ़ाया । आठों सवारों के हाथ में नङ्गी तलवार चमक रही थी । उन तीनोंको घेरे में डालते ही उनमें से एक सवार ने अपने मुकाबले पर उन्हें बढ़ते देख दो सवार को कुमारी की तरफ बढ़ने का इशारा कर बाँकी पाचों सवारों को साथ ले एक साथही कुमार के ऊपर हमला कर दिया।

छठवां बयान ।

"तुम न हो ताजुब ज़रा, ताजुब भरा ही है जगत ।
इस जगत में देखलो, ताजुब भरी बातें फ़कत ॥"

रात की अंधियारी ने अब अपना समय पूरा होते देख शिर पर पैर रखकर हवा होने का विचार किया। धीरे धीरे आसमान साफ़ होता हुवा आया, पूरब की तरफ़ लाल फ़र्श बिछने लगा। चिड़ियाओं की मधुर चहचहाट बड़ीही भली मालूम पड़ने लगी। रजनी-देवी ने एक दम किनारा कसा। पौ फट पड़ा। उजालेने अपना उजाला मुँह दिखलाया। हवा ठण्डी ठण्डी बहने लगी। ठीक ऐसे समय कुमार महेन्द्रसिंह को सर से पैर तक सुफेद चादर ताने हुए किसी एक सख्श के बग़ल में एक रमणीय जङ्गल के किनारे, एक पेड़ के नीचे, हरी हरी दूभ पर खर्राटा लेते हुए देख रहे हैं। इस समय कुमार सोने की पोशाक पहने हुए हैं। उनकी छाती तक सुफेद रेशम की चादर पड़ी हुई है। मुँह खुला है, दोनों हाथ फैले हुए हैं। सुफेद चादर वाले का मुँह खुला नहीं है, इससे औरत है या मर्द यह अभी अन्दाज़ा नहीं लगा सकते। घड़ी भर दिन चढ़ते चढ़ते कुमार की आंखें खुलीं, खुलतेही चारो तरफ़ निगाह दौड़ाकर देखा। देखतेही उनके ताजुब का ठिकाना नहीं रहा। आंखें फाड़-फाड़ कर अपने ताजुब को सीमा के भीतर ला, उसकी उल-झन को सुलझाने की कोशिश करने लगे। उनके विचारों ने उनका साथ छोड़ दिया। वे इस समय की बातों को निश्चय

रूप से स्वप्न समझने लगे। उन्होंने धीरे धीरे आंखें बन्द कर लिया। दिलही दिल में कुछ सोचने लगे। नींद टूट जाने पर लाख उद्योग करने से भी वह नज़दीक फटकने नहीं आती। कुमार की फिर आंखें खुली, वे रात की बातों को सोचने लगे। इतनेही में किसी ने लम्बी सांस लेकर इनके ऊपर हाथ पैर फैला दिया। वे चौंककर उठ बैठे। उनका ध्यान अभी तक उसके ऊपर नहीं गया था। इस समय उन्होने ग़ौर से उसे देखा। मगर वह शर से पाँव तक चादर के परदे में छिपा हुवा था, इस लिए कौन है, क्या है, पहिचान न सके। उनका ताज्जुब हद से बाहर होने लगा। वे सोचने लगे—यह कौन सी जगह है, मैं यहां कैसे आया, मेरी बग़ल में सोया हुवा यह आदमी कौन है? क्यों आकर इस तरह से सोया? मुझे यहाँ कौन उठा ले आया? कल रात को मैं मधुपुर की महारानी के कमरे में सोया हुवा था,-मुझे सरस्वती आजही छुड़ाकर बाहर करने को कहती थी। एकाएक यह बातें कैसे हो आई? क्या यह मधुपुर ही का जङ्गल है? इसको जगाकर पूछूँ? नहीं, किसी आदमी को मीठी नींद में सोते हुए जगाना एक दम सभ्यता के बाहर की बातें हैं। कुछ देर धैर्य्य के साथ प्रतीक्षा करनी चाहिए? परन्तु चित्त नहीं मानता। क्या करूँ? जगाही कर पूछूँ? यह मेरा दुश्मन तो नहीं है? यदि दुश्मन होता तो अब तक मुझे बाँकी रक्खे रहता। अवश्य कोई दूसरा ही होगा। कैसी दिल्लगी है? कैसा माजरा है; कैसी बात है; कैसा भूल-भूलैय्या है? मेरे पास कोई हथियार भी नहीं है। मेरे कपड़े भी सोनेही के हैं; इस अवस्था में मुझे देखकर लोग क्या कहेंगे? ऐसी ऐसी अनेक बातों की उधेड़बुन में लगे हुए

कुमार का दिमाग़ चक्कर खाने लगा। वे कुछ भी निश्चय नहीं कर सके।

आध घण्टे के क़रीब और बीतने के बाद वह आदमी जागा; उसने जागतेही अँगड़ाई ले उनकी ओर देखे बिनाही धीरे से–प्रातः स्मरामि भव भीति महार्ति शान्तै–को समाप्त करता हुआ, मुंह फेर कर कुछ ज़ोर से कहने लगा–सर्वान्तर्यामी; बृन्दावन बिहारी, कृष्ण मुरारी, दयाकन्द, नन्दनन्दन; जगबन्दन! भगवन्! सवेरे सवेरे ऐसे आदमी का मुंह मत दिखलाना, जिससे दिनभर एक बूँद पानी भी अपने पास तक टपक पड़ने की नौबत न पहुँचे? उसकी ऐसी बेसिर पैर की बातें सुन कुमार के दिल में बड़ी कड़ी चोट पहुँची; उन्होने कुछ झल्लाकर; परन्तु सभ्यता को लिए हुए कहा–क्यों जी! अजनवी महात्मा! तुम कौन हो; ऐसी बेतुकी बातें अपने मुंह से क्यों निकाल रहे हो? क्या तुम अपने को अकेलाही समझरहे हो, तुम्हारा होश तो ठिकाने है? परमात्मा किसी को भी भूखा प्यासा नहीं मारता। उसको हर एक प्राणी के ऊपर हर समय अपने से बढ़कर ख्याल बना रहता है। उसकी दयाका ठिकाना नहीं है। जितने हैं—भूखे तो उठ बैठते हैं, परन्तु पेट भर के ही सोते हैं। तुम यदि किसी दिन भूखे रह जावो तो उसमें उनका कोई दोष नहीं, वह सब तुम्हारी आलस्यता का दोष है? अस्तु—इन सब झगड़ों से क्या मतलब, तुम उठ कर अपनी सूर तो मुझे दिखावो?

कुमार की ऐसी बातें सुन, उनकी तरफ़ देखे बिनाही उसने ज़रा सा हँसकर कहा—ठीक है; तुमने बहुत ही योग्य बातों को मेरे सामने लाकर दिखलाया; परन्तु न जाने क्यों मेरा दिल और ही कुछ कहता है। सच पूछो तो; मुझे मुसी-

बत ने कहीं का भी नहीं रक्खा है। मैं हर एक क़दम को फूंक फूंक कर रखता हुवा इस भीषण संसार के भयानक जगहों पर चलने लग गया हूँ। मुझे किसी के ऊपर रत्ती भर भी विश्वास नहीं रह गया है। आफ़तों ने एक दम जर्ज्जरीभूत कर दिया है, कलेका टुकड़ा टुकड़ा हो गया है। आदमियों से घृणा पैदा हो गई है। मैं अपनी सूरत तुम्हे दिखाना नहीं चाहता। बरसों से दिखाते दिखाते ऊब गया हूँ। अब तो-आज से-इस दम से किसी की सूरत भी देखने का जी नहीं चाहता है। मैंने बड़ाही भयङ्कर स्वप्न देखा,-न जाने फिर किस मुसीबत में गिरफ़्तार होना है। मेरी जिन्दगी भी कैसी आश्चर्य घटनाओं की खान बन गई! मगर हाँ; तुमने जो कुछ मुझसे कहा वह सभ्यता का ख्याल करके मुझे इस समय नहीं कहना चाहिए था; परन्तु एकाएक मेरे मुंहसे टपक ही पड़ी। अब उसके उठाने का कोई भी उपाय नहीं है। माफ़ करना, तुम कोई भी हो; मुझे आफ़तों में पड़ा हुवा पागल समझकर अन्तःस्करण से क्षमा करना? मैंने तो अपने को अकेलाही समझ रक्खा था;-परन्तु पेड़ के साथ लता बन लिपटी रहने वाली प्रेमिनी की तरह तुम मेरी बगल में सटे हुए होने का ख्याल मुझे जरा भी नहीं था। कैसे हो, यह जीवन तो सिवाय अकेले के कभी दुकेले हो बीताही नहीं था। मुझे बग़ल के साथ बगल सटाकर सोने की आदत ही नहीं थी। अतएव-कृपानिधान! मेरी बातों से;-मेरी असभ्यता की कारवाई से तुम नाराज़ न होना? मैं परमात्मा की सौगन्ध खाकर कहता हूँ;—मुझे इस समय अपनी बिपत से भी ज्यादा इस बात से अफ़सोस होरहा है?

उस अजनबी की ऐसी बातें सुन कुमार ने जल्दी से कहा—नहीं नहीं, तुम्हे अफसोस करने की कोई आवश्यकता

नहीं है । भूल होती है, आदमी ही से होती है; बे अदबी होती है आदमी ही से होती है । मैं ज़रा भी इस बात से नाराज़ नहीं हूँ । तुम मेरी ओर देखकर अपनी बीती हुई बातों को तो सुनाओ; यदि मुझसे हो सकेगा तो हरतरह से तुम्हारी मदद करूँगा । क्या कहूँ, मैं भी मुसीबत ही में फँसकर ऐसे जङ्गल के किनारे पड़ा हुवा हूँ, नहीं तो तुम अपने दुःखों को बातकी-बातमें अपने से बहुत दूर पहुँचे हुए देखते ? उनकी ऐसी बातें सुन उस अजनबी ने उसी तरह पड़े पड़ेही कहा—दुःख तो भई ? मैं अब ब्रह्मा उतर सामने आ कहने पर भी अपने से दूर पहुँचा हुवा इस जीवन में कभी न देखूंगा । मगर हाँ, तुम्हारी तरह इतना कहने वाले भी इस जमाने में बहुत कम दिखलाई पड़ेगे । मैं समय से बहुत सताया जाचुका-हूँ । मेरा अब कहीं ठिकाना नहीं है । मैं अब कहीं का भी नहीं हूँ । एक समय सब कुछ था, सब तरह का मैंने सुख भी उठाया था, मैं अपने को बड़ाही भाग्यवान् समझता था, परन्तु इस समय घर, द्वार, धन दौलत, अपने, विराने सब कोई-को गँवाकर मैं एक भिखमंगे से भी नीच हो अपने को तमाम दुनियें भरसे हतभाग्य समझने लग गया हूँ । मालूम होता है तुमने भी मुसीबत की मीठी चाशनी को चक्खा है । तुम भी-मेरी तरह तो नहीं मगर कुछ कुछ इसको जानने लग गए-हो । अच्छा जानो, अच्छी तरह से जानो । यह भी नव रसों से एक बिरलेही ढङ्ग का रस है । इसको जानने के बाद आदमी बेइन्साफ के ऊपर पैर नहीं रखते । उनकी अच्छी लियाकत भी हो जाता है । अन्धे की तरह मुँदी हुई आंखें खुल जाती है । किसी गरीब—जमाने के सताए हुए के गले पर छुरी फेरने का विचार नहीं निकलता । दिल में दया,—आंखों

में हया,-आजाती है। अच्छा पहले तुमही बताओ, तुम कौन हो, कैसे किस तरह इस जङ्गल में, इस पेड़ के नीचे आराम करने के लिए तकलीफ उठाया। तुम्हे किस आफ़त ने अपनी जूती बनाकर पैर के नीचे दबाया।

उसकी इस तरह की बातें सुन कुमार को कुछ हँसी आई। उन्हो ने हँसकर कहा—तुमतो भई अजनवी! बड़ेही रसिक मिज़ाज मालूम पड़ते हो। मगर इस तरह कब तक मेरी ओर पीठ फेर, नई दुलहिन का नखरा निकालते हुए घूँघटही के भीतर से बातें करते रहोगे। अगर मर्द होतो,-जरा उठ बैठो, उठ कर आमने सामने हो बातें करो। मुझे यह ढङ्ग अपनी समझ से कुछ अच्छा मालूम नहीं पड़ने लग गया है। जब तक तुम मेरी ओर न फिरोगे तब तक मैं अपना हाल भी न बताऊंगा? यह सुन उसी अजनवी ने अपने हाथ पर हाथ मार जोर से हंसता हुवा, इनकी ओर घूमकर कहा-वाह! तुमने मुझे क्या नई दुलहिन बनाकर अपने को दुलहा बनाना चाहा है। देखो, अब देखकर मजे में क़ायदे के साथ;-जो कुछ तुमने आफ़त देखा है; वह एक एक करके मुझसे कहते जावो। मैं सुनकर अपनी विपत् के साथ तुलना करूँगा;-इसके बाद यदि तुम ऊपर के दर्जे तक पहुँचे हुये मालूम पड़ोगे तो मैं भी अपनी बिपत के पाठ को तुम्हारे सामने सुनाना प्रारम्भ कर दूँगा। इतना कह वह अजनवी लापरवाही से उनकी ओर देखने लगा। वे उसको देखकर निहायत ही हैरान हुए। उस की अलौकिक सौन्दर्यता के ऊपर उनकी टकटकी बँध गई। उन्होंने आज तक ऐसा खूबसूरत नौजवान तो कभी स्वप्न में भी नहीं देखा था। उन्हे आजतक अपनी खूबसूरती पर बड़ा ही घमण्ड था परन्तु उसे देखकर उनका वह घमण्ड चूरचूर

होगया। वे अपने को उसके पैरके बरोबर भी नहीं समझने लगे। बातकी बातमें उनकी सौन्दर्यता का नशा उतर गया। परमेश्वर की यह आश्चर्या दायक बनावट से वे ताजुब में आकर उसके सुन्दर, अत्यन्त ही सुन्दर चेहरे की तरफ़ विना बोले-चाले ही घूरते रहे। यह देख उस सुन्दर नव युवक ने अत्यन्त मधुर मुस्कान के साथ देखकर कहा—ओफ़! तुम भी इतने सुन्दर हो; जभी तो मुसीबत मुसीबत रटनेकी नौबत आखड़ी हुई। बेशक इस संसार में यही खूबसूरती तो सब किसी को चौपट कर देती है। आज दिन तुम इतने सुन्दर न होते तो काहे को इस हालत से पागल की तरह एक जङ्गल के कोने पर पड़े हुए दिखलाई पड़ते। कहो भई! तुम भी किसी नाजनी के फेरमें पड़कर आए हो या तुम्हारे फेरमें किसी नाजनीने पड़कर तुम्हे इस हालत तक पहुँचाया है?

कुमार—(कुछ सोचकर) क़रीब क़रीब ऐसी ही बातें है; परन्तु पहले तुम तो अपना हाल बताओ?

अजनबी—मेरा हाल मत सुनो;—मैं कहने बैठ जाउँगा तो तुम्हारी आँखों में फिर रोने के लिए आँसू भी न रह जायँगे। अतएव—मैं धीरे धीरे तुम्हे सब कुछ कह सुनाउँगा। पहले तुमही अपना हाल बताकर मुझे समझ लेने दो?

कुमार—क्या तुम मर्द तो हो?

अज—(कहकहा लगाकर) क्यों साहब! आपकी आखों में परदा तो नहीं पड़ा है, आप आंखें अच्छी तरह देखते तो हैं? अगर किसी किश्म के इश्कका सवार हुवा हो तो, कहिए—मैं आपका होश हवास दुरुस्त कर दूँ।

कुमार—(शर्माकर) नहीं नहीं, मेरे कहने का मतलब तुम्हारी समझ में नहीं आया। यह जमाना ऐयारी का है,

शायद तुमने किसी कार्यवश मर्द का भेष लिया हुवा हो, इसीलिए मैंने इतना कुछ कहा था। खैर-और सब हालों को बताने के पहले यह तो बतावो, यह जगह कहां की है ?

अज—बस, ठीक यही सवाल मैं तुमसे भी करने ही को था।

कुमार—(घबराकर) क्या तुम भी इस जगहको नहीं जानते, अफसोस ! अफसोस ! हम कैसी जगह आकर फँसे। नजाने यहां से अपना शहर कितनी दूर पड़ता है ? कैसे वहां तक पहुंचेगे। (अपनी उँगली की तरफ देखकर) लो, अँगूठी तक भी मेरे पास नहीं रह गयी। बस; आख़िर आकर भीख मांगने तक की नौबत आ पहुँची ?

अज—सूरत शकल से तो रईश मालूम पड़तेहो, तुम कौन हो ?

कुमार—मैं कौन हूँ, अब कोई भी नहीं हूँ। पहले एक मामूली जिमिदार का लड़का था, इस समय रात का कपड़ा पहनेहुए दीन हीन भीख मंगा हूँ।

अज—बस बस, करीब करीब, बिलकुल बिलकुल, मुझे भी अपनाही सा समझ लो। इस पाजी प्रेम ने मुझे एक बहुत बड़ी दौलत के तख्त से खींच कर एकदम इस हालत में ला पटका। इस समय मेरे पास कसम खाने के लिए बचा हुवा एक पैसा के सिवाय फूटी कौड़ी भी नहीं है ?

कुमार—अफसोस ! मेरे जीवन में यह कैसी नई घटना आघटी ?

अज—अब अफसोस करने से क्या होता है ? हम दोनों प्रेम में मतवाले होकर बर्बाद हुए। तुमने भी इसी में सब गँवाया होगा, मैंने भी एक पैसे के आलावे कुछ बांकी बचाके रख नहीं छोड़ा। तकदीर—तकदीर की बातें लाख करो

टलती नहीं। हां, दोस्त! अब तुम्हे मैं दोस्त ही कहूँगा, जब हम लोग इस तरह प्रेम में फंसकर यहाँ तक पहुँच चुके हैं तो अब इसका पीछा मत छोड़ें। चलो-करीब ही नाला बहरहा है—वहीं हाथ डुबोकर क़सम खाने के बाद—दोनो एक साथ-ही अपनी अपनी प्रेमिनी को खोजने निकले?

कुमार-तुम्हे अभी तक शौक बना हो तो तुमही खोजने जावो, मैं तो इस रास्ते में कभी न जाऊंगा।

अज—(हंसकर) इतनी विरक्ति! मैं तो कुछ, तुम तो बहुत कुछ पागल हो चुके हो। अजी दोस्त! जुदाई में स्वर्गीय आनन्द है। संयोग से वियोग अच्छा है। मिलने की आशा कितनी खुशी को पैदा करती रहती है; मिलने के बाद फिर क्या वह बात रह जाती है। देखो,—मैं एक बड़े भारी जमींदार का लड़का था, मेरे अलावे मेरी खान्दान में और कोई नहीं थे। मैं जब सोलह बरस का हुवा, तब मेरी शादी की चर्चा चारों तरफ होने लगी। मैं उस समय किसी से शादी करना नहीं चाहता था, क्यों नहीं चाहता था;-मुझे अपने रूपका घमण्ड था। मैं अपने मुकाबले में किसी भी औरत को नहीं समझता था एक दिन मैंने एक चित्रकार से एक, नवयौवना कामिनी की तस्वीर ख़रीदली :उसने-क्या कहूँ दोस्त। उसने तस्वीर बनकर मेरी शेखी पर पानी फेर दिया। मैं उस निर्जीव त वीर के हाथों बिक गया।

कुमार—वह तस्वीर किस सुन्दरी की थी?

अज—चुप चुप,—उसका नाम मैं इस समय इस जबान से नहीं निकाल सकता। हाँ, अगर देखना हो तो वह तस्वीर अभी तक मेरे कलेजे के साथ लगी हुई है। उस को तुम देख सकते है। इतना कहकर उसने कुर्तेके भीतर हाथ डाल हाथी

दाँतपर बनी हुई एक छोटी सी तस्वीर को निकाल, उन्हे दिखाते हुए कहने लगा—देखो, दोस्त ! मेरी हृदयहारिणी सुन्दरी यही है ?सच कहना। क्या तुमने कभी ऐसी औरत देखी है? अब मेरे पास यही एक तस्वीर तो जान बचाने का सहारा बनके रह गई हैं। कुमार ने उस तस्वीर को हाथ में लेकर देखा,—देखकर उनके ताजुब का ठिकाना नहीं रहा। वह तस्वीर सचमुच कुमारी कनकलताकी ही मालूम पडती थी। वे देरतक उसको देखते हुए सकतेकी हालत में पड़े रहे। यह देख उस अजनबी ने चटपट उस तस्वीर को उनके हाथ से ले; कुर्तेके भीतर रखते हुए कहा—क्यों दोस्त ! तुम तो मालूम होता है मुझसे भी बढ़कर इस तस्वीर के ऊपर दिवाना होगए। मैं इस बात के लिए ज़रा भी नाराज नहीं हुआ, क्योंकि यह ऐसी ही तस्वोर है; इसमें ऐसी ही सौन्दर्यता भरी हुई है। तुम तो क्या यदि इन्द्र भी आजाते तो इसको देखकर अपने दिलको अपने काबू में रखकर वापस लौटने न पाते ?

कुमार—(लम्बी साँसलेकर) नहीं, यह बात तो नही हैं। मुझे यह तस्वीर देखकर दूसरी ही बात याद आगई? मैं उसी के सोच बिचार में कुछ क्षण के लिए अपने आपको भूलकर डूब गया था।

अज—वह कौनसी बात है, क्या मैं सुन सकता हूँ?

कुमार—क्या यह तस्वीर राँची के महाराज गोविन्ददेवकी लड़की कुमारी कनकलता की नहीं है?

अज—(हँसकर) तुम भी भई दोस्त ! सीड़ी की तरह बातें करते हो ? मालूम होता है तुम इस तस्वी को देखकर पागल हो गए हो ? कहाँ राँची की राजकुमारी, कहाँ यह

हीरे के तिलस्म की परी ? वह इसके पैर के बरोबर भी नहीं हो सकती है।

कुमार—(अपने गुस्से को मुश्किल से संभाल कर) होगी, मगर मैं तुम से झूठ भी नहीं बोलता हूँ। मैंने कनकलता की तस्वीर देखी है वह भी हूबहू ऐसी ही है।

अज—ऐसी ही है ! तब तो तुम उसके ऊपर जरूर आशक हुए होगे। बस बस मैं समझ गया, उसीके फेर में तुम अपने घर से निकलेहो। मगर देखो तो दोस्त ! संयोग की बात कैसी हो आ पड़ती है। हम दोनों एक ही सूरत शकल की चन्द्रबदनी के प्रेम में पड़कर घर से निकले हुए इस तरह आज यहां, एक साथही मिले। यदि इस बातको कोई सुनपाएगा तो जल्दी से विस्वास भी न करेगा।

कुमार—हाँ, यह तो बताओ, तुम मेरी बगल में कैसे आकर सोए ?

अज—यही तो मुझे भी ताजुब में डाल रहा है। कलकी रात जैसी अँधेरी थी वह तो तुम जानतेही हो। घूमते फिरते आधी रात को मैं बदहवास सा हो एक जगह लेट तो गया था, परन्तु कहां लेटा था, यह मुझे इस समय याद नहीं है। जब मेरी आंख खुली तो तुम्हे अपनी बगल को गरम करते हुए पाए ?

कुलार—तुम शामको कहां; किस जगह थे ?

अज—मैं शाम को कहां था,—हां ठीक है, अब याद आया, मैं शाम को साढ़े सात बजे के करीब, पालकोट के पासही के एक छोटे से गांव में था।

कुमार-(चौंककर) पालकोट ! तो मालूम होता है यह

भी उसीकी सरजमीन है, मगर ताज़ुब होता है, मैं इतनी दूर इस तरह कैसे यहाँ चला आया ?

अज—तुम भी अजब बहँकी बातें करते हो,—अपने पैर से चल कर आए, अब कहते हो कैसे चले आए ? क्या तुम्हे किसी ने गोदी में उठाकर मेरी बगल में सुला दिया।

कुमार—तुम से सच कहता हूँ. मैं कल रात को मधुपुर के एक गुदगुदेदार पलंग पर सोया हुवा था।

अज—आज सुबह गुदगुदेदार दूभ के ऊपर इतनीदूर सोया हुवा पाया। क्याही अजब की बात सुनने में आती है-जीविते किं न दृश्यते,—अच्छा चलो दोस्त ! हम दोनों ही पागल हैं। ईश्वरने क्याही अच्छा जोड़ा मिला दिया ?

कुमार—(अपने को सँभाल कर) तुम बारबार अपने साथ मुझे भी पागल क्यों बनाते हो ?

अज—(कहकहा लगाकर) तो क्या तुम्हे पागल होने में कुछ शक है ? खैर-इनसब झगड़ों से क्या मतलब ? चलो वस्ती की तलाश में-इस जगह को सलाम करते हुए जायँ ? मगर तुम इस हालत से कैसे चलोगे ! तुम्हारे पास कुछ रुपैया है ?

कुमार—इस समय तो एक पैसा भी नहीं है।

अज—तो किस समय तुम्हारे पास पैसा रहेगा ? अच्छा, कोई चिन्ता नहीं, तुम घबराओ मत, घबड़ाने से किसी का काम बना नहीं है। परमात्मा देनेवाले हैं। अगर हमलोगों की तदवीर में कुछ मिलने की होगी तो वे अवस्य देवेंगे।

इसके जवाब में कुमार कुछ कहा ही चाहते थे, इतने मेंसामने से किसी एक खूबसूरत कम उमर नौजवान लड़के को डर के मारे हाँफते काँपते तेजी के साथ इसी ओर दौड़ते हुए आते देख, दोनो एक साथही उठ खड़े हुए।

सातवाँ बयान ।

"जब तक बुरे रहो गे,—तब तक बुराही होगा ।
उसकी बुरी बनोगे—वह भी बुराही होगा ॥"

पानी अभी अभी मूसलधार बरस कर थम गया है, परन्तु बादल ज्यों के त्यों अपने अपने अड्डे पर डटे हुए पड़े हैं । समय मध्यान्ह के पार पहुँच चुका है किन्तु सवेरे से अब तक सूरज भगवान का दर्शन नहीं हुवा है । हवा पत्ते तक को नहीं हिलाती है, सड़क पानी से भर गई है । छाता ताने चलने वाले लोग एक आध दिखलाई पड़ने लग गए हैं । ऐसे समय पालामौकी एक छोटी गली में से एक बुरके वाली औरत को ,तेजी के साथ राजमहल की तरफ़ आती हुई देख रहे हैं । उसकी दाहिनी बग़ल कुछ उभड़ी हुई है, इसलिए मालूम होता है वह उसमें कोई चीज़ दाबे हुए लिए जारही है । इस तरह कई एक गलियों से होती हुई वह राजमहल के बहुत ही पास पहुंची;—जोकि नदी के किनारे ही पर बड़े ही आलीशान ढङ्ग से ,बना हुवा था । वह कुछ देर के लिए एक जगह खड़ी होकर सोचने लगी; इसके बाद बाईं तरफ़ मुड़कर नजरबाग़ के चोर दरवाज़े पर पहुँची । वहां आतेही उसने दरवाज़े को धीरे धीरे खटखटाया । साथही दरवाज़ा खुल गया । वह उसके अन्दर चली आई । उसके अन्दर आतेही एक अधेड़ औरत ने दरवाज़ा बन्द करते हुए इससे पूछा—कहो, आज तुम्हे इस रास्ते से आनेकी कैसी आवश्यकता आपड़ी ? बहुत दिनो के बाद इधर भूली हो, क्या अब भी हमें खाली हाथही रहना पड़ेगा । उसकी ऐसी बातें सुन

उस बोरकेवाली ने उसके हाथ में एक अशर्फी देकर कहा—नहीं नहीं बेचना तुम्हे क्यों खाली हाथ रहना पड़ेगा! मैं फिर वापस लौटूँगी तो और भी कुछ न कुछ तुम्हारी खातिरी करके ही जाऊंगी। उसने झुककर सलाम करने के बाद उसको खुशी खुशी अपनी चादर की कोर में बांध लिया। इसके बाद बोरकेवाली वहां से दीवार के नीचेही नीचे चलकर फाटक के पास पहुँची। उस समय वहां दो खूबसूरत औरतें हाथ में नङ्गी तलवार लिए पहरा दे रहे थे। इसने वहां पहुँच कर उन दोनों के हाथ में भी एक एक अशर्फी थमा दी। उन दोनों ने भी उसको लेकर इसे अदब के साथ सलाम किया। यह वहाँ से अन्दर आकर इधर की सीढियों में चक्कर लगाती हुई एक बहुत ही बड़े कमरे के बाहर पहुँची, जहां बारह पन्द्र लौंड़ियाँ पहरा देने के लिए उसी ठाट से बैठी हुई थी। वहां पहुँचतेही उसने एक लौंड़ी की तरफ देखकर कहा—कहो मुन्ना! राजकुमारी इस समय कहां हैं? यह सुनतेही मुन्ना ने कुछ आगे बढ़ अदब के साथ झुक कर कहा—आप सीधे भीतर चली जाइए। राजकुमारी तरला के साथ बैठी हुई आपही का इन्तजार देख रही है। वह यह सुनतेही दरवाजे का परदा हटाकर अन्दर चली आई।

कमरा हरतरह के सामानों से अच्छी तरह सजा हुआ था। चारो तरफ़ दीवार में बड़े बड़े कदआदम आइना लगे हुए थे। जगह बजगह तस्वीरें टँगी हुई थी। तीन तरफ़ बड़े बड़े पलंग बिछे हुए थे। टेबुल कुर्सी कोंच भी क़रीने से लगे हुए थे। कई एक शीशे की आलमारियों में रङ्ग बिरंगी शीशीयां रक्खी हुई थी। हर एक खिड़कियों में मोतियों का झालरदार परदा टँगा हुवा था। कमरे भर में हरेरंगकी मखमली क़ालीन

बिछी हुई थी। बड़े बड़े झाड़ लटक रहे थे। दोशाखी, तीशाखी, पञ्चशाखी दीवालगीर की कमी नहीं थी। सामने की ओर बिछे हुए पलङ्ग के पासही की एक खूबसूरत गद्दी पर गावतकिए के सहारे बैठी हुई एक लावण्यमयी षोड़शा, सुन्दरी, अपने नीचे क़ालीन पर बैठी हुई एक युवति से धीरे धीरे बातें कर रही थी। एकाएक इस बोरक़ेवाली औरत को दरवाजे का परदा उठाकर अन्दर आते हुए देख उस सुन्दरी ने बड़े उमङ्ग के साथ कहा—आवो आवो, तुम बड़े अच्छे मौक़े पर आ पहुँचे ? मैं तुम्हारा इन्तज़ार देखते हुए तुम्हारे ऊपर बहुत ही बिगड़ रही थी ? बोरकेवाली औरत ने धीरे से एक मीठी हँसी हँसकर कहा—तुम मेरे ऊपर क्यों न बिगड़ोगी ? मगर देखो, बाहर बहुत सी लौडियाँ पहरे पर खड़ी हैं। तुम्हे समझ बूझकर मुझसे बातें करनी चाहिए। अगर कोई भाँप जायंगे तो उसका नतीजा क्या होगा ?

सुन्दरी—मैं अब इन सब बातों की ज़रा भी परवाह नहीं रखती। मगर ख़ैर (तरला से) तू दरवाजे को अच्छी तरह से बन्द कर दे ? तरला ने तुरन्त उठकर दरवाजे को अच्छी तरह बन्द कर दिया, इसके बाद बोरकेवाली ने अपना बोरक़ा निकाल कर एक कोंच के ऊपर रख, अपने साथ लाई हुई छोटीसी पोटली को भी उसी के ऊपर पटक दिया। मगर यह क्या ? अभी तक तो इसको हम बोरकेवाली औरत ही समझे हुए थे, परन्तु यह तो बोरके का परदा हटते ही एक उन्नीस बीस बरस का खूबसूरत नौजवान मर्द निकल पड़ा। इसने तो हमें बड़ी देर से अच्छा छका रक्खा था। उसने इस तरह दोनो चीजों को रखनेके बाद साड़ी की तरह पहिने हुए धोती को क़ायदे के साथ दुरुस्त कर सुन्दरी की

तरफ़ मुहब्बत की नज़र से देख अपने बालको संवारने लगा। उसको ऐसा करते देख सुन्दरी ने हँसकर उसका हाथ पकड़ अपने पास बिठा,—उसके बालको अपने कोमल हाथ से दुरुस्त करती हुई कहा—जवाहिर ! मैं तुम्हे कितना प्यार करती हूँ; परन्तु तुम मुझे कभी प्यार की नज़र से देखते भी नहीं हो। मैं तुम्हारी जुदाई में कितनी बेचैन रहा करती हूँ,—परन्तु तुम कभी भूल कर भी मेरी याद नहीं करते?

जवाहिर—(हँसकर) कुमारी! तुम्हे यह आज लम्बा चौड़ा नखरा किसने सिखाया? ठीक है, जहां तरला ऐसी दिलदार सहेली तुम्हारे पास रात दिन रहा करती है वहाँ क्यों न तुम ऐसी ऐसी बातों को सीख जावो।

तरला—बस; आपको तो हर समय ऐसाही ताना सूझा करता है?

जवाहिर—तो क्या मैं झूठ कहता हूँ? तुम्हारी ऐसी रसिक औरतों का मिलना इस समय बड़े भाग्य का काम रखता है।

तरला—(चमक कर) मुझे ऐसी कोरी खुशामद बिलकूल ही अच्छी नहीं मालूम पड़ती?

कुमारी—(हँसकर) तो इसके अलावे बता, तू इनसे क्या चाहती है?

जवाहिर—अब क्यों नहीं कहती, शायद कहने में कुछ अड़चन मालूम पड़ती होगी।

तरला—आपकी बहँकी बहँकी बातें सुनते सुनते मुझे तो एक मिनट भी आपके सामने ठहरने का जी नहीं चाहता है।

जवाहिर—देखा कुमारी! यह कैसी रहस्य भरी बातों को सुनाकर हमलोगों को उलाहना दे रही है। अच्छा, कोई

हर्ज नहीं, अगर परमात्मा ने चाहा तो मैं भी इसका बदला चुकाए बिना हर्गिज न रहूँगा।

कुमारी—अब तुम दोनो के झगड़ेको मैं बीचहीमें फैसला किए देती हूँ। (तरला से) उस अलामारी में से उन सब चीज़ों को तो निकाल ला? तरलाने उसी दम एक अलामारी खोल, उसमें से दो शीशे का ग्लास और एक लाल रङ्गकी बड़ी बोतल को निकाल उन दोनो के सामने रख दिया। उसके रखते ही कुमारी ने बड़े प्रेम से ग्लास में बोतल उड़ेल, उसको भरते भरते कहा—तुम समझते हो जवाहिर! आज इस समय; इस बदली में इस तरह तुम्हे मैंने क्यों तकलीफ़ दे भेजा होगा?

जवाहिर—(मुस्कुरा कर) मैं तुम्हारे सामने क्या समझूँ, तुम्ही बतलाओ मुझे किस लिए याद किया था?

कुमारी—(उसके हाथमें ग्लास देकर) लो, इसको ख़ाली कर जावो तो मैं तुम्हें अच्छी तरह से समझा दूँ।

जवाहिर—(उसको एकही घूंट में पी,—उसी में फिर भरकर उसे देते हुए) लो, तुम भी इस सुधा का स्वाद भरपूर ले लो तो मुझे समझाने के लिए बैठ जाना।

कुमारी—(उसको ख़ाली कर,—तरला के लिए भरती हुई) ले तरला! तू भी मेरी तरफ़ से एक ग्लास लेकर अपने को कुछ घण्टे के लिए स्वर्ग की शैर करने के लिए पहुँचा। उसने पहले तो लेने से नाहीं नूहीं किया, आख़िर को बड़ी लाचारी दिखाती हुई ग्लास को ख़ाली करके एक किनारे रख दिया। इसके बाद तीनो ने दो दो ग्लास और पिया। नशे ने गुलाबी रङ्ग दिखाना शुरू कर दिया। कुमारी ने मुहब्बत से जवाहिरलाल का हाथ, अपने हाथ में लेती हुई कहा—दोस्त! तुम इतने खूबसूरत क्यों हो?

जवाहिर—तुम्हारी लामिसाल खूबसूरती के सबब से ?

तरला—वाह, क्याही अच्छी बात निकलने लगी।

कुमारी—तुम तो भई, सदैव ऐसीही बातें करके झेंपाया करते हो। मैं तुमसे ज्यादा खूबसूरत हूँ, नहीं, हर्गिज नहीं ?

जवाहिर—अगर तुम मुझे इतना खूबसूरत समझती तो कुमार रणधीरसिंह के प्रेम में पागल हो मुंगेर तकका धावा करने कदापि न निकलती।

कुमारी—मैं उस समय बिलकूलही आपे में नहीं थी। सच पूछो तो, वह एक तरह कानशासा मुझे चढ़ गया था। मैं अब तुम्हे कभी छोड़ सकती हूँ ?

जवाहिर—तो सावित्री को लाकर तुमने अपने यहाँ क्यों क़ैद कर रक्खा है ?

कुमारी—उसमें दो तरह का मतलब है,—एक तो रणधीरसिंह से बदला लेने के लिए, दूसरा तुम्हे नजर करने के लिए ?

जवाहिर—तुम्हे मेरा इतना ख्याल है ?

कुमारी—बेशक, आजमाकर क्यों नहीं देख लेते ?

जवाहिर—अच्छा तो, उसको यहाँ बुलाओ, मैं दो एक बातें उससे किया चाहता हूँ।

कुमारी—ठहरो, इतनी जल्दी मत करो। क्या तुम्हे मेरी अभिलाषा के ऊपर ज़रा भी ख्याल नहीं आता।

जवाहिर—क्यों नहीं आता है, बहुत कुछ आता है,—अगर न आता तो मैं इस समय, इस तरह अपने आराम को छोड़ यहाँ क्यों चला आता ?

कुमारी—यह तो तुम्हारा चोंचला भर है, नहीं तो मेरी तरह मुझसे तुम कभी भी प्रेम नहीं करते ?

जवाहिर—नहीं करते,—ठीक कहती हौ, नहीं करते। मगर सुनो कुमारी! तुमसे आज मैं—ख़ैर,अभी नहीं,—मैं एक मर्तबः सावित्री को देखा चाहता हूँ। तुम मेहरबानी करके उसको मेरे सामने बुलवा दो?

कुमारी—(कुछ सोच कर) एक आध रोज़ तुम और सबर कर जावो। मैंने उसे तुम्हारे ही लिए लाकर कैद किया है तो तुम्हे न दिखलाकर किसे दिखलाऊँगी?

जवाहिर—बस भुवनेश्वरी! आज मैंने तुम्हारी मुहब्बत को देख लिया? क्या ऐसा ही करने के लिए तुम मुहब्बत मुहब्बत चिल्लाया करती थी। मैं अब यहाँ एक मिनट के लिए भी नहीं ठहरूँगा।

कुमारी—तुम तो भई! जरा सी बात के लिए बिगड़ उठते हो। मैं कितना सोच समझ कर पैर रखती हूँ। अगर इस बात को कोई जान जायंगे तो क्या कहेंगे?

जवाहिर—क्या कहेंगे,-ठीक है, क्या कहेंगे? यही कहेंगे,-कुमारी भुवनेश्वरी ने अपने लड़कपन के दोस्त जवाहिरलाल को भूपालसिंह की लड़की सावित्री मँगाकर दिला दिया, और क्या कहेंगे। कुछ तुमने कहने की जगह भी बांकी रक्खी है। अच्छा, अब मैं ज्यादे बहस नहीं करता। तुम्हें मेरी ज़रा भी मुहब्बत हो तो सावित्री को इसी दम लाकर मेरे सामने हाज़िर करो?

कुमारी—मैं हाथ जोड़ती हूँ, तुम इस समय ऐसी जिद की बातें मत करो।

जवाहिर—तुम विश्वास रक्खो, मैं तुम्हारी मुराद पूरी करने के बाद उससे मिलूँगा। इस समय मुझे उसके देखने का शौक़ चर्राया हुवा है। उसकी ऐसी बातें सुन लाचार

हो उसने तरला की तरफ़ देखकर कहा—अच्छा जावो, उसको ले आवो, क्या करें; इनकी खातिर से मुझे झख मार कर सब कुछ करना पड़ता है। तरला ने कोई जवाब नहीं दिया, मुँह बिचकाती हुई उठकर सामने लगे हुए एक बड़े आइने को किसी ढङ्ग से पल्ले की तरह खोल उसके अन्दर कदम रक्खा। उसके जाते ही जवाहिर लाल ने भुवनेश्वरी को भर ज़ोर पकड़ अपने कलेजे से लगाकर कहा—बस, प्यारी! अब की तुमने मेरी मनकी बातें करके अपने प्रेम का मुझे अच्छा परिचय दिया। अब मैं तुम्हे अपने हृदय से कभी भी अलग नहीं करूँगा। मगर क्या सावित्री तुम से खूबसूरत है। इसके जवाब में भुवनेश्वरी ने कुछ भी नहीं कहा! वह उसकी गोद में सिर रख कुछ सोचने लगी। आध घण्टे के बाद वही आइना एक खटके के साथ अन्दर की तरफ झूल गया। साथही कुमारी सावित्री का हाथ पकड़े हुए तरला आती हुई दिखलाई पड़ी। उन्हे देखतेही जवाहिरलाल जल्दी से अलग हो बैठा। भुवनेश्वरी ने नाउम्मिदी की नज़र से उन दोनो की तरफ़ देखा। इस समय सावित्री का बदन रात्री के कमल की तरह मुरझाया हुवा था। उसका अद्वितीय सुन्दर चेहरा बादल के भीतर छिपे हुए चन्द्रमाकी तरह दिखलाई पड़ रहा था। उसकी बहुतही दीन अवस्था होरही थी परन्तु न छिपने वाली अलौकिक सौन्दर्यता ने जवाहिरलाल ऐसे कामुक की नज़रों में चकाचौंधी डालदी! वह देर तक उसको देख नहीं सका। आँखें झुक गई। मुँह से एक ठण्डी साँस निकल पड़ी। उसको उसके सामने भुवनेश्वरी एक तुच्छ लौंड़ी सी मालूम पड़ने लगी। उसने मुश्किल से अपने कलेजे को सँभाल, तरला को उसे अपने पास लाने का इशारा किया।

यह देख भुवनेश्वरी ने कहा—बस, अब तुम देख चुके न—मैं इसको इस समय वापस भेज देती हूँ। कल फिर बुला कर इस से बात चीत करलेना ? यह अभी बहुत ही घबड़ाई हुईहै।

तरला—बड़ी मुश्किल से तो मैंने समझा बुझाकर इसको इस समय यहाँ ले आई।

जवाहिर—[सावित्री के प्रेम में चूर होकर] नहीं नहीं, अभी इन्हें मत वापस ले जावो। खिलावो, पिलावो, तबीयत मस्त कर दो, फिर जैसा तुम कहोगी वैसा ही किया जायगा। बिचारी को कैद की तकलीफ झेलते झेलते नाकों दम हो आयाहै।

कुमारी—बस, यही बात तो जवाहिर ! तुम ज़रा भी अच्छा नहीं करते।

जवाहिर—मैं अच्छा नहीं करता ? बहुत ही अच्छा करता हूँ। कितने दिनों से तुम्हें कहता हुवा आ रहा था,—मगर तुम सुनती ही नहीं थी। बैठो,—एक किनारे चुप चाप लग कर बैठो। मैं अपनी प्यारी से, मैं अपनी हृदयहारिणी से, मैं अपनी प्रेमिनी से दिल खोल कर बातें कर लेता हूँ। मुझे इस समय रोकने वाला कोई भी नहीं है।

कुमारी—देखो जवाहिर ! तुम अपने होश में आकर बातें करो ?

जवाहिर—तुम्ही अपने होश में आकर यहां से निकल बाहर हो। मैं अब तुम्हें कुछ भी नहीं समझता। अगर ज्यादः टें टें करोगी तो गला.........

तरला—(गरज कर) चुप पाजी, बदमाश, शोहदा, कम्बख्त ज़बान संभाल कर बातें कर नहीं तो यही खञ्जर घुसेड़ कर तेरा खून पीऊँगी। [कुमारी से] देखा,—एक नीच को मुँह लगाने से यही नतीजा होता है।

कुमारी—इस बदमाश ने मेरे एहसान का बदला खूब चुकाया।

जवाहिर—अजी, तुम्हारी ऐसी फ़ाहिशा औरतों का एहसान ही किस काम के लिए होता है। मगर देखो,—मैं तुम दोनों से डरने वाला नहीं हूँ। मुझे किसी तरह की धमकी दिखाना फजूल है। हां, अगर अपनी खैरियत चाहती हो तो कुमारी सावित्री को मेरे पास अकेली छोड़ तुम दोनों इसी दम बाहर चली जावो। मैं न तुम्हारा बदमाश आशक जवाहिर लाल हूँ, न उसकी आत्मा ही। क्या करूँ,—आज कुमारी सावित्री के लिए लाचारी दर्जे तुम ऐसी फ़ाहिशा औरत की सोहबत में रह कर अधर्म के प्याले तक को पीना पड़ा। मगर कोई हर्ज नहीं, हम लोग क्षत्री हैं,—प्रायश्चित्त करके भी निकल सकते हैं। इतना कह कर अपने मुँह पर लगी हुई एक बारीक़ झिल्ली को उसने निकाल फेंक दिया। उसके निकलते ही उसकी सूरत एक दूसरे ही नौजवान की तरह दिखलाई पड़ने लगी। जिसको देखते ही भुवनेश्वरी और तरला बेतहासा चिल्लाकर वहां से भाग खड़ी हुई। सावित्री की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसने उस अजनवी की तरफ़ डबडबाई हुई आंखों से देखकर कहा—भैय्या आनन्द! तुमने आज इस तरह आकर मुझे सदैव के लिए अपने एहसान से बिना मोल खरीद लिया। यह सुन उसने जल्दी से कमरे का दरवाजा बन्द कर कहा—नहीं बहन! तुम्हे ऐसा कहना उचित नहीं है। मेरा तो यह कर्तव्य ही था। अब चलो, मैं तुम्हे एक दूसरे रास्ते से बाहर ले चलता हूँ। यहां से निकल चलने वाले उस रास्ते के आखिर में हम लोगों की राह देख चपला, जयदेव, माधवी, भूतनाथ और एक अज्ञान

मददगार औरत भी बैठी हुई है । मैं यहां तक इस सूरत में कैसे आ पहुँचा, वह सब हाल तुम्हे वहीं चलकर बताऊँगा"। इतना कह कर उसने पास ही की दीवार में लगी हुई एक पंचशाखी दीवारगीर को पकड़, जोर से नीचे की तरफ़ झुका दिया । उसका ऐसा करते ही ज़मीन पर का एक टुकड़ा हाथ भरकी गोलाई को लेता हुवा नीचे की तरफ़ झुल गया। इतने में बड़े ज़ोर से दरवाज़ा टूटने की आवाज़ आई, साथ ही कई एक सिपाही नंगी तलवार लिए हुए अन्दर आते दिखलाई पड़े। आनन्द ने सावित्री को जल्दी से उसके भीतर कूदने के लिए कहा। वह वैसा करने के लिए दीवार के पास आई भी नहीं थी, इतने में एक हलकी आवाज़ के साथ पास ही एक छोटासा दरवाज़ा पैदा हो, उसमेंसे एक नक़ाबपोश ने निकल, उसको गोदी में उठा तेज़ी के साथ उसके अन्दर अपने को कर लिया । साथ ही वह दरवाज़ा भी बन्द हो गया। यह सब घटना पलक झपकते ही होगयी । वे सब आने वाले सिपाही यह कार्रवाई देख एक साथही आनन्द के ऊपर टूट पड़े। मगर इस समय वह हर तरह से होशियार था, इस लिए उन सबों को अपने ऊपर टूटते देख वह भी अपने पैदा किए हुए उसी छेद के अन्दर कूद पड़ा।

आठवाँ बयान

"सोचकर आगे बढो, लाखों ठगे हैं जाचुके।
मिट चुके कितने यहाँ, कितने मज़ा हैं पाचुके॥"
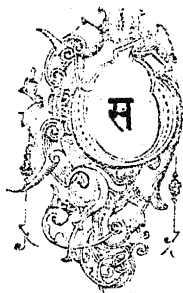
समय सन्ध्या का है,—चिड़िया अपने अपने घोंसले के चारों तरफ़ चह चहाते हुए मँडरा रहे हैं : आसमान साफ़ है, हवा ठण्डी २ बह रही है। ऐसे समय उस अपरिचित लाम्बे क़द के आदमी को,-जिससे कईमर्तबः हम गोलों की भेंट हो चुकी है—हज़ारीबाग़ के पास ही की एक छोटी सी पहाड़ी के ऊपर, एक झोपड़ी के सामने अकेले टहलते हुए देख रहे हैं । यह तो कुमार रणधीरसिंह और कुमारी सावित्री को छुड़ाने जाकर गिरफ्तार हो गया था, फिर यहाँ कैसे दिखाई पड़ रहा है। बिक्रमसिंह से सरला ने इसके बारे का कुछ जिक्र तो किया था, परन्तु किस तरह से छूटा, कैसे छूटा, कब छूटा यह अभी मालूम नहीं है । न इसके साथ फँसने वाले जीवनसिंह और कालिन्दी ही का कोई हाल मालूम हुवा है ।इसके चेहरे से कुछ उदासी तो झलक पड़ती है परन्तु अपने को बहुत कुछ सँभाले हुए इधर उधर चहलक़दमी कर रहा है। अब चारो तरफ़ से अँधियारी घिर आई, साथ ही उसको दूर करने के लिए पहाड़ को फोड़ चन्द्रदेव भी उदय हो आए । यह देख उसने आप ही आप

कहा—मैं आज बरसों के बाद फिर उसी बला में फँसा चाहता हूँ। मगर कोई हर्ज नहीं,-मैं अब अपनी जान को दे दूँगा। लेकिन बुरे मार्ग में कभी भूल कर भी पैर न रक्खूंगा। देखें,—क्या कहता है;—एक बार उसकी बातें भी तो सुनलें? यदि उसने मुझे मजबूर करना चाहातो इसी खञ्जर से—नहीं नहीं कोरा जवाब देकर मैं अपने को किसी दूसरे ही मुल्क में पहुंचाऊँगा।

उसकी अन्तिम बातें मुश्किल से समाप्त भी न हो पाई थीं, इतने में जङ्गल की तरफ़ से घोड़ा कुदाते हुए एक तीस बत्तीस बरस की खूबसूरत औरतने निकल, इसके पास आकर कहा—मैं तुम्हे बड़ी देर से खोज रही थी, अच्छा हुवा, तुम यहीं मिल गए मगर ज़रा भी न घबड़ाना, वह तुम्हारा अब कुछ भी नहीं कर सकता। उसके लिए बड़ी बड़ी बन्दिशें बांधी जा चुकी है। आधी रात के बाद माधुरी भी तुमसे आके मिलेगी। मैं अब यहाँ से सीधे नाभा चली जाऊँगी। कुमार अजयसिंह वहीं की एक चुड़ैल औरत के साथ जा फंसे हैं। उन्हे वहां से छुड़ाने के बाद फिर मैं तुमसे आकर मिलूंगी। यदि वह तुम्हे मज़बूरन किसी बुरे मार्ग पर घसीटना चाहे तो (उसके कान में धीरे से कुछ कहकर) यही बात उसे कह देना, परमात्मा ने चाहा तो वह इसीसे दहल कर तुम्हारे ऊपर ज्यादती करने से बाज़ आवेगा?

अजनबी—तुम्हे इन सब बातों की ख़बर कैसे लगा करती है?

वह—(हँसकर) क्या तुमने इतने दिनों तक सोहबत उठाकर अभी तक भी मदनमोहनी को नहीं पहँचाना है?

अज—क्यों नहीं पहचाना है, तुम्हे संसार में अच्छी तरह

पहचानने वाला कोई है तो एक यही है। परन्तु यह बात तुमने बड़ी ही पहुँच की खोज निकाली, इससे वह दुश्मन अवश्य नीचा देखेगा?

मदन—अच्छा, अब तुम संभल कर बैठो, मैं जाती हूँ। आज रात को उससे भेंट करनेके बाद जो जो कार्रवाई करनी होगी, वह सब माधुरी से सलाह करके आई हूँ। वह तुम्हे उसी ढङ्ग से ले चलेगी। मगर देखना;—याद रहे, उसको तुम अपनी मालकनी की तरह मानकर उसका काम करना। वह एक अब बड़ी शक्ति को रखनेवाली हो गई है। उसके ज़रीए से हम दोनों की बहुतही भलाई होने की आशा है। उसकी मेहरबानी भी हम दोनो के ऊपर हद से ज्यादा है। उसने तुम्हारी छोटी औरत और तुम्हारी लड़की के साथही साथ मेरी बहन का भी पता लगाया है।

आज—ऐं! मेरी प्यारी औरत और मेरी नन्ही लड़की का भी पता लगाया है? यह बिलकूलही असम्भव बात है? मैं इसको किसी तरह मानही नहीं सकता?

मदन—ख़ैर तुम न मानो,-मगर वह तो मानती है। और सब तरह की बातों के ढङ्ग से मैं भी मानने लग गई हूँ, मैं भी मानती हूँ। अच्छा, इन सब बहसों से क्या मतलब,—ईश्वर जैसा चाहेंगे वैसा कर दिखावेंगे। यदि उन सबों की ज़िन्दगी अभी तक बची रही होगी तो ज़रूर किसी न किसी दिन मिलेहींगी। ख़ैर—उससे मिलने के बाद माधुरी से मिलकर तुम सीधे पालामौकी तरफ़ चले जाना। वहां परसों से आनन्द; चपला, जयदेव और भूतनाथ कुमारी सावित्री को छुड़ाने के लिए बैठे हुए हैं।

अज-(चौंककर) भूतनाथ! वही चुनारगढ़वाला भूतनाथ?

मदन—हाँ हाँ वही गदाधरसिंह से भूतनाथ बना हुवा भूतनाथ, या यों कहो तुम्हारी पहिली औरत के तरफ़ का शाला भूतनाथ।

आज—वह वहाँ कैसे पहुँचा?

मदन—यह सब हाल तुम्हें माधुरी की मुंह ज़बानी मालूम हो जायगा। अच्छा, अब मैं जाती हूँ, देखो होशियारी से सब काम करना। इतना कह उसने धीरे से उसके गालमें चिउंटी काटा इसके बाद हँसती हुई जिस तरफ़ से आयी थी उसी तरफ़ घोड़े को मोड़कर चली गई। उसके जाते ही यह फिर गहरी चिन्ता में डूब गया। इसको इस तरह चिन्ता में डूबे हुए अभी पन्द्रह मिनट भी न हुए होंगे उसी तरफ़ से जिस तरफ़से मदनमोहनी आकर चली गई थी एक चोबदार के ठाट बाट का अधेड़ आदमी ने आकर इस से कहा—देखो, भाई? आज तुम यहां से इसी दम चले जावो,—नव्वाब साहब एक बहुत ही ज़रूरी काम में गिरफ्तार हुए हैं, इस लिए वे किसी हालत से नहीं आसकते। कल तुम इसी वक्त इसी जगह मौजूद रहना, वे तुम से आकर मिलेंगे।

अज—(चिढकर) मैं क्या उनका तावेदार हूँ जो जिस वक्त कहें उस वक्त वहाँ हजारों काम को बर्बाद करके मौजूद रहूँ।

वह—(मुस्कुराकर) यह तो तुम्हारी और उनकी हालत से मुझे ऐसा ही मालूम देता है। खैर सलाम,–जो कुछ मुझे कहा गया था वह तुम्हे सुना दिया, अब मैं जाता हूँ। इतना कह कर वह जवाब का आसरा देखे बिना ही जिस तरफ से आया था उसी तरफ़ चला गया। उसके जाने के बाद यह भी मनहीमन एक तरहका बोझसे अपनेको हलका हुवा समझ

जाने ही को था इतने में दूर से किसी आदमियों के बात-चीत करते हुए आने की आवाज इसके कान में आ पड़ी। यह कुछ सोच पासही के एक पेड़ की आड़ में हो उसी तरफ़ गौर से देखने लगा। अब आवाज कुछ करीब आती हुई सी मालूम पड़ने लगी। होते होते बातें करते हुए आने वाले आदमी उसी झोपड़ी के सामने आकर खड़े हुए। चांदनी के उजाले में अजनवी ने देखा,—ये सब तीन थे, तीनों में से दो औरतें थी, एक मर्द था। मर्द के पीठ पर एक बड़ी सी गठरी भी बँधी हुई थी। दोनों औरतों में से एक निहायत ही हसीन, कमसीन मालूम पड़ती थी,—दूसरी उसकी मुंह लगी लौंडी की तरह दिखलाई देती थी। उस कमसीन औरतको देख, इस अजनवी के मुंह से एक हलकीसी चीख निकल पड़ी और आपही आप कहने लगा—ओह! यह यहाँ इस तरह कैसे चली आई? मालूम पड़ता है,—इसने भी अब अपनी बहन की तरह शैतानी पर पाँव रखना शुरू कर दिया है। इसके बाद वह चुपचाप निगाह गड़ाए हुए उन तीनों की कार्रवाईयों को देखने लगा। झोपड़ी के सामने आकर खड़े होते ही उस कमसीन औरत ने उस मर्द की तरफ़ देखकर कहा-बस गफ़ूर ठिकाने आपहुंचे, अब तुम इस गठरी को यहीं पर रखकर चले जावो। अगर महलसरा में मेरी किसी ने खोज की तो कह देना,-शाहज़ादी साहबा बहन के यहां अपनी लौंडी गुलज़ार को लेकर चली गई हैं। अगर वालिद ने मुझे तलब करने को कहा तो उन्हे तखलिए में ले जाकर कुसुम-मलता को दस्तयाब करने के लिए खुद गई हुई हैं कह देना। मैं जहांतक जल्द हो सकेगा परसों सबेरे तक आजाऊँगी। लो, तुम्हारा ईनाम मैंने अभी बहुत ही कम दिया है। इतना

कहकर उसने अपनी लौंडी से एक अशर्फीकी थैली लेकर उस को दिया। वह अदब के साथ उसको लेकर—जैसा हजूर ने हुक्म दिया है उसी के मुताबिक किया जायगा—कह, अपने पीठपर की गठरी को उसी जगह उतार कर उसे सलाम करता हुवा चला गया। गफूर के जाते ही क़रीब ही उभड़ा हुवा एक पत्थर के ऊपर बैठकर उस हसीन नाज़नी ने कहा-अब तुम्हारी क्या राय है गुलजार!

गुलज़ार—मैं हजूर को इस वक्त कोई माकूल सलाह नहीं देसकती। चलिए, वहीं चलकर जैसा कुछ लौंडी की समझ में आवेगा अर्ज़ करूंगी।

नाज़नी—लेकिन यह तो बता, यह मेरी बातों में आजायगा?

गुलजार—क्यों नहीं आवेगा। इसको हजूर ने कैसी खतरेनाक जगह से छुड़ा मंगाया है। अगर सब कुछ जानते हुए भी यह अपनी राह में न आवेगा तो इससे बढ़कर एहसान फ़रामोश दुनिये में और कोई भी नहीं समझा जायगा।

नाज़नी—बेशक! यह तो तुम सच कह रही है। मगर हिन्दू की जात बड़ीही काइयां होती है। वह जल्दी से किसी मुसलमानिन के कब्जे में नहीं आती है।

गुलजार—इन्हे अभी हम लोग मुसलमानिन होना जाहर न करें। जब यह पूरी तरह अपने कब्जे में आजायँगे तब जैसा मुनासिब होगा वैसा किया जायगा।

नाजनी—(खुश होकर) बेशक! यह सलाह तो तू ने बहुत ही अच्छी दी। मैं इसके साथ ऐसा ही करूँगी। मगर मदनमोहनी का मुझे हमेशा ही खौफ लगा रहता है।

गुलज़ार—उसका तो मुझे इतना ख़ौफ़ नहीं मालूम होता है मगर उसका दोस्त......................

नाज़नी—(काँपकर) बस बस, उसका नाम न ले। न जाने क्यों उसका नाम सुनतेही मुझे जड़ैय्या बुख़ार आने लग जाता है। गो, मुझे उसने कभी भी तङ्ग नहीं किया है; मगर मेरी प्यारी बहन को तो उसने बरसों तक सताया है।

गुलज़ार—लेकिन वह आपके वालिद से भी बहुत ही डरता है।

नाज़नी—हमारे वालिद क्या उससे कम डरते हैं? एक दिन का जिक्र है,—वे मेरी छोटी वाल्द नूरमहल से कह रहे थे। मेरे इस आराम में कोई कांटा है तो वही है। उसी के मारे मुझे रात दिन नींद नहीं आती है। मैं रह रहकर ख्वाब में भी उसी की याद आकर चौंक उठता हूँ। अकेले में वह भी मुझसे ख़ौफ़ खाता है, मगर जब चार आदमी का सामना होता है तब मुझे अपनेही कामों से आप डरकर उससे डरना पड़ता है। इससे मालूम होता है;-वह धोकेही धोके में हमारे वालिदसे डरता रहता है, मगर हमारे वालिद सचमुच उससे बहुतही डरते रहते हैं। यह एक ऐसी बात थी जिसको सुनकर वह अजनबी बहुत ही खुश हुवा। उसके चेहरे पर से पहले जितनी उदासी झलक पड़ती थी, उसके बदले—उससे बढ़कर खुशी की झलक दिखलाई पड़ने लग गयी। वह फिर कान देकर उनकी बातें सुनने लग गया। उसकी बातें सुन गुलज़ार ने धीरे से उसे कुछ कहा जिसे सुन नाज़नी ने चौंककर कहा—ऐसी बात है? तब तो वालिद का डरना बिलकूलही वाजिब है। लेकिन उन्होने ऐसे आदमी को साथ लेकर वैसे ख़तरे का काम क्यों किया?

गुलज़ार—यही तो मुझे भी ताज्जुब होता है। ख़ैर अब चलिए-वहीं चलकर बातें की जायगी। लेकिन यह तो बतलाइए? कनकलता को आप वालिद के हवाले न कीजिएगा?

नाज़नी—जब तक मैं कुमार अजयसिंह को अपने मुआफिक में ला उनसे शादी कर लेने की पक्की मञ्जूरी हासिल न करलूंगी तब तक उसे उनके सामने पेश न करूंगी।

गुलज़ार—ओह! हुजूर उसके बदले में इनसे शादी करने की ईजाज़त चाहती हैं। मगर इन्हे और कनकलताको एकही मकान में रखना वाजिब नहीं होगा।

नाज़नी—इसकी तू कोई फ़िक्र न कर। मैं बरसों उस मकान में—सैकड़ों को एक से अलग रख सकती हूँ। उसकी तिलस्मी ताली जब मेरे पास मौजूद है तो मैं इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं करती।

गुलज़ार—अगर आपके वालिद उस मकान में जावें तब?

नाज़नी—वे बिना इस ताली के उसके अन्दर जाही नहीं सकते। बनाने वालेने उसको इसी तर्ज से बना रक्खा है। हां एक सख्स उसके अन्दर बिना ताली के भी जा आ सकता है?

गुलज़ार—ओह! महामाया बहूरानी?

नाजनी—हां, मेरी लड़कपनकी सहेली बहूरानी।

गुलज़ार-उसको भी तो उसीने उस दरजे तक पहुँचाया है।

नाजनी—इन्ही सब राजों से तो हमारे वालिद और वह आपस में खौफ खाते रहते हैं। अच्छा; अब इस गठरी को उठा;—मैं सुरङ्ग का दरवाजा खोलती हूँ। इतना कहकर वह झोपड़ी के अन्दर चली गई। गुलजार ने बड़ी मुश्किल से

गठरी को उठाकर अपनी पीठ पर लादा। वह नाजनी फिर झोपड़ी के बाहर चली आई। उसने आतेही गठरी पर सहारा दे उसे हलका कर दिया। इस समय उस जगह घने पेड़ की छाया से कुछ अँधेरा पड़ रहा था। वे दोनो इसी तरह गठरी को थामे हुए झोपड़ी के अन्दर चले आए। वहां एक खुला दरवाजा मिला। दोनो अँधेरेही में उसके अन्दर घुसे। जमीन बरोबर की थी; दोनों तेजी के साथ बिना रुकावट के ही आगे की तरफ बढ़े। अँधेरे की वजह से यह नहीं मालूम होता था कि सुरङ्ग है या क्या है मगर अनुमान से यह एक लम्बी चौड़ी सुरङ्ग ही मालूम होती थी। घण्टे भरतक इसी तरह चलने के बाद ये दोनो एक बन्द दरवाजे के पास पहुँचे। वहां पहुँचतेही उस नाजनी ने कहा—देख गुलजार! हमलोग कितनी जल्दी इस रास्ते से उस मकान के नीचे पहुँच गए। अगर हजारीबागवाली पक्की सड़कसे आते तो कमसे कम डेढ़ दिन तो लगे बिना न रहता। परसों भी मैं कनकलता को रखने के लिए इसी रास्ते से आकर दो घण्टे के अन्दर महलसरा में दाख़िल हो गयी थी। अब मैं दरवाजे को खोलती हूँ, जरा तू पीछे हट।

गुलजार—लेकिन हुजूर ने उस झोपड़ी वाले दरवाजे को तो बन्द नहीं किया।

नाजनी—उसको बन्द करने की जरूरत नहीं पड़ती, न किसी के बन्द करने से बन्दही होता है। उसके अन्दर आकर चालीस पचास कदम चलने के बाद वह आपसे आप बन्द हो जाता है। यह दरवाजा जिसको मैं अभी खोलूंगी—यह भी किसी के बन्द करने से बन्द नहीं होता है। खोलने वाला ऊपर की मञ्जील के आखिरी दर्जे की सीढी पर पहुँचतेही

आपसे आप बन्द हो जाता है। न जाने बनाने वाले ने इसको ऐसा क्या सोच कर बनाया है। अबकी बहुरानी से मुलाकात होगी तो इसके बारे में जरूरही पूछूँगी।

गुलजार—क्या स्वामी जी इसके निस्बत कुछ नहीं बता सकते?

नाज़नी—नहीं, मैंने उन्हे एक मर्तब इसी मकान में पूछा था। मगर वे इससे अपने को बिलकूल ही अज्ञान साबित करते हैं। अच्छा, अब आ। इतना कहते ही एक हलकी आवाज़ के साथ किसी दरवाजे के खुलने की आवाज़ आई। साथही उस नाज़नीने गुलज़ारका हाथ थामकर आगेकी तरफ़ पैर बढ़ाया। कुछ दूर चलने के बाद एक सीढी मिली। दोनो उसी रास्ते से होते हुए ऊपर चले आए। वहां भी एक छोटा सा बन्द दरवाजा मिला। उसे खोल कर ये दोनो एक छोटी सी कोठरी के भीतर चले आए। वहाँ एक बुड्ढा मुसलमान बैठा, पासही दीपट में एक टिमटिमाता हुवा मामूली दीया रख धीरे धीरे कुरानशरीफ़ पढ़ रहा था। दरवाजा खुलते ही चौंककर उसने इन दोनो की तरफ देखा, साथही इस नाज़नी को पहचान जल्दी से उठ अदब के साथ जमीन चूमकर सलाम करने के बाद कहा—मआजअल्लाह? इस तरह इस वक्त सरकार ने यहां तक आनेकी तकलीफ को क्योंकर गवारा किया? इसके जवाब में नाजनी ने मुस्कुरा कर कहा—मैं एक जरूरी काम से आई हूँ, तू मजे में बैठकर कुरानशरीफ़ को पढ़। इतना कह उसने उसके हाथ में कुछ दिया, जिसको लेकर उसने अदब के साथ उसे सलाम किया। इसके बाद गुलजार को लेकर वह नाजनी सामने का दरवाजा खोलती हुई अन्दर चली गई। उसके भीतर एक मामूली ढङ्ग से सजा

हुवा बहुत बड़ा कमरा था, परन्तु रोशनी भरपूर हो रही थी। वहां दो तातारी बाँदी हाथ में नङ्गी तलवार लिए आमने सामने की कुर्सी पर बैठे हुए थे। इन दोनो के अन्दर आतेही उन दोनो ने उठ अदब के साथ सलाम किया। यह नाजनी वहां एक मिनटके लिए भी रुकी नहीं, न उन दोनोसे कुछ बात चीत ही किया। कुछ दूर आगे बढ़—दीवार के पास जा एक खटके को दबा,—बगलही के दरवाजे को खोल,—सामने बनी हुई सीढी पर से होती हुई ऊपर चली आई। वहां लम्बा चौड़ा सूफियाने ढंग से सजा हुआ एक बहुत ही बड़ा कमरा था उसके दरवाजेपर भी दो मजबूत बाँदी पहरे पर मुस्तैद हो खड़ी थी। इस नाजनी ने दरवाजे पर लगा हुवा परदा हटाकर किसी तरकीब से खोला। भीतर की जगमगाहट से आंखें चौंधिया गई। उस नाजनी के साथही गुलजार भी गठरी लिए हुए अन्दर चली आई। झाड़, फानूस, कन्दीलों में बिजुली की रोशनी होरही थी। तरह तरहके सामानों से कमरा। देखतेही बनता था। नाजनी ने वहां पहुँचतेही अपने को एक मखमली गद्दे के ऊपर डालकर गुलजार से कहा—तू इन्हे खोलकर होश में तो ला? गुलजार ने गठरी खोलकर उसमें से एक सुन्दर नौजवान पुरुष को निकाला, और एक तरह का अर्क हाथ में ले उसे होश में लाने की कोशिश करने लगी। पांच सात मिनटके बाद उस नौजवान ने आंखें खोल ताज्जुब के साथ इधर उधर देखा। उसको होश में आते देख इस नाजनी के चेहरे पर खुशी झलकने लगी। गुलजार ने बेदमुश्क का अर्क उसके शिर पर छिटक दिया। पूरी तरह होश आने के बाद उस नौजवान ने गुलजार की तरफ देख-कर कहा—मैं इस समय किस भाग्यवान् सुन्दरी के सामने हूँ?

गुलजार—आप ओरिसा के प्रतापी महाराज की राज-कुमारी के सामने हैं। आपही ने आप को एक दुश्मन के हाथ से छुड़ाया भी है।

नौजवान—(धन्य बाद की नजर से नाजनी की तरफ देखकर) मेरे लिए आपको बहुत ही कष्ट उठाना पड़ा होगा। मैं इस उपकार का बदला किसी तरह से देही नहीं सकता ?

नाजनी-(मुस्कुराकर) मैं उसका बदला चाहती भी नहीं। परन्तु आप क्यों वहां बैठे हुए हैं, आइए, यहां चले आइए ?

नौजवान-(उसकी सौन्दर्यता पर मुग्ध होकर) मुझे यहीं रहने दीजिए, मैं आप के पास इस अवस्था से किसी तरह नहीं रह सकता।

नाजनी-(उसे मुहब्बत से पकड़ अपने पास बिठाकर) वाह ! वाह ! यह तो आपने खूब कहा? मैं तो गद्दे के ऊपर बैठूँ और दीनाजपुर के लोकमान्य राजकुमार मुझसे नीचे कालीन ही पर बैठें ? क्या कहूँ मैं इसके आगे और भी कुछ कह बैठती परन्तु इस समय आप की तबीयत दुरुस्त नहीं है। आप को बदमाशों ने कड़ी बेहोशी देकर बिलकूल बदह-वास कर रक्खा है। (गुलजार की तरफ देख कर) जातो चमेली ! गुलाब जल छोड़ कर एक ग्लास नीबू की शर्बत तो लेआ ? गुलजार शर्बत लेने आलामारी की तरफ बढी। नाजनी ने बड़ी मुब्बहत से कुमार का हाथ पकड़ कर कहा—आज मेरे बड़े भाग से आप का चरण इस झोपड़े पर आया।

कुमार—ऐसा आप न कहो। मेरेही अच्छे नक्षत्र थे जिस-से मैं दुश्मनों के हाथों से बचता हुवा एक अलौकिक सौन्द-र्यता की देवी के पास आ पहुँचा। मेरा चित्त इस समय

बहुत ही प्रसन्न है। मैं आप की इस उदारताको इस जीवन में कभी भी नहीं भूल सकता, परन्तु यह तो बताइए; मैं इस समय ओरिसे की राजधानी सँम्भलपुर में हूँ?

नाजनी—(उनके हाथ को दबाकर) आप पहिले मुझे आप आप कहना तो छोड़ दीजिए, तब मैं आप को सब बातें बताऊँगी।

कुमार—(हँसकर) आप भी मुझे आप आप कहना छोड़ दीजिए तो मैं भी आप को आप आप कहना छोड़ दूँगा।

नाजनी—नहीं,-मैं आपको कैसे आप न कहकर दूसरा शब्द व्यवहार में ला सकती हूँ।

कुमार—तो मैं भी कैसे आपको छोड़ सकता हूँ।

नाजनी—यही तो मर्दों की जीद बुरी होती है।

कुमार—और औरतों की जीद तो कुछ भी नहीं होती है। दोनो तरफ ऐसी ही जीद सवार है तो—चलिये आपही आप में हमलोग अपना हाल एक दूसरे पर सुना कर सब बातों को समझ लें। इससे जवाब में वह नाजनी कुछ कहाही चाहती थी, गुलजार ने दो खुशबूदार शर्वत का ग्लास लाकर इन दोनों के सामने रख दिया। नाजनी ने बड़े नखरे के साथ एक ग्लास उठाकर कुमार की तरफ बढाती हुई कहा—लीजिए; इसके पीने से तबीअत की बदहवासी बिलकूल दूर हो जाती है। कुमार उसको बड़े प्रेम से लेकर कुछ खींचाखींची के बाद पियाही चाहते थे इतने में दरवाजे का परदा हटा, तेजी के साथ उसी अजनबी ने आ;—कुमार की तरफ देख कर कहा—खबरदार कुमार! इस शर्वत को हर्गिज़ न पीना; यह हरामजादी मुसलमान की बच्ची हिन्दू बन कर आपके ईमान धर्म पर धोके से आघात पहुँचाया चाहती है। (नाजनी की

तरफ देखकर) क्योंरे कमबख्त; दोज़खी कुतिया; हुस्नबानू ! तुझे ऐसा करने का आजही इतना बड़ा साहस होगया ? बस; जहां की तहां चुपचाप बैठी रह; अगर जरा भी हिलने का नाम लिया तो इसी तमञ्चे से तेरे शर की धज्जियाँ उड़ा दूँगा । क्या तैंने मुझे नहीं पहचाना; जरूर पहचाना है । मैं तेरे नालायक बाप तक को कँपाने वाला अद्भुतनाथ हूँ । अब सीधी तरह मकान की ताली मेरे हवाले कर । मैं तुझे और किसी तरह की तकलीफ को न पहुँचाऊँगा । उसकी ऐसी डपट को सुन साथही उसे पहिचान कर उन दोनो हराम-जादियों के मुंह से बेतहासा चीख निकल पड़ी । यह देख वह कुछ आगे बढ़ा । कुमार ने शर्बत का ग्लास फेंक दिया । वे दोनो औरतें डरके मारे बदहवास सी हो जहां की तहां गिर पड़ी । अद्भुतनाथ ने हुस्नबानू की तलाशी लेकर उस मकान की ताली निकाल ली ।

नौवाँ बयान।

"आगई अबतो मुसीबत, हाथ में खन्जर उठा।
लो, सँभल जावो, हजारों का यहाँ है शिर टूटा"॥

इस समय चार घड़ी दिन बाकी रह गया है। जोर जोर से चलने वाली हवा थम गई है। धूप में पहले की तरह तेजी नहीं है। ऐसे समय सम्भलपुर के पास ही एक पक्की सड़क के किनारे अपने एक चेले के साथ स्वामी अच्युतानन्द को घोड़े पर सवार किसी के इन्तजार में रुके हुए देख रहे हैं। इस तरह इनको खड़े खड़े आध घण्टा और बीत गया,—तबभी कोई किसी तरफ़ से न आया। यह देख उन्होने चेलेराम की ओर देख कर कहा—क्या उसने मुझे धोका तो नहीं दिया?

चेला-ऐसा तो मुझे उसकी तरफ से बिस्वास नहीं होता।

स्वामी—यह न कहो दयाराम! जमाना बहुत ही टेढा आगया है। किसी के ऊपर किसी का विश्वास नहीं है। सब अपने मतलब की तरफ झुके हुए रहते हैं। कोई भी भलाई को नहीं मानता। बुराई पर सभी कमर कसे रहते हैं। तुमने अपनी आंखों से देखा है, मैंने कितनों की भलाई की है,—परन्तु तुम्ही बताओ,—उनमें से कितने ने मेरे एहसान का बदला चुकाया। बाजे २ तो मेराही गला काटने के लिए उतारू हो निकले हैं। दूर क्यों जाते हो; अद्भुतनाथ की ही बात लो, उसके साथ मैंने कम एहसान किया था, वही अब मेरे खून का प्यासा हो निकला है।

दया—जी हां, यह सब सही है परन्तु तब भी मुझे उस की तरफ से ऐसी आशा नहीं होती। वह आपके लिए जान तक देने वाली औरतों में से है।

स्वामी—सब कुछ ठीक है किन्तु लालच एक बहुत ही बुरी बला होती है। वह किसी के साथ अनर्थ कर देने में ज़रा भी नहीं हिचकिचाती है। देखो,—हमलोगों को यहाँ खड़े खड़े दो घण्टे बीत गए परन्तु अभी तक उसके आने की सूरत नहीं दिखलाई पड़ती है। उनके मुंह से यह बातें मुश्किल से निकली भी न होगी बाईं तरफ से एक पचीस छबीस बरस की औरत झपटती हुई इनके पास आई और बड़ी घबड़ाहट के साथ हाँफते हाँफते कहने लगी—मैंने जो कुछ आपको खबर दी थी बिलकूल सही थी, परन्तु यहांसे दो कोस की दूरीपर आते आते महारानी के ऐयारों ने उन सबोंको घेर डाँट डपट बतलाकर सावित्री को उड़ा भगाया। बिचारे वे सब रोते झँखते हुए मेरे पास आए; इसीलिए मुझे आने में देर होगई। अब बताइए क्या किया जाय? हम लोगों की मेहनत तो बिलकूलही बर्बाद हुई।

स्वामी—(एक लम्बी सांस लेकर) अफ़सोस! ग्रहदशा का फेर इसी को कहते हैं। मैंने तो पहलेही यह सब बातें सोच तुम्हे उसे,—वहीं से घुमा देने को कहा था परन्तु तुमने नमक का ख्याल करके ऐसा करना मञ्जूर नहीं किया। वही बात इस समय मेरी आशा को निर्मूल कर देने की हथियार बनके आई।

औरत—अब बस एकही उपाय बांकी रह गया है।

स्वामी—वह क्या? परन्तु नहीं, मैं समझ गया। उसको जहाँ कैद-होगी-वहां से उड़ा ले जाने में मेरी बड़ी बदनामी

होगी। महारानी बड़ी चालाक है, उसके समझने में कोई बात बाँकी नहीं रह जायगी। खैर-तू दयाराम को लेकर अपने ठिकाने चली जा,-मैं एक मर्तबः फिर बहाना करके महारानी के पास जाता हूँ। देखें वह मेरे साथ किस तरह की बातें करती है। इतना कह कर स्वामीजी ने घोड़े को फेर शहर की तरफ़ का रास्ता लिया। लगातार घण्टे भर तक सरपट घोड़ा फेंके हुए चलनेके बाद सम्भलपुर के राज-महल के फाटक पर पहुंचे। उस समय महारानी अपनी बहन के साथ चौघोड़े गाड़ी पर सवार हो हवा खाने के लिए निकल रही थी। चार रिसाले आगे आगे जा रहे थे। गाड़ी के पीछे,-कई एक हथियार बन्द औरतें घोड़े पर सवार आ रही थीं। उनके पीछे दर्जनों रिसाला आ रहे थे। गाड़ी के पिछवाड़े दो खूबसूरत लौंडी, हाथ में मोरछल और पंखा लिए झल रही थीं। दोनों बहन के सामने अच्छे रुतबे के दो खूबसूरत औरतें बैठी हुई थीं। कोचबक्स पर हाथ में बन्दूक लिएहुए दो ख्वाजे बैठे हुए थे। महारानी की उमर बीस इक्कीस बरस की मालूम पड़ती थी। उसके सर में ताज़ था। उसका खूबसूरत चेहरा देखते ही बनता था। उसकी बहन उससे कुछ कम उमर और बहुत ही खूबसूरत दिखलाई देती थी। स्वामीजी को इस तरह आते देख महारानी ने गाड़ी रुकवा, कुछ आश्चर्य के साथ उनकी तरफ़ देख मुस्कुरा कर कहा-आपको मैंने तभी कुछ दिन और रहने के लिए मिन्नत किया था, परन्तु आपने उस समय मेरी उस बात पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया,—देखिए-उसीके फल स्वरूप आपको इस तरह चार घण्टे के भीतर ही यहां लौट

आना पड़ा । कहिए, क्या बात है, ? क्यों आपका चेहरा इस समय सुस्त दिखलाई पड़ रहा है ?

स्वामी—मुझे एक बहुत ही आवश्यक कार्य ने दुबारा आपके पास तक लाने के लिए मजबूर किया । नहीं तो अब तक मैं बीसों कोस की सफ़र तै कर चुका होता ।

महा—वह कौन सा ऐसा आवश्यक कार्य आ पड़ा जिस से आपको इस तरह उदास बनाने के साथही साथ यहां तक ताबड़तोड़ भगा लाने का कष्ट पहुँचाया ।

स्वामी—मैं उसको इस समय इतने आदमियों के सामने नहीं कह सकता ।

महा-(हँसकर) मैं समझ गई,-अच्छा तो आइए,—कुछ देर आप भी मेरे साथ हवा खाकर तबीयत को दुरस्त कर लीजिए, फिर महल के अन्दर जाकर उसके विषय में बात चीत कर लेंगे । यह सुन-स्वामी जी भीतर ही भीतर जल उठे,—मगर उस समय इससे ज्यादा कुछ कहना उचित न समझ, मन मार कर साथ ही साथ चलने के लिए तैय्यार हुए । घण्टे भर तक शहर के अन्दर इधर उधर घूम फिर कर महारानी की सवारी महल के अन्दर पहुँची । इस समय चारो तरफ़ रोशनी हो रही थी । एक बहुत बड़े कमरे में अपनी बहन के साथ स्वामीजी को लेकर महारानी आईं । उनके वहां आते ही बीस पचीस लौंडियां हाथ में मोरछल, पंखा, मेवे की तश्तरी, पान की डिबिया, इत्रदान ले लेकर कायदे के साथ खड़ी हो गई । कमरे में बेशुमार बिजुली की रोशनी हो रही थी, पंखा चल रहा था । महारानी ने स्वामी जी को एक बहुत ही उम्दः कोच पर बैठाया । इसके बाद आप दोनों बहन भी उन्ही के सामने एक एक गद्दे दार

कुर्सी पर बैठ गईं। लौडियों ने तीनों को पान, लाइची लाकर दिया। उसके लेने के बाद महारानी ने स्वामीजी की तरफ़ देख कर कहा—हां, अब बतलाइए,—वह ज़रूरी काम कौन सा है?

स्वामी-(इधर उधर देख कर) क्या आपके ऐयारों ने भूपालसिंह की लड़की सावित्री को यहां ले आए हैं?

महा—(ताजुबका सा मुँह बनाकर) नहीं तो,—यह आपसे किसने कहा?

स्वामी—आप मुझ से क्यों बनती हैं। मुझे खबर देने वाले ने बहुत ही बिस्वास दिलाकर मुझसे कहा है।

महा—होगा, परन्तु अभी तक तो वह यहां नहीं आ पहुँची है। भला आप ही बताइए, मुझे उसके बारे में आपसे झूठ बोलने की क्या आवश्यकता थी?

स्वामी-थी तो कुछ भी नहीं परन्तु......

महा—परन्तु क्या,-मैंने कभी आप से ऐसा किया है। आप इतने बड़े समझदार होकर भी कभी कभी भूल कर बैठते हैं। मेरी बहन बहुमहारानी आपको कितना मानती है,—मैं भी आपको कितना चाहती हूँ। भला ऐसी हालत में आपको इस ज़रा सी बात के लिए मैं परेशान करती। हां, हमारे ऐयारों ने उसको कहीं से धर उठा लाया होगा। किन्तु मेरे पास अभी तक पहुँचाया नहीं है। परन्तु आप यह तो बताइए?—उस छोकड़ी की आपको ऐसी क्या आवश्यकता आ पड़ी जिस से आप इस तरह परेशान हो रहे हैं।

स्वामी-मैं उसको उसके बाप तक पहुंचा कर कुछ मतलब निकाला चाहता हूँ।

महा—(हंसकर) या उसकी खूबसूरती में पागल होकर

उसको अपनी चेली बनाना चाहते हैं। क्यों, मैं कैसे तह तक पहुंची? अच्छी बात है, हमारे ऐयार अगर उसको यहाँ तक ले आवेंगे तो मैं उसको आप ही के हवाले कर दूँगी।

स्वामी—यह तो आपकी मेहर्बानी है। मगर मेरा उसके ऊपर कोई बुरा इरादा नहीं है। मैं उसको सचमुच उसके बापके पास ले जाकर एक बहुत बड़ी रक़म वसूल करूंगा।

महा—अगर रक़म ही वसूल करना हो तो उसको उसके बापके पास ले जाने के बदले कुमार रणधीरसिंह के पास क्यों नहीं ले जाते? उन से तो आपको बहुत बड़ी रक़म वसूल होने की उम्मीद है? (बहन की तरफ़ देखकर) क्यों कुमुद! मैंने क्या कुछ बेजा कहा है?

कुमदिनी—(हंसकर) जी, बेजा तो नहीं कहा है, परन्तु स्वामी जी को किस बात की कमी है जो एक ज़रा सी रक़म पाने के लिए उसे अपने हाथ से जाने देते। यह बातें सुन तीनों आदमी हंसने लगे। महारानी ने कहा—मैं आपकी खातिर जरूर उसको दूँगी,—परन्तु आपको भी मेरा एक काम कर देना होगा?

स्वामी—क्या इसके बदले आप रणधीरसिंह को चाहती हैं।

महा—नहीं रणधीरसिंह को तो बहुमहारानी ही चाहती है। मगर मैं उनके भाई महेन्द्रसिंह को चाहती हूँ। आप यदि उन्हें मेरे पास किसी तरह ला दीजिए तो, उसको तोहफे के तौर पर आपकी नज़र करूँगी?

स्वामी—(सोचकर) यह तो मैंने पहले ही से समझ रक्खा था। परन्तु आप दोनों बहन अपने ही तिलस्म नाशकों क्यों चाहती हैं?

महा—इसमें बहुत बड़ा मतलब है । आपकी अक्ल तो आपकी चेलियों ने बिगाड़ रक्खी है,—नहीं तो उसी तिलस्म का दारोग़ा होकर आप ऐसा कभी न कहते ?

स्वामी—(हंसकर) तो आपही बतलाइए, मेरी अक्ल दुरुस्त होती तो मैं क्या कहता ?

महा—आप कहते,—दोनों तिलस्मनाशकों को अपने कब्जे में कर लो जिससे हीरे का तिलस्म दोनों तरफ के खतरे से दूर हो जाय । तुम लोग भी अकेले न रह,-एक एक खूबसूरत नौजवानों से अपने दिलको आराम पहुँचाते रहो।

स्वामी—वाह ? क्या ही अच्छी बात है । उस अवस्था में हम लोग क्या करते, मुँह देखकर ही रह जाते ?

मना—(हंसकर) आपकी भी कभी लुक्का चोरी से खातिर कर दी जाती । अच्छा, अब इस दिल्लगी को किनारे रख मतलब की बातें कीजिए। सावित्री अभी तक आ पहुँची नहीं है, उसके आजाने पर बहु महारानी के हुक्म मुताबिक तिलस्म के भीतर ही भीतर उसको कटक भेजदूँगी ? फिर आप उन्ही से जाकर जो कुछ कहना हो कहकर लेलीजिएगा।

स्वामी-मै उसके बारे में बहु महारानी से कुछ भी नहीं कह सकता।

महा—मैं आपकी तरफ से सिफारिश करके भेजूँगी।

स्वामी—अगर सिफारिस ही भेजवाना होता तो मैं खुद ही मिलकर क्यों न कहता।

कुमुदनी-इसलिये कि—आपने तिलस्म का दारोगा होकर वहां का आना जाना एक दमही बन्द कर दिया है।

स्वामी—मैं क्या करूँ,-महाराज मुझसे एक जरा सी

बात में सख्त नाराज हुए हैं । इसी लिए मैंने अब अपनी कुटी ही में रहकर जिन्दगी बिताना सोच रक्खा है ।

महा—या मधुपुर की महारानी अम्बालिका ने अपनी मुहब्बत के फन्दे में जकड़ रक्खा है । या पालकपोट की राजकुमारी भुवनेश्वरी ने भुवनमोहन रूपको दिखाकर पागल बना रक्खा है । या हजारीबाग का नव्वाब नसीरुद्दीन की ऐयाश लड़कीयों ने अपने चंगुल में कर रक्खा है ?

स्वामी—(झेंप कर) यह तो आप मेरे ऊपर नाहक का दोष ओढ़ा रही हैं ।

महा—ठीक है, मैं भी दुधमुंही बच्ची नहीं हूँ । मैं भी सबकुछ समझती हूँ । मुझे रत्ती रत्ती हाल मालूम हो जाया करता है । परन्तु हम दोनों बहन क्यों तरह देती हैं—आपने एक बार हम लोगों का साथ देकर इस दर्जे तक पहुंचाने में जरासी सहायता पहुँचाई थी, उसके बदले हम लोगों ने भी आपको किस दर्जे तक पहुँचाकर कितनी दौलत दी ! सब छोड़कर अपनी मुहब्बत से भी आपको खुश करती रहीं । उसके बदले आप ने क्या किया,—नहीं, मैं उसको नहीं कहना चाहती । मगर यहभी आप समझ रखिए—खैर सावित्री मेरे पास आगई है परन्तु उसे मैं किसी तरह भी आपको नहीं दे सकती । अगर लेना होतो,—ठहरिए,—बहुमहारानी उसको अपने साथही ले आती है । उन्हीं से कह सुनकर उसे लीजिएगा ?

स्वामी—(घबड़ा कर) क्या बहु महारानी यहाँ आने वाली हैं ?

महा—अब क्या बहु महारानी इतनी भारी होगई, जिसका नाम सुनतेही आप इस तरह घबड़ाने लग गए ?

स्वामी-नहीं, ऐसा तो नहीं है मगर.................

कुमुदनी—(हंसकर) आज स्वामी जी के चोर को कैसा पकड़ कर कायल किया। ये अब हम लोगों के सामने जबान तक हिला न सकेंगे।

महा—(कहकहा लगाकर) जैसा करते हैं वैसा फल भी पाते हैं। खैर आप ने कभी सावित्री को देखा न होगा,—मैं उसको यहीं बुलाकर दिखा देती हूँ, देखिए ? इतना कहकर उसने एक लौंडी की तरफ इशारा करके उसे लाने को कहा। वह लौंड़ी तुरन्त चली गई। इसके बाद फिर स्वामीजी की तरफ देखकर उसने कहा—बहु महारानी के आने की बातें तो थी मगर अभी आई नहीं है, आप उन से लाख डरें परन्तु वह आपको उसी नज़र से देखती हैं,—जिस नज़र से वह देखती हुई आती थी। मैं तो—आप जानतेही हैं,-किस कदर प्यार करती हूँ। मुझे आप से किसी बात का भी रञ्ज नहीं है। हां, कभी कभी, अपनाही समझ जो कुछ दिल्लगी करती हूँ, इसके लिए आप को उदास होना नहीं चाहिए। इसके जवाब में स्वामीजी कुछ कहाही चाहते थे, इतने में कुमारी सावित्री को लेकर वही लौंडी आ पहुँची। इस समय सावित्री एक बैगनी रङ्ग की साड़ी पहिने हुए थी, उसका अलौकिक मुखड़ा खुला हुवा था। उसने कमरे के अन्दर पैर रखतेही स्वामीजीको देख अपने शरको झुका लिया। उसे ऐसा करते देख महारानी ने स्वयं उठ,—उसे मुहब्बत से अपनी बग़ल में बैठाया। स्वामीजी की टकटकी बँध गई। उन्होंने आज तक ऐसी अनिर्बचनीय सुन्दरी को कभी देखाही नहीं था। वे मनही मन उसको पद्मिनी नारी समझ मुग्ध हो उसकी तरफ़ घूरने लगे। यह देख महारानी ने मुस्कुरा, सावित्री की तरफ़

देखकर कहा—देख, बहन ! यह हमारे परम हितैषी स्वामीजी हैं। इनसे लज्जा करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। ये संसार से बिलकुलही विरक्त हैं। इन्हे किसी बात की परवाह नहीं रहती है। ये महात्मा हैं, सिवाय अद्वैत ब्रह्म साधन के ये दूसरा काम ही नहीं करते। इनकी मुझपर बड़ी ही दया रहती है, इसलिए इस समय मुझसे भेंट करने के लिए आए हुए थे,—बातों बातोंमें तेरा ज़िक्र निकल आया तो इन्होंने कहा,—मेरे सामने बुलादो,—मैं उसकी चिन्ता को दूर कर दूँगा। इसी-लिए तुम्हे फिर यहां तक बुला भेजा था। अब तू इनसे अपने मन की बातें ज़ाहिर कर ?

सावित्री—(शर्माकर) मैं क्या कहूँ,—महा मा को कहने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती है।

महा—यह सब कुछ ठीक है; परन्तु मुंह से भी तो कुछ कह ?

स्वामी—कहने की कोई ज़रूरत नहीं,—मैं समझ गया। आज के बारहवें रोज मैं मुंगेर के राजकुमार रणधीरसिंह को इसके साथ मिला दूँगा। मगर तब तक इसको एक कड़ी परीक्षा पर उतरना पड़ेगा। उनकी ऐसी बातें सुन सावित्री बहुत ही प्रसन्न हो कुछ कहा ही चाहती थी, इतने में एका-एक बड़े ज़ोर से सामने की दीवार फट पड़ी और उसमें से एक बिजुली की तरह चमचमाता हुवा ख़ञ्जर लेकर कादम्बिनी को इन्ही के चंगुल से छुड़ानेवाली वही सांवली, कमसीन औरत ने निकल, स्वामीजी की तरफ़ देख कड़क कर कहा—बेशक बेशक ! तुम क्यों न मिला दोगे। तुम्हारे ऐसा सच्चा शक्तिशाली पुरुष भी इस भारतवर्ष में और कोई न होगा। मगर याद रखना अच्युतानन्द ! नहीं नहीं;—अच्यु-

तानन्द मैं तुम्हे क्यों कहूँ, तुमने तो इस नाम के साथही साथ इस भेष को भी बदनाम कर रक्खा है। तुम तो वही अपने मेहर्बान दारोगा को मारने वाले. उसी के दग़ाबाज़ नमकहराम ख़िदमदगार बंशीधर—नहीं नहीं यह भी नहीं, बंशिया हो। तुमने धोकेधड़ी से—बेईमानी से इस रुतबे को हाथ में लेकर—सैकड़ों बहुबेटियों को बरबाद कर डाला। सैकड़ों बिचारी सतीयों का सतीत्व रत्न को नष्ट कर दिया। अम्बालिका को ऐयाश बनाया—माधुरी को घर से बाहर करवाया, कादम्बिनी को क़ैदकर उसको बिगाड़ना चाहा। भुवनेश्वरी को वेश्याओं से भी बदतर बना के छोड़ा। कनकलता के इश्क़ में पागल होकर उसको झांसा पट्टी दे निकाल लाया। उसकी छोटी भौजाई मन्दाकिनी को बेपता किया। किरणशशी के ऊपर भी हाथ फेरना चाहा। कुसुमलता को भी मँगाने का विचार कर अपने चेलों को मुंगेर भेजा। अब उससे दिलकी मुराद न पहुँच कर साबित्री के ऊपर भी क्रूर नज़र गड़ा के फंसाना चाहते हो। यह हर्गिज नहीं हो सकता है। यह तो किसी जन्म का पुण्य था जिससे इन महारानी की मेहर्बानी ने इसका दर्शन तुम्हे कराया। नहीं तो सात जन्म तपस्या कर महात्मा होने पर भी तुम इसके पैर की धूली तक को नहीं देख सकते थे। तुम घबड़ाओ मत, मेरे साथ अद्भुतनाथ भी आया हुवा है। मैं आज इनलोगों के सामने तुम्हे लातों से अच्छी तरह पूजा करके जाऊंगी। उसके इतना कहतेही कमरे की तमाम रोशनी एकाएक बुत गई। इसके बाद किसीको ज़ोर ज़ोरसे चपत लगाने की आवाज़ सुनाई पड़ने लगी।

दसवाँ बयान।
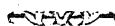
एक आफ़त से बचेगो, दूसरी होती खड़ी।
एक के आगे हज़ारों, आफ़तें रहती पड़ी॥

चाँदनी रात अपने आप से बाहर हो खिलखिला रही थी। उसकी मनोहर छटा इकट्ठी हो-होकर सिंहपुर के महाराज सुदर्शनसिंहकी आलीशान इमारत में अपनी शोभाके साथ-ही साथ उसकी शोभा को भी दूनी बनाती हुई बल खा रही थी। यह इमारत छीना नदी के ठीक किनारे पर बनी हुई थी। इसकी सङ्गमरमर से गच्च की हुई दालान चांदनी के उजाले में चाँदी की तरह चमक रही थी। बढ़ी नदी गम्भीर गर्ज्जन करती हुई—बार बार दालान की तरफ़ लहरें फेंक रही थी। सङ्गमरमरकी छोटी छोटी सी अटारियों के बीच बीच में नीचे उतरने के लिए सीढियां बनी हुई थी। परन्तु एक आध सीढी को छोड़कर इस समय इन सबों का सिलसिला गहरे जल के भीतर चला गया था। नदी में उठते हुए शब्दों के सिवाय,-चारो तरफ़ गहरा सन्नाटा छाया हुवा था। रात आधी के ऊपर जा चुकी थी,-ऐसे समय धीरे धीरे पैर दबाते हुए दो सुफेद शक़ल ने वहां आकर महलकी तरफ़ निगाह दौड़ाकर देखा। उन्हे जब सब तरह से निश्चिन्तता हो गई तब एक दूसरे की ओर दृष्टि डाल मनही मन कुछ

सोचने लगे। दोनो सुफेद—चमकीली चादर से अपने बदन को शिर से पैर तक छिपाए हुए थे। एक के हाथमें एक छोटा सा खञ्जर था, एक के पीठ पर एक बहुत बड़ी गठरी थी। चारो तरफ़ देखने के बाद अपने मन को तसल्ली देने पर भी वे रहरह कर चौकन्ने हो इधर उधर देखते जाते थे। गठरी वाली सुफेद शक़्ल ने कुछ देर के बाद एक अटारी के पास जा उस गठरीको रख दी। दूसरी शक़्ल भी उसी तरह हाथ में खञ्जर लिए हुए उसके नज़दीक़ पहुँच कर खड़ी हो गई। एक बार फिर दोनो ने निगाह उठाकर महल की तरफ़ देखा। इसके बाद बहुत कुछ निश्चिन्त हो उन दोनो ने अपने अपने चेहरे पर से चादर हटाकर इशारेसे कुछ बातें की। अब दोनो की सूरत साफ़ साफ़ दिखलाई पड़ने लगी। दोनो नवयुवक थे,—खञ्जर वाले का चेहरा सुन्दर था,—दूसरा बदसूरत तो नहीं था परन्तु विशेष खूबसूरत भी नहीं था। सुन्दर चेहरे वाला कुछ लाम्बे क़दका था,—दूसरे का क़द कुछ नाटा सा था। इशारा करने के बाद एक मर्तबः फिर ऊपर महल की तरफ़ देखकर खञ्जर वाले नवयुवक ने अपने साथी से कहा—बस, रामू! अब तुम इस गठरी को ले जाकर इस वेगवती छीना नदी के बीच धारे में प्रलय तक दबे रहने के निमित्त छोड़ दो? देखो,—वह छोटी सी नाव तुम्हारे ही आसरे खूँटी के साथ बंधी हुई पड़ी है। उसको पहले खोलकर इस गठरी को उसमें चढ़ावो? इसके बाद—तुम मज़बूत हो,—बढ़ी हुई नदी का वेग तुम्हे बीच धारे में पहुँचाने से रोक नहीं सकता, दोनो हाथों से डाडें खियाकर क्षण भर में नियत स्थान पर पहुंच सकते हो, पहुँचोगे, पहुँचो। फिर तो समझे—अच्छा मैं अब लौट चलता हूँ।

रामू—मगर कुमार ! आप मेरी ज़रा सी बातको सुनकर उसके भीतर उबजे हुए एक सन्देह को मुझसे दूर कर देने का कष्ट उठावेंगे ? मैं कभी आप से इस तरह पूछ बैठने का साहस नहीं करता—परन्तु रहरह कर मेरे दिल में न जाने कैसी कैसी बातें उठ रही है। मैं अपने को सँभालते हुए भी चिन्ता से संभलने नहीं पाता।

कुमार—ठीक है; तुम्हारा ऐसा होना कुछ मुझे ताजुब नहीं दिला रहा है । परन्तु इस समय—मैं इस समय इस गठरी के बारे में कुछ भी नहीं बता सकता। तुम मेरे सच्चे मित्र हो। मैं तुम्हारे ऊपर बहुत बड़ा भरोसा करता हूँ। किन्तु—दुःखी न हो,—मैं जब तक यह गठरी छीना नदी के तह में जाके न लगे तब तक इसके रहस्य को खोलने के लिए सब तरह से लाचार हूँ। आजावो—मेरे कहे हुए कार्य को पूरी तरह उतार कर आजावो,—फिर मैं एक एक हाल—जो कुछ इस गठरीसे सम्बन्ध रखता हो तुम्हे सुनाकर तुम्हीसे आगे करने वाली कारवाईयों की सलाह लूँगा। मुझे जब तक यह गठरी अपनी नज़र के सामने है तब तक आग बनकर मेरे कलेजे को जला रही है। तुम चुपचाप चले जावो;—जिस तरह से जो कुछ अब तक चुपचाप करते हुए आए हो उसी तरह से,—बल्कि उससे भी ज्यादा चुप्पी साधकर इस बला को मेरे ऊपर से हटा दो।

रामू—मुझे सब कुछ मञ्जूर है,—यदि आपके लिए,—आपकी भलाई के लिए इस समय जान भी देनी पड़े तो देने के लिए तैय्यार हूँ। मैं इसको दम भर में छीना के उदर की कणिका बना, आपको—आपके दिलको सब फिक्रों से हलका किए देता हूँ।

कुमार—बस रामू ! यही बात है,—यही मैं चाहता हूँ। इसी से मेरी इज़्ज़त भी रह जायगी। इसी से मैं दश आदमी के सामने मुँह दिखलाने लायक़ भी बना रहूँगा। नहीं तो-तुम बिलकूल नहीं जानते, मेरे ऊपर-हाय ! मेरे ऊपर आफ़त का पहाड़ टूट पड़ेगा। मैं किसी भी लायक़ न रहूँगा। मुझे आज ही, इसी दम इस महल को छोड़ देना पड़ेगा। मैं क्या कहूँ,-मैंने बड़ी भारी नासमझी की। मुझे रह रह कर इस बात से बड़ा ही पछतावा हो रहा है। खैर—मित्र ! मैंने इसी कलंक की गठरी को तुम्हारे हाथ से नामोनिशान मिटाने के लिए तुम्हे पहरे पर से बुलवा लाया था। इसके अन्दर कोई जानदार चीज नहीं है,—किन्तु मुझे-ओफ ! मैं इसके आगे कुछ नहीं कह सकता, तुम मेरे लायक़ मित्र हो। जब तक तुम मेरे पास काम पूरा करने की खुशख़बरी लेकर न आवोगे तब तक मैं बहुत ही उद्वेग के साथ, तुम्हारी राह देखता रहूँगा। मेरे एक एक पल एक एक बरस के समान बीतते जायंगे। मेरे कलेजे की धड़कन किसी क़दर भी बन्द न होगी। मैं चिन्तित, विकलित, शंकित होकर इस समय की छीला—से कम डांवाडोल न होता रहूँगा। अच्छा, जावो, अब जावो। पैर कांप रहे हैं, मैं अब ज्यादे देर तक यहां नहीं ठहर सकता ?

रामू—आप जाइए,—मैं अभी अभी आकर आपको निश्चिन्त कर देता हूँ।

कुमार-हां, मुझे पूरा भरोसा है, तुम जरूर मुझे निश्चिन्त कर दोगे। परन्तु देखो, मैं अविस्वास से नहीं कह रहा हूँ, मैं अपनी घबड़ाहट से कहता हूँ, तुम इस गठरा को खोलकर इसके भीतर की वस्तु को देखने का प्रयत्न न करना। इससे—

मेरी तो हानि होगीही-साथ ही तुम्हारी भी बड़ी भारी हानि होगी ।

रामू—(लम्बी जबान निकाल कर) यह आप क्या कहते हैं कुमार ! मैंने कभी आपकी बातों का उल्लंघन किया है ! मैं कसम खा कर कहता हूँ जिस दिन आप मुझे ऐसा करते पावेंगे उस दिन इसको दुनियां में जीता भी न देखेंगे। इसमें चाहे कुछ भी हो, आपकी आज्ञा को सबसे बढ़कर समझ आंख बन्द किए हुए-इसको रसातल तक पहुँचा देना मेरा मुख्य धर्म होगा । मैं उसीको रहस्य का परदा खुला हुवा समझूँगा । मैं उसी से अपने को प्रसन्न पाऊंगा । आप जाइए,—बेफिक्र होकर जाइए;-इसको स्वप्न में भी खोलकर देखने का इरादा न करूँगा । आपके सामने,-आपकी मेहर-बानीयों के सामने इस गठरी का रहस्य क्या चीज़ है ? मेरे आप खुश रहें,—मैं उसी को तमाम दुनियें भर की बातें समझ लूँगा ।

कुमार—हां रामू ! मुझे तुम्हारी तरफ़ से ऐसी ही आशा थी, ऐसी ही आशा है । मैं तुम्हें कदापि वैसी तुच्छ बातों की तरफ़ इशारा न करता परन्तु मेरा चित्त इस समय ठिकाने नहीं है । मैं बहुत ही घबड़ाया हुवा हूँ । अच्छा—जावो,—कोई देख तो नहीं रहा है ? इतना कहकर उन्हो ने ऊपर,नीचे,अगल बगल सभी जगह गौर के साथ देखा,इसके बाद—मैं तुम्हारा उम्मीद से ज्यादा ईनाम को लिए हुए अपने कमरे में बैठा रहूँगा-कह धीरे धीरे पैर दबाता हुवा, जिस ओर से आया था उसी ओर जाकर अंधेरे में गायब हो गया । उसके चले जाने के बाद रामू कुछ देर तक गठरी के पास खड़ा खड़ा कुछ सोचता रहा,-अन्त को उसे उठा

उस छोटी सी अटारी की तरफ़ बढा,—जहां एक मज़बूत, खूबसूरत, छोटी सी डाँडे सहित नाव एक लोहे के कड़े में बँधी, लहरों से कभी किनारे की तरफ आकर टकराती हुई लौट जाती थी कभी पानी में डगमगाती हुई रस्सी से खींची जाकर लौट आती थी। रामू ने वहां पहुँचते ही एक मर्तबः दालान की तरफ, एक मर्तबः महल के ऊपर देख, इस समय लम्बी पाट को बढ़ाए पूरी उमङ्ग से भरी हुई छीना की भयानक सूरत पर गौर से नज़र डाली। वह अपने को बड़ा ही साहसी लगाता था और वास्तव में साहसी भी था, परन्तु इस समय की बातचीत के साथ ही साथ नदी की तड़पती हुई विकराल सूरत को देख कुछ काल के लिए उसका हृदय विचलित हुवा। आंखें बन्द होने लगी। चिन्ता ने गहरी छाया आकर डाल दी। लेकिन—वह तुरन्त ही सँभल उठा। उसने जल्दी जल्दी नाव को खींचकर अटारी के पास किया। इसके बाद उसके बीचोबीच गठरी रख, उस पर आप सवार हो कड़े से रस्सी खोल किनारे को अपने हाथ से ढकेल दिया। नाव तीर की तरह सनसनाती हुई कुछ दूर तक बह जाने लगी; इतने में उसने दोनों हाथों से डाँडा चला,—बड़े वेग से बहने वाले तरखे को चीरता हुवा नाव को बीच धारे की तरफ़ ले जाने लगा। वह इस काम में बहुत ही होशियार मालूम पड़ता था। रह रह कर पानी का वेग उसको बहाव की तरफ खींच ले जाना चाहता था परन्तु वह उसको अपने जबर्दश्त हाथों के ज़ोर से ऐसा करने नहीं देता था। किन्तु—हां, वह जितनी तेज़ी के साथ नाव को बीच धारे की तरफ़ ले जाने का इरादा करता था, वह उतना नहीं ले जा सकता था। दोनों की खींचाखींची में नाव

धीरे धीरे बीच धारे की तरफ़ बढ़ रही थी। चन्द्रमा आकाश के बीचोबीच खड़े हो इसके साहस को ग़ौर के साथ देख रहे थे, नाव पर चांदनी भरपूर पड़ रही थी। रामू के सामने सङ्गमरमर से बनी हुई बहुत बड़ी ख़ूबसूरत, इमारत अपनी चमक से एक निराले ढंग की शोभा को दिखला रही थी। देर तक नाव खेते खेते उसने पीछे फिर कर देखा,-उस पार, उसके ठीक पीछे, कई एक बग़ीचे अपने अपने भीतर के सुन्दर बंगले के साथ सन्नाटा मारे हुए पड़े थे। बहाव की ओर, कुछ दूर पर दोनो किनारों में बड़े बड़े पेड़ों का सिलसिला दूरतक जाता दिखलाई पड़ रहा था। छीना नदी बहुत बड़ी नहीं थी,- परन्तु इस समय वह अपनी पाटको अठगुनी करके स्वयं शोणभद्र बनने की लालसा में फूली हुई बढ़ी चली जाती थी। चारो तरफ़ सन्नाटा फैला हुवा था। कभी कभी नाव रुक कर डगमगा जाती थी। परन्तु रामू तत्काल ही उसको सँभाल लेता था। इसी तरह करीब करीब आधी दूर तक चले आने के बाद इस समय की अनूठी छटा को देख-डाँडों को धीरे धीरे खेते हुए किसी सोच विचार में घुलकर वह अपने आपको थोड़ी देर के लिए भूल गया। इस जगह तरख़ा नहीं था। तब भी नाव धीरेधीरे डगमगाने लग गई। उसको अब इस बात की कोई परवाह न हुई। उसने सँभल कर दोनों डाँडों को नाव में रख,—गठरी को उठाने के लिए हाथ बढ़ाया। उसी समय—ठीक उसी समय उस सन्नाटे को तोड़ती हुई—आह! करने की बहुत ही धीमी आवाज़ उसके कानों में आई। वह चौंक उठा,—उसने आँखें फाड़-फाड़कर अपनी चारो तरफ़ देखा। सामने राजमहल था,—पीछे कई एक बगीचे थे। अग़ल बग़ल—सनसनाकर बहने

वाला नदी का जल था। पासही निर्जीव गठरी थी। वह सोचने लगा—यह आवाज़ कहाँ से आई। किसने दुःख भरी व्यथा को ज़ाहर करने के लिए आह की कारुणिक आवाज़ सुनाई। वह चिन्तासागरमें डूबने उतराने लगा। उसने अपने को,—इस समय को,—इस तरह आने को एक स्वप्नसा समझा। नाव धीरे धीरे बहकर बहाव की तरफ जाने लगी। उसने उसके सँभालने की तरफ़ ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। कुछ क्षण के, नहीं-बहुत देर के बाद उसको कुछ होश आया। देखा—नाव तेज़ी के साथ तरखे में बही जारही है। उसने संभालने के लिए डांडे उठानी चाहीं; इतनेही में फिर उसी तरह—आह? करने की आवाज़ आई। अब उसकी समझ में कुछ कुछ बातें आती दिखाई दीं, वह बिजली की तरह तड़पकर गठरी के नज़दीक आया। उसे अन्दाज़ से वह आवाज़ गठरीही में से निकली हुई मालूम पड़ने लगी। वह ग़ौर से उसे देखने लगा।

इस समय उसका दिमाग ठिकाने नहीं था;—उसे रह २ कर अनेक चिन्ता सता रही थी। उसको अब भी सन्देह हुवा। उसने चारो तरफ़ नज़र दौड़ाकर देखा। नाव तीर की तरह बह रही थी;—कभी कभी उठने वाली तरङ्गों के आपस में गूंथ जाने की आवाज़ के अलावे समस्त पदार्थ सन्नाटा खींचे हुए पड़ा था। उसने सन्देह को निश्चय दिलाने के लिए; गठरी की तरफ़ हाथ बढ़ाया। साथही उसमें एक तरह की हिलन पैदा हुई। वह चौंककर कुछ पीछे हटा। उसे कुछ डर, कुछ क्षोभ पैदा हुवा। नज़र उसी के ऊपर गड़ गई; इतने में फिर-गठरी से; उसी गठरी से आह करने की आवाज़ निकल पड़ी। अब उसके दिल में जो कुछ भ्रम था,

जो कुछ सन्देह था वह निश्चय के साथ बदल गया। साथ ही उसके ताजुब का ठिकाना नहीं रहा। वह पत्थर की तरह चुपचाप बैठा हुवा सोचने लगा। इतने में फिर आह! करने की आवाज़ आई; साथही वह गठरी ज़ोर से हिल उठी। अब तो कई बार उसमें से आह आह! करनेकी आवाज़ आनेलगी। चिन्तित, विचलित, शङ्कित रामू अपने को, इसवार इस आहआह की लगातार आनेवाली आवाज़ से किसी तरह संभाल न सका। उसने—जल्दी; मगर नरम तौरसे-उस गठरीपर झुककर-उसके बन्धनोंको खोला। चादर के भीतर हलका,—मगर लम्बा चौड़ा मखमली गद्दा था। गद्देके भीतर रेशमी जाजिम था। चांदनी के उजाले में उसने देखा,—वह जाज़िम खून से तराबोर हो रहाथा। यह देख वह चौंक उठा;—उसको किसी बात के ख्यालने आकर चिन्तित किया। कुछ देरके लिए हाथ रोककर वह उसे गौरसे देखने लगा। फिर-आह करनेकी वही दर्दनाक आवाज़ आई। उसका रुका हुवा हाथ फिर खोलने में जल्दी करने लगा। कई तरह के परत के बाद गठरी खुली; उसमें से—उसी गठरी में से एक पन्द्रह सोलह बरसकी परम सुन्दरी युवती निकल पडी। वह उसको देखतेही चौंक उठा;—उसके मुंह से एक हलकी सी चीखभी निकल आई। आखें तिरमिराने लगी। वह सकते की हालत में आया। उसे कुछ देरके लिए होश नहीं रहा। आख़िर उसने अपने को किसी किसी तरह सँभाल-ऊपर की तरफ़ हाथ उठा कर कहा—भगवन्! तुम बड़ेही दयामय हो। तुम्हारी अपरम्पार लीला को कोई नहीं जान सकता। आज—मेरे बदले कोई दूसरा होता तो कुमारी किरणशशी के ऊपर अनर्थ हो चुका होता। मुझे तुम्ही ने;—केवल

तुम्ही ने इस काम को मेरेही सुपुर्द कराकर इसकी जान बचा-ली। जब तक तुम्हारी दया दृष्टि बनी रहती है तब तक कोई किसी को नहीं मार सकता। मैं जिस काम के लिए,—इस जगह इस रूप से बैठा हुवा था, वह एक तरह पर पूरा हुवा।

इतना कहकर उसने किरणशशी को उसमें से निकाल गद्दा बिछा, उसी पर लेटा दिया। उसकी बड़ी बड़ी चञ्चल आंखें इस समय मुंदी हुई थीं। सुन्दर चेहरा मुरझाया हुवा था। होंठ नीले पड़ रहे थे। बाल बिखरे हुए थे। अलकें छितराई हुई थीं। कपड़े चिथड़े चिथड़े हो रहे थे। कई एक जड़ाऊ गहने टूटे हुए थे। गर्दन के पासही दहिने कन्धे पर एक गहरा घाव लगा हुवा अभी तक ज़रा ज़रा सा खून को फेंक रहा था। उसने और सब एक एक अङ्ग प्रत्यङ्ग को जाँच कर देखाः—परन्तु कहीं भी दूसरा घाव लगा हुवा दिखलाई न दिया। उसने फिर जगदीश्वर को मुक्त कण्ठ से धन्यवाद देकर कहा—दयामय ! तुमने इस अलौकिक कुसुम को कुसमय टूटने से बचाया, मैं तुम्हारी किस मुँह से प्रशंसा करूँ। तुम केवल करुणामय ही नहीं हो परन्तु सबके ऊपर विचार पूर्वक देखने वाले पारदर्शी भी हो। इतना कह कर उसने जल्दी से अपनी चादर को फाड़, बग़ल से बटुआ निकाल,—उसके ऊपर कई परत करके एक पट्टी बांध दी। इसके बाद एक तरह का अर्क निकाल कुमारी के मुँह में कई बून्द टपका,-उसके शिर में भी छिड़क दिया। इस काम से फुर्सत पाकर उसने उसकी नाक के पास एक रूई के फाह को ले जाकर रक्खा। साथ ही कुमारी की बड़ी बड़ी आँखें खुल गईं-उसने हाथ पैर हिला,-इधर उधर देखा। उसकी नज़र रामू के ऊपर पड़ी। उसने चौंक कर आंखें बन्द कर

एक हल्की आह ! निकालने के बाद घृणा मिली हुई आवाज़ से धीरे धीरे कहा—शिवदत्त ! पापी शिवदत्त ! तुमने मुझे उस निर्दयिता के साथ मार कर भी मेरा पीछा अभी तक छोड़ा नहीं है ? उसकी ऐसी बातें सुन रामू ने कुछ करीब आकर कहा—कुमारी ? आप डरिए मत, आंखें खोल कर देखिए। मैं शिवदत्त नहीं हूँ,—इस भेष में बैठी हुई आपकी परम हितैषिणी—माधवी हूँ । यह सुन कुमारी ने जल्दी से आँखें खोल उसकी तरफ़ गौर से देख कर कहा—क्या आप भारतबर्ष के प्रतापी महाराज नरेन्द्रसिंह की ऐयारा माधवी हैं ?

माधवी—हां, मैं वही माधवी हूँ ।

कुमारी—(उठ कर) परन्तु आप रामू की सूरत क्यों बन बैठी ?

माधवी—(एक अर्क को हाथ में ले अपने मुँह में मल-कर) मुझे बड़े कुमार रणधीरसिंह की सुराख इसी जगह होने की लगी हुई थी। इसीलिए शिवदत्त का मुँह लगा ऐयार रामू को पकड़ उसकी जगह उसकी सूरत बन अपनी घात को लगाए हुए बैठी थी । मुझे यहां इस तरह से रहते चार रोज पूरे हुए । कुमार का पता नहीं लगा, परन्तु बहुत सी काम की बातें जानने में आ गई । कल किसी समय निकल चलने का विचार कर ही रही थी, इतने में शिवदत्त ने मुझे बुलाकर आपकी गठरी को इस भरी नदी के बीच धार में बहा देने के लिए कह मेरे हवाले किया ।

कुमारी—(उसको पहचान उसके गले से लपट कर) ईश्वर ने आपको बड़े मौके पर पहुँचा कर मेरी जान बचाई । अब इस एहसान का बदला आपको मैं किस तरह से दूँ ?

माधवी—(उसके आँसू को पोंछ कर) नहीं कुमारी! मैंने कोई एहसान नहीं किया है। यह एक संयोग की बात थी जिससे मेरे हाथों आपकी जान बच गई। आप ईश्वर के एहसान को मनाइए—उसका बदला उसी की भक्ति से चुकाइए? मेरा इसमें ज़रा भी कार्य का प्रयत्न नहीं है। अच्छा,—यह तो बताइए,—आप यहां कैसे आकर शिवदत्त के हाथों में पड़ी। उसने आपके साथ ऐसा बर्ताव क्यों किया?

कुमारी—मैंने बड़े कुमार को अपने आदमी भूतनाथ, तारासिंह और चञ्चला की मदद लेकर पालामौकी ऐयारा नव्वाबजादी जेबुन्निसा की क़ैद से छुड़ाया। इसके बाद उन दोनों को कुमारी सावित्री की खोज में भेजकर हम दोनों ससराम की तरफ़ जा रहे थे, इतने में एक औरत ने आकर हम दोनों को उस तरफ जाने से मना किया।

माधवी—वह औरत कौन थी?

कुमारी—उसने अभी अपना भेद किसी से न कहने को कहा है। वह अपनी हितैषी है। भलाई के सिवाय उसके हाथ से किसी तरह की बुराई नहीं हो सकती है। वह आप ही अपना भेद आप लोगों के सामने किसी दिन खोलेगी। अस्तु—उसके मना करने पर हम दोनों उसके साथ ही साथ उसके बताए हुए रास्ते से चलने लगे। इतने में कई एक सवारों ने आकर हम तीनों को घेरा। कुमार और उस औरत ने उन सबों का मुकाबला किया। मुझे उन्होंने मना किया था, इस लिए मैं चुपचाप अपने घोड़े पर बैठी तमाशा देखती रही। देर तक जम कर तलवारें चलीं; उस औरत ने दो को मार गिराया। कुमार ने बांकी के छ सात सवार को यमपुर का रास्ता दिखाया। इसके बाद वह घूमकर मेरे पास

आया ही चाहते थे इतने में फिर चारो तरफ़ से पचीस तीस सवारों ने आकर हम तीनों को घेर लिया। साथ ही किसी जबर्दस्त हाथ ने मुझे पकड़-एक तरह की बेहोशी से भरी हुई चादर मेरे ऊपर ओढा दिया। फिर तो तनोबदन की खबर न रही, मैं तुरन्त ही बेहोश होगई। जब मेरी आँख खुली तो मैंने अपने को कुमारी सुभद्रा के पास, उसी की कोठरी में पाया। उससे मेरी पहलेही से दोस्ती थी, उसकी मां और मेरी मां से बहनापे का नाता था। इसलिए वह कभी कभी चुनारगढ़ भी आया जाया करती थी। परन्तु मैं आज तक सिंघपुर नहीं आई थी। उसने मुझे होश में आते देख प्रसन्न होकर कहा—बहन! तुम्हें हमारे दो आदमियों ने ससराम के पास ही से बेहोश करके ले आए हैं। कुमार और तुम्हारे साथ की औरत-बांकी के कई एक सवारों को मार काट कर तुम्हारी खोज में जंगलकी तरफ़ चले गए हैं। तुम्हे यहां ले आने के बाद पिताजी ने देख, पहचान कर मेरे हवाले किया है। अब दो चार दिन आराम करके मैं भी तुम्हार साथ चुनार चली चलूँगी। यह सुन मैं बहुतही चिन्तित हुई,-क्यों चिन्तित हुई, मैं नहीं कह सकती। इसके बाद रातको हम दोनो खा पीकर एकही पलंग पर सोई हुई थी,—अकस्मात् मेरी नींद खुली। मैंने आंखें खोलकर देखा,—सुभद्रा का भाई शिवदत्तसिंह सामने खड़ा मुस्कुरा रहा है। मैं अब उस कोठरी में नहीं हूँ। मुझे यह देख बड़ा ही ताजुब हुआ। इसलिए इसका कारण उससे पूछा। उसने अपनी बहुत ही बुरी ख्वाहिश मुझसे ज़ाहिर की। मैंने उसको हर तरह से समझाया। मगर उस अधम ने नहीं माना। उन्मत्त की तरह मेरे पास बढ़ताही चला आया। यह देख मैं चिल्लाकर भागी। मुझे उसने जोरसे

पकड़ कर खींचा। अन्त को इसी छीनाझपटी में मेरे कपड़े चिथड़े चिथड़े हुए। मैंने जहां तक होसका अपने को बचा कर उस नारकी को एक लात मारा। वह उससे तिलमिला-कर गिर पड़ा। मैंने भागकर दरवाजा खोलना चाहा, परन्तु किसी तरह से भी नहीं खुला। इतने में उसने आकर मुझे गुस्से से ज़मीन पर पटक एक भरपूर हाथ खञ्जर का मारा। मेरा काम उसी समय तमाम होजाता परन्तु मैं अपने को बचाने के लिए छटपटा रही थी; इस लिए उसका निशाना ठीक जगह पर जमकर न लगा;-हल्की चोट लगाता हुवा मोढ़े पर आ बैठा। मेरा डरके मारे होश ठिकाने नहीं था। मैं उस चोटको बर्दाश्त नकर बेहोश हो गई। इसके बाद—इस समय आँख खुलनेपर मैंने आपको अपने सामने पाया। परमात्मा! तुम निःसहाय के बड़े ही सहायक हो। तुम्हारी अतुलनीय महिमा को कोई भी नहीं जान पाता। उसकी ऐसी बातें सुन माधवी कुछ कहाही चाहती थी, इतने में उसकी नज़र सामने की तरफ़ पड़ी। उसने पहाड़की तलहटी में दूसरी तरफ़ से बड़ेवेग के साथ बहती हुई आने वाली एक विशाल नदी को देख चौंककर कहा—ओफ! क्या हमलोग इतनी जल्दी इस तेजी के साथ इतनी दूर शोणभद्र के मुहाने पर आ पहुँची। अच्छा हुवा;-अब मैं नाव को किनारे लगाकर करीबही के एक गाँव में आपको ले चलती हूँ। इतना कहकर वह जोर से डाँड खे किनारे की तरफ ले चलने लगी। मगर वहाँ पानी का बड़ा जोर था। बड़ी बड़ी मुश्किल से वह नाव को किनारे के पास भी न पहुँचा पाई थी—इतने में एक कड़ी हल्कोरे ने आ इसके नाव को एक पत्थर से टकराकर किनारे के पासही ला उलट दिया। माधवी छटक कर दूर हो तैरने लगी। कुमारी भी अच्छा

तैरना जानती थी—परन्तु इस समय कमजोरी के सबब उस का हाथ पैर ढीला पड़ गया था। वह गिरतेही कई एक गोते खा कर बहने लगी। माधवी ने बड़ा जोर मारा मगर उसके पास तक पहुँच न सकी, इतने में किनारे की तरफ से किसी के धम्म से कूद पड़ने की आवाज आई। उसने देखा—कुमारी के पास ही कोई जोर जोर से हाथ पैर फेंक तीर की तरह तैरता हुवा जा रहा है।

ग्यारहवाँ बयान।

"है तुम्हारे साथ धोकाबाज़ धोके से बचो ॥
कल कहां होगे यहाँ तुम आज धोके से बचो ॥"
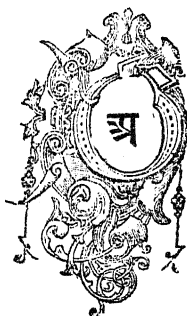
अजनबी के साथही साथ छोटे कुमार महेन्द्रसिंह उस आने वाले खूबसूरत लड़के को डर के मारे हाँफते काँपते अपनी तरफ तेजी के साथ दौड़ते हुए आते देख उठकर ताज्जुब भरी निगाहों से उसकी तरफ देखने लगे। वह लड़का बड़े जोर से भागता हुवा इन लोगों के पास से होकर निकलना चाहतथा—लेकिन उस अजनवी ने ऐसा करने नहीं दिया। उसीदम फूर्ति से आगे बढ़ उसके हाथ को भर जोर पकड़ कर कहा—क्यों जी लड़के! तुम इस तरह किसके डर से बेतहासा भागे जा रहे हो?

लड़का—(उसके हाथ को छुड़ाने की कोशिश कर रोता

हुवा) दया करो,—रहम करो,—मुझे मत पकड़ो,-जाने दो, नहीं तो वह दुष्ट निर्दयी—बड़ी निर्दयिता को साथ मुझे मार डालेगा।

अज—तुम घवड़ावो मत,—तुम्हे अब कोई सता नहीं सकता। अगर हम लोगों के रहते किसी ने सताने का इरादा किया तो उसकी अच्छो तरह खातिरी भी कर दी जायगी।

लड़का—(डर कर) नहीं नहीं वह बड़ा ही जबर्दश्त है। उसका आप लोग कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेंगे। मैंने उसकी ताकत को अच्छी तरह देख लिया है। छोड़ दीजिए—मुझे छोड़ दीजिए,—नहीं तो मेरे साथ ही साथ आप लोगों को भी कष्ट उठाना पड़ेगा?

कुमार—(दयासे देख कर) नहीं नहीं लड़के! तुम बे-फिक्र होकर हम लोगों के पास रहो,—वह चाहे जबर्दश्त का बाप ही क्यों नहो, हमारे सामने तुम्हे सताने की हिम्मत जरा भी न करेगा? इतने में जिस तरफ से वह लड़का दौड़ता हुवा आया था उसी तरफ से एक बदसूरत क़द्दावर जवान हाथ में नङ्गी तलवार लिए हुए तेजी के साथ आता दिखलाई पड़ा। उसको देखतेही लड़के के मुंह से बेतहासा चीख निकल पड़ी। वह डरके मारे रोता हुवा थरथर काँपने लगा। उसकी ऐसी हालत देख कुमार ने उसे हर तरह से समझा कर ख़ामोश किया। इतने में वह आदमी भी इन लोगों के पास आ पहुँचा। वह बदसूरत तो थाही,—साथही उसकी उस सूरत से,—पाजीपन, बेईमानी—दगाबाजी,-बेरहमी भी भर-पूर टपक पड़ती थी। उसने आतेही तलवार खैंच क्रूर दृष्टिसे सरसरी तौर पर इन तीनों की तरफ़ देखा;- इस के बाद उसकी नज़र कुमार के ऊपर जम कर पड़ी। वह उन्हे इस

तरह कुछ देर तक घूर एकाएक हाथ की तलवार ज़मीन पर फेंक–ओफ़ तुमहो;–मैंने तो काई दूसराही समझ रक्खा था;–अब इस पाजी लड़के की जान के ऊपर मैं किसी तरह हाथ नहीं उठा सकता—कहता हुवा जिस तरफ़ से आया था उसी तरफ जी छोड़ कर भाग गया। यह देख उस लड़के को कुछ तसल्ली हुई; उसने घुटने टेक, कुमार की तरफ हाथ जोड़ कर कहा—आप चाहे जो कोई भी हों; परन्तु इस समय उस दुष्ट से मेरी जान बचादी; मैं आपका यह उपकार मरते दमतक कभी भी भूल नहीं सकूँगा।

अजनबी—तुम तो पहले नाहक़ ही घबड़ाते थे। हम लोगों के सामने सहसा काल भी साहस करके नहीं आसकता है।

कुमार—(उसको प्रेम से उठाकर) उठो–लड़के! उठो;–अब तुम निश्चिन्त हो कर रहो। जब तक मैं हूँ तबतक तुम्हारा कोई भी बाल बांका नहीं कर सकता। यदि तुम चाहो तो मेरे पास हमेशा के लिए रह भी सकते हो। मैं अपने घर पहुँच कर तुम्हारे आराम का अच्छा बन्दोवस्त भी कर दे सकता हूँ।

लड़का–(उठकर) इस दया का मैं किस मुंह से तारीफ़ करूँ?

अज—तारीफ़ करने की कोई आवश्यकता नहीं है हम लोग तारीफ़ ही तारीफ़ के हैं। अच्छा, यह तो बताओ, वह कौन रहा;—तुम्हे क्यों सताने के पीछे तुला हुवा था।

लड़का—मेरे मा बाप कोई नहीं हैं। मैंने साल भरसे केवल खाने कपड़े ही पर उस दुष्ट के यहां मज़बूरन नौकरी कर ली थी। वह तरह २ के काम मुझसे लिया करता था। मैं चुपचाप उसकी सब बातें सहते हुए उन सब कामों को करता आता था। आज उसने मुझे एक बहुत ही बुरा काम करने के लिए कहा—जिसको मैंने करने से इन्कार कर दिया। इसीसे

वह मुझको मारने के लिए बेतरह बिगड़ कर मेरे पीछे लगा हुवा आया था। संयोग—आज आप दोनो संयोग से न मिल जाते तो उसके हाथ से मैं हर्गिज न बचता। मगर यह तो बताइए—, वह आपको देख इस तरह दुम दबाकर क्यों भाग खड़ा हुवा?

अज—यह तो तुम कभी मिलना तो उसी से पूछना? हाँ, यह तो बताओ, तुम्हारा नाम क्या है;—यह जगह कौन सी है। यहाँ से बस्ती कितनी दूर पड़ती है?

लड़का—मेरा नाम तो रघुनाथ है,—मगर सभी मुझे रघवा कहते हैं। इस लिए अब मैं रघवाही के नाम से मशहूर हूँ। इस जङ्गल से पालकोट कोस भर की दूरी परहै? क्या आप लोग इस रास्ते से कभी आए नहीं रहे?

अजनबी—आए होते तो तुम्हे पूछता ही कौन? (कुमार-से) देखा, मैंने तुमसे कहा था न? हम लोग पालकोट ही की किसी सरज़मीन में होंगे,—वही बात हो आई। अब चलो-वहीं किसी सराय में चलकर डेरा डालें। मुझे तो इस वक्त इस कमबख्त भूखने बेतरह सताने का विचार कर रक्खा है।

कुमार—हाँ, यह तो तुमने ठीक कहा। मुझे भी भूखने ऐसा ही हाल कर रखखा है। परन्तु सराय में डेरा डाल कर इसको शान्त करने का उपाय तो मेरे पास इस समय कुछ नहीं है। इसके सिवाय—ऐसा कपड़ा पहन कर कैसे मैं शहर के भीतर जा सकता हूँ।

अजनबी—जानातो लाचारी दर्जे हमारे पुरखों तक को भी वहाँ जाना पड़ेगा, विना गए शरम करने से किसी तरह काम नहीं चलेगा;—परन्तु खाने पीने की फिक्र न करो;—मेरे पास एक पैसे के अलावे अभी भी तीन आदमी के लिए मेहनत

किए बिना ही कई दिन तक टाँग फैलाकर खाने पीने के वास्ते काफी रक़म बची हुई खर्चे के इन्तजार में छटपटा रही है। सराय में चलने के बाद तुम्हारे पहनने लायक़ कपड़ा भी खरीद लूँगा।

कुमार—(कुछ सचोकर) मगर-मैं-तुम्हारे-उन सब…

अजनवी—(बात काटकर) बस बस चुपचाप रहो;—कुछ बोलो मत; इस समय मैं तैं, तुम्हारे हमारे, हम तुम की कोई बात चीत नहीं है। जैसा आपड़ता है वैसाही भोगना भी पड़ता है। (रघवा से) रघवा! तूने ऐसा कोई सराय नहीं देखा है जहाँ छिपे छिपे तौर पर हम लोग पहुँच डेरा डाल सकें?

रघवा—क्यों नहीं, यहाँ का रहने वाला हूँ इसलिए ऐसे सराय मैंने बहुत से देखे हैं। शहर पनाह के बाहर,—शङ्कर राव की सराय है, कनखाके किनारे रामेश्वर की सराय है। सब से अच्छा,-हां ठीक है—सबसे अच्छी मेदिनी की सराय है। वहाँ आप लोग—यदि राजकुमार भी होंगे तो एक मर्तबः पहुंच कर अपने महल को भूल जायँगे।

अजनवी—तो चल, वहीं हमलोगों को ले चल?

कुमार—(जल्दी से) नहीं नहीं ऐसी जगह इस समय जाना उचित नहीं है।

अजनवी—उचित क्यों नहीं है,—उचित सब तरह से है। क्या हम लोग वहाँ भीख माँगने जा रहे हैं जो नहीं नहीं करते हो। तुम—जैसा मैं कह रहा हूँ उसी तरह चुपचाप चले चलो। भगवान सब कुछ करने वाला है, सब कुछ करेहीगा। उसकी ऐसी बातें सुन कुमार कुछ चिन्ता में पड़ गये मगर उस अजनवी ने उनके चित्त को धैर्य्य देकर उन्हे चलने

के लिए राजी किया। इसके बाद आगे पीछे करके वे तीनो सामने की तरफ चलने लगे। आध घण्टे के बाद कनखा नदी मिली, रघवा ने उसी के किनारे किनारे लेजाकर एक बहुत बड़ी आलीशान सराय के फाटक पर खड़ा कर दिया। कुमार अपने को इस समय सोनेही की पोशाक में होते देख अन्दर जाने से हिचकिचाते थे, परन्तु अजनवी ने उन्हे चिकोटी काट कर सँभाल लिया और बेधड़क उसके अन्दर घुस—सरायवाले के बैठने की जगह को पूछ, उन दोनों को लिए दिए वह उसी जगह पहुँचा,—जहाँ एक अधेड़ मनुष्य कुरसी पर बैठा हुवा कई एक आदमियों के साथ बात चीत कर रहा था। उसने इन दोनो की सूरत शकल देख, अदब के साथ खड़े हो लम्बा सलाम करने के बाद कहा—क्या आप लोग इस गरीब के झोपड़े पर रह कर इसकी सेवा को स्वीकार किया चाहते हैं?

अजनवी—हाँ, हम लोगों को,—तुम्हारी सराय में सबसे बढिया,—सब तरह के सामानों से सजी हुई दो कोठरी की आवश्यकता है। हम लोगों को इसी दम दे डालो। देखो—किराए का ख्याल जराभी न करना-हमलोग एक की जगह पर दस देकर चलने वाले आदमी हैं। (अपनी जेब से पचीस अशर्फी निकाल उसको देते हुए) लो, यह न उन कोठरियों का किराया ही है;—न खाने पीने के सामानों का खर्चा ही है। तुम्हे ये सब ईनाम के तौर पर दिए जाते हैं। तुम्हारे यहाँ खाना पीना जो सबसे उम्दा,—सबसे बढिया बनता है वही भेज दिया करना। परन्तु याद रखना—कच्ची रसोई यहां हम लोग नहीं खाते। उस अजनवी की बातचीत और उसकी ऐसी दियानतदारी देख; सराय वाला फड़क

उठा । उसने कई बार इन दोनो को सलाम किया । इसके बाद जल्दी जल्दी से ऊपर जा,—कई मिनटों के बाद लौट आकर कहा—चलिए—दूसरे मरातीब में सबसे बढिया;-सब सामानों से सजे हुवे दो कमरे आप लोगों के लिए खोल दिए गए हैं। अब वहीं चलकर आराम कीजिए । तब तक भोजन भी तैय्यार होकर आताही है । यह सुन अपने साथियों को लिए दिए, वह अजनवी,—लम्बी चौड़ी सींढ़ी पर चढ़ता हुवा—उन्ही दो कमरों में से एक कमरे के अन्दर चलकर,—एक एक कोंच पर कुमार को बैठा;—एक दूसरे कोंच पर आप बैठ रघवा की तरफ देख कहने लगा—तुमतो यहां कई मर्तबः आए होगे ।

रघवा—कई मर्तबः तो नहीं, आया तो एकही मर्तबः हूँ, परन्तु आप को क्या चाहिए ?

अजनवी—तुम्हारे दिल से अबतो डर निकल गया होगा।

रघवा—जीहां, करीब २ तो इस समय निकल गया है ।

अजनवी—अच्छा,—बाज़ार जाकर जो कुछ मैं कहूँ, उस को ला सकते हो ?—मगर खैर—जानेदो—मैं तुम्हे अभी नहीं भेजूँगा (कुमार से) चलो,—दोस्त! पहले हम्माम में चलकर नहा धोकर नित्य कृत्य से निवृत्त होलें तब खाना खाकर और सब सामानों के खरीदने के विषय में बात चीत करेंगे । कुमार उसकी इन सब कार्रवाइयों को देख हैरान हो रहे थे, उनकी समझ में कुछ भी बातें नहीं आती थी । वे कभी कुछ सोचते थे, कभी दिमाग को नाहकही परेशान कर चकरा जाते थे। उनकी यह हालत से वह अजनवी भी बेखबर नहीं था । उसने अपनी बातों को समाप्त करके कुमार का हाथ पकड़ कर उठाया । उसी कमरे के बगल ही में हम्माम था । वहां

बढ़िया से बढ़िया धोती अगौंछा भी रक्खे हुए थे। तीनों ने जाकर वहां नहा धो नित्य कृत्य से छुट्टी पाई। इसके बाद उस अजनवी ने रघवा को कुछ इशारे में समझा कर नीचे भेज दिया। ये दोनो हम्माम से निकल उसी कमरे में आए। अजनवी ने वहां आतेही—दूसरे कमरे को भीतरही से खोला—जिसकी चाभी सरायवाले ने उसको ऊपर आतीबे रही दे रक्खा था। वह भी इसी के बरोबर का—इसी तरह सजा हुवा कमरा था। उसने खोलतेही कुमार की तरफ देख कर कहा—मुझे वह कमरा पसन्द आया मैं वहां सोऊंगा,—तुम इसी में सोना। रघवा दोनो कमरों में से जहाँ जी चाहेगा वहाँ सोएगा। यह सुन कुमार कुछ कहाही चाहते थे इतने में कई एक ब्राह्मणों से भोजन उठवाकर रघवा आ पहुँचा। अजनवी ने प्रसन्न हो कुमार को एक आसन पर बैठा, आप दूसरे आसन पर बैठ,-खाने का सामान अपने सामने रखवा,-रघवा से कहा—तुमतो नीचे ही जाकर जो जीमें आवे सो खावो। देखो,—ज्यादा खरच होजाने की कुछ भी परवाह न करना। यह सुन रघवा नीचे चला गया। दो नौकर हाथ मुंह धुलाने के लिए,—पानी ले दरवाजे पर खड़े हुए। खाना बड़ाही उम्दा बना हुवा था। दोनो ने भरपेट खा,-हाथ मुंह धो पान लायची जमा कर-आमने सामने के एक एक कोच पर बैठ नौकरों को जाने का इशारा किया। कमरे में सन्नाटा होने के बाद अजनवी ने कहा—देखा दोस्त! मैंने तुम से कहा था न,—परमात्मा देने वाला है। आखिर उसने दिया या नहीं? तुम तो नाहकही घबड़ा रहे थे। मैंने तैय्यारी कपड़े वालों को भी बुलवा भेजा है। वे आतेही होंगे। उन में से हम लोग अपने अपने पसन्द के कपड़े—जोड़े खरीद लेंगे

इतने में कई एक कपड़े—जूते बेचने वाले को लेकर रघवा और सरायवाला आ पहुँचा। अजनवी ने उन में से दो जोड़े कीमती कपड़ों का पसन्द किया और एक जोड़ा रघवा के लिए लेकर अपने अपने पैर के तीन जोड़े जूते खरीद—उन सबों को एक सौ अशर्फी देकर विदा किया । उन सबों के जाने के बाद रघवा भी अपना कपड़ा जूता पहन सरायवाले से बात चीत करता हुवा नीचे चला गया। फिर यह दोनो कमरे में अकेले हुए। अजनवी ने कुमार की तरफ़ देख कुछ हँसकर कहा—तुम तो दोस्त! मेरी कार्रवाईयों को देख कर ताज्जुब करते होगे ?

कुमार—हाँ मुझे बड़ा ही ताजुब हो रहा है। तुम तो पहले कहते रहे मेरे पास एक पैसा भी नहीं है,—मगर अब तो तुम दिल खोकर राजसी खर्च कर रहे हो। यह सब दौलत तुम्हारे पास कहाँ से आ टपकी !

अजनवी—(हँसकर) आसमान से? सुनो दोस्त! उस समय मैं तुम्हारी तबीयत से वाकिफ़ नहीं था। इसलिए मैंने तुम्हे कोई दूसराही ख्याल करके वैसा कहा था। अब मैं बखूबी तुम्हारे मिजाज से वाकिफ होगया, इसलिए जो कुछ मेरे पास था और है किसी तरह के संदेह को अपने पास तक फटकने न देकर तुम्हारे सामने ही खुले दिल से खर्च कर रहा हूँ और खर्च करूंगा।

कुमार—ठीक है,—अब तुम मेरे साथ मुंगेर चलो, मैं वहाँ चल कर तुम्हे इस उपकार का बदला भरपूर चुका दूँगा ?

अजनवी— मैं बदला लेने की नीयत से किसी के साथ उपकार नहीं करता। मुझमें यही तो एक बुरी आदत पड़ी

हुई है। तुम निश्चिन्त रहो,—दो एक रोज के भीतरही भीतर हमलोग यहाँ से नौ दो ग्यारह हो जायंगे। मगर यह तो बताओ, तुम्हारा नाम क्या है?

कुमार—मैं भी तो यही पूछने वाला था। परन्तु बातों के सिलसिले से मौका नहीं हाथ आयाथा।

अजनबी—(हंसकर) बस, दोस्त, तुम तो जब मैं कहता हूँ तब वैसाही सवाल कर बैठते हो। इसलिए अब न तुम मेरा नाम पूछो न मैं तुम्हारा नाम पूछूँ। हम लोग आपस में बुलाने के लिए बनावटी नाम रखलें—तुम्हारा नाम घनश्याम हुवा मेरा नाम राधाकिशोर हुवा? क्यों ठीक है न,—कैसा मज़े का फैसला कर दिया। उसकी ऐसी बातें सुन कुमार हंसने लगे। देर तक इसी तरह की बातचीत होती रही। इसके बाद रघवा भी आया। उसने आतेही कुमार का पैर दबाना शुरू किया। वे बात चीत करते २ सो गए। चार बजे के क़रीब उनकी आंख खुली। राधाकिशोर बैठा हुवा हाथ मुँह धो रहा था। इन्होंने हाथ मुँह धोकर कुल्ला किया। इसके बाद दोनोंने कपड़े बदले। रघवाने दो कसाकसाया उम्द:घोड़ा इन लोगों के वास्ते लाकर नीचे चौक में रक्खा हुआ था। ये दोनों ने भी नीचे उतर—उसपर सवार हो—दो तीन घण्टे तक शहर में अच्छी तरह घूम फिर कर दिया जलते जलते अपने ठिकाने आ,—कपड़ा उतारा। कमरे में बिजली की रोशनी हो रही थी। रघवा गुलदस्ता सजा रहा था। इन-दोनों ने वहां पहुँचतेही अच्छी तरह से नहाया। रात घण्टे भरके क़रीब जाते २ खा-पीकर तीनों निश्चिन्त हुए। राधा-किशोर ने पासही रक्खी हुई बीणा उठा—कई तरह के गतों को बजा कर सुनाया। कुमार भी इस फ़न में बड़ेही उस्ताद थे

—उन्होंने भी अपने हाथ की सफ़ाई दिखाई, इसके बाद पलङ्ग पर सोने के लिए चले गए। राधाकिशोर भी वहां से उठकर दूसरे कमरे में चला गया। रघवा कुमार का पैर दबाने लगा। उन्हे बड़े जोरकी नींद आरही थी, वे पलङ्ग पर पड़तेही खर्राटा लेने लगे।

आधी रात के बाद एकाएक कमरे में किसी तरह खटका होने से कुमार की नींद उचट गयी, उन्होंने आखें खोलकर देखा,—कमरा बिलकुल अन्धःकार में डूबा हुआ था। वे संभल कर पलङ्ग पर उठ बैठे,-इतने में दूसरे कमरे से—किसी के ठठाकर हँसने की आवाज़ आई। यह उनकी पहिचानी हुई आवाज़ नहीं थी। उन्हे इस बात से बड़ाही ताजुब हुवा। वे धीरे २ पैर दबाते हुए उसके दरवाजे के पास तक पहुँच कान लगा कर सुनने लगे। दो आदमियों के कुछ ज़ोर २ से बातें करने की आवाज़ साफ़ २ सुनाई पड़ने लगी। उनमें से एक तो राधाकिशोर था, दूसरा कोई अञ्जान औरत मालूम पड़ती थी। उनको औरभी आश्चर्य हुवा, वे सोचने लगे—इस समय यहां, इसके पास यह औरत कहां से आई? इतने में राधाकिशोर ने कहा—तुम्हे बड़ी जल्दी पड़ी रहती है। मैंने कैसा धोका देकर उन्हे अपनी मुट्ठी में कर रखखा है। उन्हें स्वप्न में भी मेरे और रघवा के औरत होने का गुमान नहीं होगा।

इसके बाद वे दोनों बहुतही धीरे धीरे बातें करने लगे जिससे कुमार को—बहुत ध्यान देने परभी कुछ सुनाई नहीं दिया। इससे उनको बड़ीही उत्सुकता पैदा हुई, परन्तु उतनी ही बातें सुनकर उनका माथा ठनक गया, वे तरह तरह की बातें सोचने लगे। इतने में ज़ोरसे उस औरत ने कहा—कनकलता भी कैद कर ली जायगी? इसके

आगे सुनने का ताव उन्हे नहीं रहा। वे दरवाज़ा खोल अन्दर जाने के लिए हाथ बढाही चाहते थे, किसीने अन्धःकार में पीछे से आकर उनके ऊपर बड़ीही तेज़ बेहोशी अर्क़में डूबी हुई चादर को बड़ी फूर्त्ति के साथ ओढा दिया। वे उसी दम बेहोश होकर फर्शपर लंबे पड़ गए।

बारहवां बयान।

" बिना तकदीर के तदबीर से चलती नहीं कुछ भी।
लिखी तकदीर की तदबीर से टलती नहीं कुछ भी॥
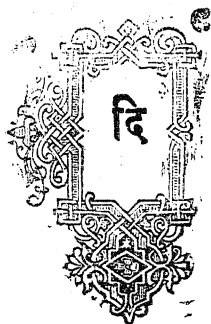
दिन भर के थके माँदे भगवान भास्कर, एक लम्बी सफ़र के पश्चात चौबीस घण्टे में फिर अस्ताचलके ऊपर आ लाल चेहरे को बनाए, अपनी प्रियतमा कमलिनी से विदाई ले- उसकी तरफ टकटकी बाँधे हुए देखते दिखलाई पड़ रहे हैं। उनकी यह हालत होती देख—हवा भी ठण्डी साँस भर रही है। संसार भी चिन्ता के गहरे अन्धः कार में डूबा चाहता है। पशुपक्षियों में भी खलबली मची हुई है। सबकी आँखों के सामने काला परदा पड़ा चाहता है। ऐसे समय—ठीक ऐसे समय मुंगेर की एक गली में—जहाँ कुछ दूर दूर पर रोशनी होने के कारण—अन्धःकार की विशेष प्रबलता थी—एक काले बोरके से तमाम बदन को छिपाए हुए किसी औरत को—गाती हुई भीख माँगकर धीरे धीरे आगे की तरफ बढ़ती हुई देख रहे हैं। उसकी सुरीली—दिलको मोहनेवाली तानको सुन-

कर—सुनने वाले दो एक मिनट के लिए खड़े हो कान दिए बिना किसी तरफ नहीं बढते थे। आवाज़ से वह बहुत ही कम उम्रकी मालूम पड़ती थी। कई एक मिसरों को कहने के बाद वह बार बार—है तुही रज़्ज़ाक रोज़ी को दिलादे ऐ खुदा! "कहती थी। आने जाने वाले आदमी उसको एक आध पैसा देकर चले जाते थे। इसी तरह गाते गाते वह घण्टे भरके बाद राजमहल के पास पहुँची। वहाँ उसने पहुँचते ही अपने तर्ज़को बदल कर एक दूसरा ही गाना छेड़ा। रात नौके क़रीब पहुँच चुकी थी। महल में लाखों रोशनियाँ जगमगा रही थी। फाटक पर सैकड़ों सिपाही पहरे पर मुस्तैद हो खड़े थे। बोरकेवाली ने कुछ देर तक गाने के बाद पिछवाड़े की तरफ आ-बोरके के भीतर से एक चोरलालटेन निकाल बड़ी सावधानी से महल की तरफ दिखाकर दो तीन मर्तबः हिलाया।

यह औरत जिस जगह खड़ी थी, वहां गहरा अन्धःकार छाया हुवा था। बड़ी कठिनाई से इसके ऊपर किसी की नज़र पड़ सकती थी। लालटेन का इशारा देनेके बाद यह देरतक महलकी तरफ चुपचाप खड़ी हो देखती रही। अन्त को मनही मन कुछसोच यह आगे बढ़ाही चाहती थी; इतने में महलके ऊपरी छतपर से किसी ने लालटेन हिलाकर इसको जवाब दिया यह खुशी खुशी वहां से जल्दी जल्ही चल गङ्गा किनारे एक सन्नाटा जगह देखकर बैठ गई। घण्टे भरके बाद किसी चीज को गठरी में उठाए हुए दो नकाबपोश इसके सामने आ पहुँचे। उन्हे देख इसने बड़ी जल्दी से कहा—क्या हम लोगों का काम हो गया?

एक-हां, हो तो गया,—मगर अब यहाँ हम लोगों को

एक मिनट भी ठहरना नहीं चाहिए। क्या; बजड़े का बन्दोबस्त हो गया है ?

औरत—हाँ, सब कुछ दुरुस्त है। चलो, मैं भी यहां देर तक ठहरना नहीं चाहती। इतना कह वह उन दोनों को ले तेजी के साथ किनारे ही किनारे चलकर कोस भरकी दूरी पर आपहुँची। इस जगह पेड़ पत्ते की ज्यादती से छोटा मोटा जङ्गल ही मालूम पड़ता था। यहां आतेही उस औरत ने धीरे से सीटी दी, साथ ही किसी ने गङ्गाजी की तरफ से सीटी दिया। यह तीनो खुशी खुशी किनारे पर आए। इतने में छपछप करता हुवा एक बहुत बड़ा बजड़ा आकर किनारे लगा। ये तीनो जल्दी के साथ उसपर सवार हुए। बजड़ा किनारे से हटकर तेजी के साथ धार की तरफ जाने लगा। इस समय तक इस में रोशनी नहीं थी, किनारे से हटते ही एक मामूली तरह का धुंधला दीया जल उठा। उसके उजाले में वहां कई एक हथियारबन्द आदमी खड़े दिखलाई पड़े। बोरकेवाली औरत बजड़े के भीतर चली आई। दोनों नक़ाबपोश भी गठरी को लिए हुए चले आए। बजड़ा बीचोबीच धार में आने के बाद तेजी के साथ पूरब की तरफ जाने लगा। औरतने गठरी को अपने समाने रखवा कर—दोनों नकाब पोशों में से एक की तरफ़ देखकर कहा—सब कुछ ठीक होने पर भी न जाने क्यों मेरे दिलको ज़रा भी तसल्ली नहीं होती। मैंने भीख मंगी की तरह गलियों में घूम कर बहुत कुछ अपने को सँभालना चाहा मगर नही होसका। खैर करने धरने वाले वही एक परमात्मा हैं; देखें वे क्या कर दिखाते हैं। अगर इसको मैं अपने घर तक पहूँचा पाई तो कुमार चन्द्रसिंह को सहजही में अपने ताबे

कर सकूंगी। उसके मुँह से यह आख़िरी बातें निकली भी नहीं थी, इतने में घबड़ायाहुवा एक सिपाही ने अन्दर आकर कहा—चारो तरफसे बहुत सी रोशनियां,—बजडे की तरफ आरही हैं। मालूम होता है दुश्मनों को पता लग गया है। यह सुनतेही वे दोनों नक़ाबपोश बड़ी फूर्त्ति से निकल बाहर आए। यहां आकर इन्होंने देखा-सैकड़ों रोशनी इसी तरफ़ तेजी के साथ चली आरही है। अब बात समझने में कुछ भी बाकी नहीं रह गई। कमल ने अपने सिपाहियों से कहा-तुम लोग रोशनियों का निशाना साध बन्दुक दाग दो? साथही दनदनाता हुवा कई फैर हुवा। वीस पचीस रोशनियां एक साथही बुत गईं। फिर फैर हुवा—मगर अबकी दुश्मन की एक गहरी बाढ आकर इन लोगों के कई एक सिपाहियों को भी जमीन के ऊपर सुला दिया। अब रोशनी बड़ी तेजी के साथ आती हुई बजड़े के चारो तरफ लग गई। छोटी बड़ी कई एक नावों में से धड़धड़ाते हुए पचीसों हथियार बन्द आदमी इस बजड़े पर कूद पड़े। दोनों तरफ से तलवारें चलने लगी। कई एक आदमी गङ्गाजी की गोद में सोने के लिए चले गये। आए हुए दुश्मनों में से दो आदमी बजड़े के अन्दर आयाही चाहते थे इतने में बोरकेवाली औरत उस गठरी को उठाए हुए बाहर चली आई। उसे देख वे दोनों झपट कर उसके पास पहुँचे। उसने इन दोनोको देखतेही-गठरी को दोनों हाथों से ऊँचे उठाकर कहा-बस ज़रा भी आगे बढे नहीं, यह गठरी गङ्गाजी की तहमें चली जायगी! दोनों सहम कर उसकी तरफ़ देखने लगे।

दूसरा हिस्सा समाप्त

इस के आगे का भयानक काण्ड देखना होतो तीसरा हिस्सा देखिए?